वैश्विक संवाद GLOBAL DIALOGUE

3.5

एक वर्ष में **5** अंक **15** भाषाओं में

तख्तापलट के 40 साल बाद

मैन्युएल एंटोनियो गैरेटन

समाजशास्त्र एक पेशे के रुप में

ऐलिजाबेथ जैलिन
इमेन्युएल वालरस्टाइन

वैश्विक विरोधों की निरंतरता

ब्राजील – रुई बर्गा और रिकार्डो एंट्यूनेस
मिश्र – आसिफ बयात् और मोहम्मद बामेह
टर्की – पोलात् अल्पमान, जैनप बैकल और नजीह ऐरगिन

असमानता

गॉय स्टेन्डिंग
जूलियाना फ्रेनजोनी
डियगो सांचेज–एनकोचिया

> अफ्रीका में चीन
> दूर के नाविक
> नरसंहार का एक द्वीप
> दक्षिण–दक्षिण संवाद की बाधाऐं
> अल्बानिया में समाजशास्त्र
> खलबली के समय में समाजशास्त्र
> जापान में कांग्रेस–पूर्व की बैठक
> कोलम्बिया में वैश्विक संवाद का दल

सूचना पत्र

International Sociological Association

GD
अंक 3 / क्रमांक 5 / नवम्बर 2013
www.isa-sociology.org/global-dialogue/

> सम्पादकीय

दक्षिण–दक्षिण संवाद

लैटिन अमेरिका की यात्रा के दौरान आप बहुत जल्दी उसकी विविधता को खोज लेते हैं। इस अंक में जुलियाना फ्रांजोनी तथा डिएगो सांचेज–एंकोचिया असमानता के विरुद्ध व्यापक महाद्वीपीय झुकाव की और इंगित करते हैं। तथापि, इस क्षेत्र में भी भिन्नताऐं काफी स्तम्भित करने वाली हैं। इस प्रकार चिली एवं उरुग्वे नवउदारवाद तथा सामाजिक प्रजातन्त्र के दो विरोधी छोरों पर खडें हैं। जब बात सामाजिक मुद्दों की आती है तो प्रथम अभी भी अन्धे युग में जी रहा है जबकि दूसरा नशीली दवाइयों, समलैंगिक अधिकारों तथा गर्भपात पर उदार कानूनों के अग्रिम मोर्चे पर खडा हुआ है। उरुग्वे ने अपनी देशज आबादी को मिटा दिया है तथा प्रजातीय एवं जातीय आधार पर उदाहरण के तौर पर पेरु से कहीं अधिक समरुप है। यदि उरुग्वे में टूपामारोस शासक वामपंथी संयुक्त मंत्रीमंडल में प्रवेश कर गये हैं तो पेरु तथा कोलम्बिया में गुरिल्ला आन्दोलन अभी भी एक अतिरिक्त संसदीय युद्ध में लगा हुआ है। वास्तव में कोलम्बिया एक जिवित विरोधाभास है – लम्बे समय से चले आ रहे प्रजातन्त्र के साथ अनियन्त्रित हिंसा – ताकि डिजस्टिसिया, वकीलों और समाज वैज्ञानिकों का एक संगठन, कोलम्बिया के उदारवादी संविधान का देशज तथा अन्य समुदायों के साथ होने वाली हिंसा के विरुद्ध उपयोग कर सके।

विभिन्नताओं को छोड भी दें तो भी लैटिन अमेरिकी समाज वैज्ञानिकों नें महाद्वीपीय सहयोग के प्रतिमानों को स्थापित कर लिया है। इस प्रकार चिली के समाजशास्त्री मैन्युएल एंटोनियों गारेटन लैटिन अमेरिकन देशों के मध्य, तानाशाही के दौरान भी शैक्षिणक तथा बौद्धिक आदान प्रदान की ऐतिहासिक महत्ता को रेखांकित करते हैं। यहां पर दक्षिण–दक्षिण वार्तालाप, दक्षिण में समाजशास्त्र के विकास, दक्षिण के समाजशास्त्र तथा दक्षिण के लिए समाजशास्त्र की आकांक्षां से कहीं अधिक है; यह एक वास्तविकता है। यद्यपि इसकी तीव्रता क्षेत्र से बाहर संवाद को अधिक दुःसाध्य बना सकती है। एलियाना कायमोविट्ज उन मुश्किलों का विवरण दे रही हैं जिसे कि डिजस्टिसिया नें ग्लोबल दक्षिण के समस्त भागों से आये हुऐ नौजवान मानव अधिकार समर्थकों की कार्यशाला का आयोजन करने में अनुभव की। सबसे प्रथम समस्या थी कि भागीदारों को कोलम्बिया कैसे लाया जाए। यात्रा के प्रमुख रास्ते उत्तर के देशों से होकर गुजरते हैं जिनका कि वीजा प्राप्त करना बहुत मुश्किल है और सबसे ऊपर कोलम्बिया का वीजा प्राप्त करना अक्सर कठिन है। इसके विपरीत वैश्पिक उत्तर से आने के लिए मुझे कोलम्बिया के वीजा की भी जरुरत नहीं है। इसके अतिक्ति, कार्यशाला केवल इसलिए संभव थी क्योंकि इसे फोर्ड फाउन्डेशन से उदार आर्थिक सहायता मिली थी। दक्षिण के शोधों को विकसित करने के लिए उत्तरीय संसाधनों का उपयोग सामान्य सी बात है जैसा कि चिगं क्वान ली के अफ्रीका में चीन अध्ययन, हैलेन सैम्पसन के प्रवासी नाविकों एवं अन्तरराष्ट्रीय नौपरिवहन पर अध्ययन, अथवा भारत में मूल आय अनुदान पर गॉय स्टेन्डिंग का अध्ययन। अतः आश्चर्य नहीं कि उत्तर के देशों के विश्वविद्यालय दक्षिण के प्रतिभावान व्यक्तियों के लिए चुम्बक बन जाते हैं।

''समाजशास्त्र एक पेशे के रुप में'' पर लिखे हमारे दो लेख – ऐलिजाबेथ जैलिन तथा इमेन्युएल वालरस्टाइन – नें अपनें को दक्षिण–दक्षिण तथा इसी के साथ उत्तर–दद्विाण संवाद को समर्पित किया हैं। जिस प्रकार उत्तर के समाजशास्त्री किसी भी प्रकार से समरुप नहीं है – कुछ अन्यो की अपेक्षा वैश्विक असमानताओं के प्रति अधिक संवेदनशील हैं – उसी प्रकार से दक्षिण के समाजशास्त्री भी समरुपी नहीं हैं। जहां एक न्यूनसंख्या राष्ट्रीय सीमाओं से बाहर निकलने में सफल हो जाती है तो दूसरी ओर बहुसंख्या स्थानीय में ही अंतःस्थापित रह जाती है। यदि वैश्विक असमानताए दक्षिण–दक्षिण सहयोग को सीमित करती हैं, तो अन्य संसाधन, सामाजिक संचार माध्यम तो कतई भी कम नहीं, सामाजिक आन्दोलनों को जोडनें में समीक्षात्मक बन जाते हैं – जैसा कि इस अंक में ब्राजील, मिश्र, तथा टर्की का अन्वेषण करने में हुआ है – जैसा कि वो समाजशास्त्रियों के लिए हमारे अपने *वैश्विक संवाद* के मंच के माध्यम से करते हैं।

> वैश्विक संवाद को आईएसए वैबसाइट पर 15 भाषाओं में देखा जा सकता है।
> प्रस्तुतियां (Submissions) burawoy@berkeley.edu पर प्रेषित की जा सकती हैं।

मैन्युएल एंटोनियो गैरेटन, लैटिन अमेरिका के प्रमुख विश्लेषक, चिली में तानाशाही के अन्तर्गत समाजशास्त्र के भविष्य पर तथा उस गलत राजनैतिक कार्यक्रम पर जिसने कि चालीस वर्ष पूर्व एलेन्डे के पतन में सहयोग किया, पर चिन्तन कर रहे हैं।

ऐलिजाबेथ जैलिन, अर्जेन्टीना की विख्यात समाजशास्त्री, अपने नानारुप पेशे पर वापस दृष्टिपात कर रहीं हैं जिसने कि न्याय और समानता के बारे में वैश्विक संवादों को स्थानीय लडाईयों के साथ जोड़ दिया ।

इमेन्युएल वालरस्टाइन, आई.एस.ए. के भूतपूर्व अध्यक्ष (1994–98), शोध तथा कार्यशीलता मे उतकृष्टता के लिए प्रथम आई.एस.ए. अवार्ड के विजेता, बतला रहे हैं किस प्रकार उनके पथ–निर्माणकारी विश्व–व्यवस्था के विश्लेषण ने उनको अनुशासनात्मक सोच की सीमाओं को देखने का मार्ग प्रशस्त किया।

> Editorial Board

Editor: Michael Burawoy.

Managing Editors: Lola Busuttil, August Bagà.

Associate Editors:
Margaret Abraham, Tina Uys, Raquel Sosa, Jennifer Platt, Robert Van Krieken.

Consulting Editors:
Izabela Barlinska, Louis Chauvel, Dilek Cindoğlu, Tom Dwyer, Jan Fritz, Sari Hanafi, Jaime Jiménez, Habibul Khondker, Simon Mapadimeng, Ishwar Modi, Nikita Pokrovsky, Emma Porio, Yoshimichi Sato, Vineeta Sinha, Benjamín Tejerina, Chin-Chun Yi, Elena Zdravomyslova.

Regional Editors

Arab World:
Sari Hanafi, Mounir Saidani.

Brazil:
Gustavo Taniguti, Juliana Tonche, Andreza Galli, Renata Barreto Preturlan, Ângelo Martins Júnior, Lucas Amaral, Celia Arribas, Rafael de Souza.

Colombia:
María José Álvarez Rivadulla, Sebastián Villamizar Santamaría, Andrés Castro Araújo, Katherine Gaitán Santamaría.

India:
Ishwar Modi, Rajiv Gupta, Rashmi Jain, Jyoti Sidana, Uday Singh.

Iran:
Reyhaneh Javadi, Najmeh Taheri, Faezeh Khajehzade, Nastaran Mahmoodzade, Saghar Bozorgi, Zohreh Sorooshfar.

Japan:
Kazuhisa Nishihara, Mari Shiba, Kousuke Himeno, Tomohiro Takami, Yutaka Iwadate, Kazuhiro Ikeda, Yu Fukuda, Michiko Sambe, Yuko Hotta, Yusuke Kosaka, Yutaka Maeda, Shuhei Naka, Kiwako Kase, Misa Omori.

Poland:
Mikołaj Mierzejewski, Karolina Mikołajewska, Krzysztof Gubański, Adam Mueller, Patrycja Pendrakowska, Emilia Hudzińska, Kinga Jakiela, Julia Legat, Kamil Lipiński, Konrad Siemaszko, Zofia Włodarczyk.

Romania:
Cosima Rughiniş, Ileana-Cinziana Surdu, Monica Alexandru, Adriana Bondor, Ramona Cantaragiu, Miriam Cihodariu, Monica Nădrag, Cătălina Petre, Mădălin Rapan, Lucian Rotariu, Alina Stan, Mara Stan, Balazs Telegdy, Elena Tudor, Cristian Constantin Vereş.

Russia:
Elena Zdravomyslova, Anna Kadnikova, Elena Nikiforova, Asja Voronkova.

Taiwan:
Jing-Mao Ho.

Turkey:
Aytül Kasapoğlu, Nilay Çabuk Kaya, Günnur Ertong, Yonca Odabaş, Zeynep Baykal, Gizem Güner.

Ukraine:
Svitlana Khutka, Olga Kuzovkina, Anastasia Denisenko, Mariya Domashchenko, Iryna Klievtsova, Lidia Kuzemska, Anastasiya Lipinska, Myroslava Romanchuk, Ksenia Shvets, Liudmyla Smoliyar, Oryna Stetsenko, Polina Stohnushko.

Media Consultants: Gustavo Taniguti, José Reguera.

Editorial Consultant: Abigail Andrews.

> इस अंक में In This Issue

सम्पादकीय: दक्षिण–दक्षिण संवाद **2**

तख्तापलट के 40 साल बाद
मैन्युएल एंटोनियो गैरेटन, चिली के साथ एक साक्षात्कार **4**

समाजशास्त्र एक पेशे के रुप में – समस्त असमानताओं के विरुद्ध
ऐलिजाबेथ जैलिन, अर्जेन्टीना **8**

समाजशास्त्र एक पेशे के रुप में – एक ऐतिहासिक समाजवैज्ञानिक
इमेन्युएल वालरस्टाइन, यू.एस.ए. **10**

> विरोधों की निरंतरता

ब्राजील – जून के दिन
रुई बर्गा और रिकार्डो एंट्यूनेस, ब्राजील **12**

मिस्र – क्रान्ति–सुधारों (Refolution) की सीमाएँ
आसिफ बयात्, यू.एस.ए. **14**

राज्य के विरुद्ध सड़क
मोहम्मद बामेह, यू.एस.ए. **17**

टर्की – अपमान से विदोह की तरफ
पोलात् अल्पमान, टर्की **19**

प्रतिरोध की कला
जैनप बैकल और नजीह बसाक ऐरगिन, टर्की **21**

> असमानता

भारत का महान प्रयोग
गॉय स्टेन्डिंग, यू.के. **24**

लैटिन अमेरिका मे घटती हुई असमानता
जूलियाना मार्टिनेज फ्रेनजोनी, कोस्टा रिका तथा डियगो सांचेज–एनकोचिया, यू.के. **27**

> क्षेत्र आधारित टिप्पणियाँ

अफ्रीका में चीन
चिंग क्वान ली, जाम्बिया **29**

लहरों का सामना करते हुए
हैलेन सैम्पसन, यू.के. **31**

प्यूर्टो रिको : नरसंहार का एक द्वीप ?
जार्ज एल. गिओवनेती, प्यूर्टो रिको **33**

> राष्ट्रीय समाजशास्त्र एवं उनसे परे

दक्षिण–दक्षिण वार्ता में वास्तविक अवरोधक
एलिआना कैमोविट्ज, कोलम्बिया **35**

अल्बानिया में समाजशास्त्र का विकास
लेके सोकोली, अल्बानिया **37**

खलबली के समय में समाजशास्त्र
आयेस इदिल आयबर्स, टर्की **39**

योकोहामा में कनिष्ठ एवं वरिष्ठ विद्वानों का मिलन
मारी शिबा, क्योको टोमिनागा, किसुके मोरी तथा नोरी फुकुई, जापान **41**

कोलम्बिया में वैश्विक संवाद का स्पैनिश दल
मारिया जो रिवादुल्ला, सैबास्टियन सान्टामारिया, एन्ड्रेस अराउजो तथा कैथेरीन गैटान सान्टामारिया, कोलम्बिया **43**

> चिली में तख्तापलट के 40 साल बाद

मैन्युएल एंटोनियो गैरेटन के साथ एक साक्षात्कार

भाग I – तानाशाही शासन में समाजशास्त्र

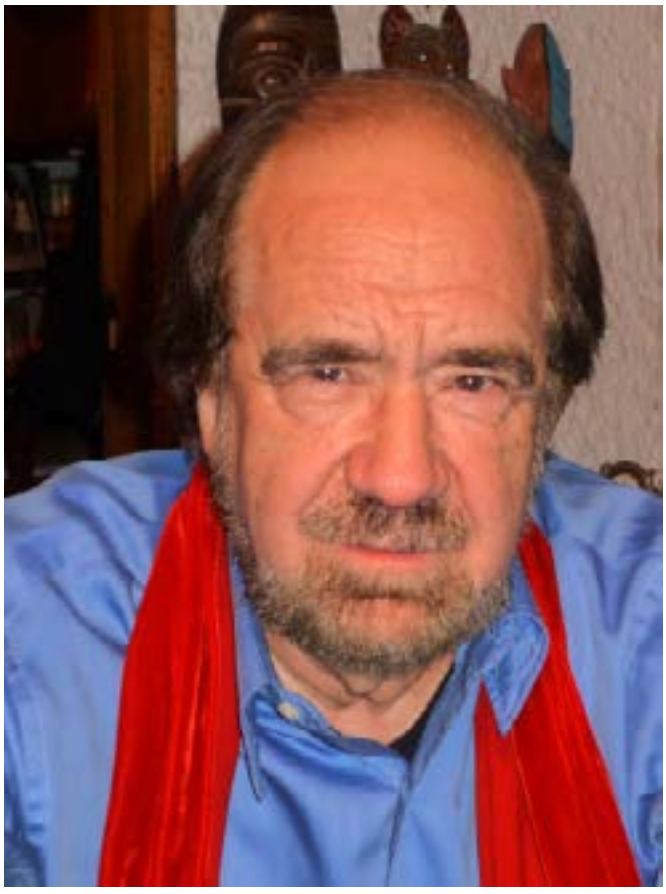

मैन्युएल एंटोनियो गैरेटन

मैन्युएल एंटोनिया गैरेटन लैटिन अमेरिका के प्रसिद्ध समाज वैज्ञानिकों में से एक हैं। इन्होंने चिली के कैथोलिक विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्रात की और पेरिस के इकोल डेस हयूट्स इट्यूडस एन साइंस सोशेल्स से अपनी शोध उपाधि (पीएच. डी.) प्राप्त की। ये अनेक शैक्षणिक संस्थानों के निदेशक रहे, विभिन्न विदेशी और राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों में अध्यापन–कार्य किया तथा अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय, सार्वजनिक एवं निजी संगठनों के सलाहकार रह चुके हैं। शायद ही कोई विषय होगा जिसका इन्होंने अध्ययन नहीं किया परंतु विषयों का अध्ययन सदैव राजनीतिक व सैद्धांतिक दृष्टिकोण से ही किया। इन्होंने सत्तावादी शासन, सामाजिक आंदोलन और संक्रमण की राजनीति के साथ–साथ लैटिन अमेरिका में समाज विज्ञानों की स्थिति पर अनेक पुस्तकें लिखी। ये चिली विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र के प्रोफेसर हैं, हाल ही में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय, ब्रिटेन में लैटिन अमेरिकी अध्ययन के सीमोन बोलीवर का अध्यक्ष पद संभाला और 1998–2007 के बीच आई. एस. ए. (अन्तरराष्ट्रीय समाजशास्त्र परिषद) की शोध समिति 'सामाजिक वर्ग एवं सामाजिक आंदोलन' (आर.सी.–47) के अध्यक्ष थे। 2007 में इन्हें समाज विज्ञान एवं मानविकी के चिली के राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह साक्षात्कार 27 जुलाई 2013 को सैंटियागो में लिया गया।

एम बी : मैन्युएल एंटोनियो, पिछले 50 वर्षों में आपने विश्व इतिहास की अनेक छोटी व बड़ी घटनाओं को अनुभव किया है। प्रारम्भ में आप सैंटियागो में कैथोलिक विश्वविद्यालय में छात्र संघ के अध्यक्ष थे, उसके बाद 1967 में आप ऐलेन टोरेन के निर्देशन में अध्ययन करने के लिए पेरिस गए। वहाँ 1968 में आपने अशांत स्थितियों का सामना किया। 1970 में आप सल्वाडोर एलेन्डे को सत्ता में लाने के लिए एक उत्साहपूर्ण आंदोलन की खोज में चिली वापस लौट आए। परंतु यहाँ मैं तख्तापलट के बाद के पिछले 40 वर्षों के विषय में जानने का इच्छुक हूँ। इसलिए आप मुझे बताए कि आप 1973 में क्या कर रहे थे?

> >

एम ए जी : फ्रांस से लौटने के बाद मैं अन्तः अनुशासनात्मक सामाजिक अध्ययन केन्द्र का निदेशक बना। यह एक मार्क्सवादी केन्द्र था, प्रमुख समाज वैज्ञानिकों के निर्देशन में यह केन्द्र कैथोलिक विश्वविद्यालय में स्थित था। तख्तापलट के बाद मुझे विश्वविद्यालय से निष्कासित कर दिया गया और मेरा केन्द्र भी बन्द कर दिया गया। मैं 30 वर्ष का था और मेरे सामने दो विकल्प थे या तो मैं निर्वासन का रास्ता चुनु या वहीं रूक जाऊं। मैं विश्वविद्यालय की राजनीति में शामिल था, हमेशा से राष्ट्रीय राजनीति से जुड़ा रहा था इसलिए मैंने वहीं रूकने का फैसला किया।

एम बी : परंतु तानाशाही शासन व्यवस्था में आपने एक आलोचनात्मक बुद्धिजीवी व एक समाजशास्त्री के रूप में कैसे जीवन बिताया?

एम ए जी : सेना ने विश्वविद्यालयों पर कब्जा कर लिया और वामपंथी लोगों को निष्कासित कर दिया जो कुछ विश्वविद्यालयों में बहुमत में थे और अन्यों में, जैसे कैथोलिक विश्वविद्यालय में अल्पसंख्यक थे परंतु फिर भी महत्वपूर्ण थे, क्योंकि उनका और उनके बौद्धिक उत्पादन का छात्रों पर व्यापक प्रभाव था। जो लोग वहाँ रूके थे उन्होंने कुछ मौजूदा संस्थाओं को स्थापित करने की कोशिश की। सम्पूर्ण लैटिन अमेरिका में जहाँ भी सैन्य शासन था, यही स्थिति थी। साओ पाउलो में स्थित सेबरेप (CEBRAP) केन्द्र इसका एक उदाहरण है, जिसकी स्थापना फर्नांडों हेनरिक कारडोसो और उनके सहयोगियों ने की थी।

हम किसी नए केन्द्र की स्थापना नहीं कर सके इसलिए तख्तापलट तक फलाक्सो (Flacso), जो लैटिन अमेरिका के समाज विज्ञान संकाय का केन्द्र था, में सम्मिलित हो गए जहाँ समाजशास्त्रियों व राजनतिक वैज्ञानिकों को स्नातक स्तर पर प्रशिक्षण दिया जाता था। इस अभियान को कुछ महत्वपूर्ण बाहरी संस्थानों जैसे फोर्ड फाउंडेशन, फ्रेडरिक इर्बट संस्थान, स्वीडिश संस्थान और यहाँ तक कि इसे हैरॉल्ड विल्सन की ब्रिटिश सरकार का भी समर्थन प्राप्त था। बाद में जब सेना ने इस तरह के अंतराष्ट्रीय संगठनों की राजनयिक स्वाधीनता में कटौती की तब हमने चर्च में और कार्डिनल रॉउल सिल्वा हेनरीक्वेज द्वारा स्थापित एकेडेमिया डी हयूमनिस्मो क्रिस्टीयानो (अकेडमी ऑफ क्रिश्चियन हयूमनिज्म) में संरक्षण प्राप्त किया, जो कि तानाशाही की समाप्ति के बाद एक विश्वविद्यालय बन गया। परंतु 1980 के दशक में कुछ अन्य केन्द्र भी बनाए गए जैसे परामर्श कंपनिया एवं निगम जिन्होंने समाज वैज्ञानिकों को संरक्षण प्रदान किया।

एम बी : इन संगठनों, उदाहरण के लिए FLASCO **में आप किस तरह के कार्य करते थे?**

एम ए जी : आपको याद होना चाहिए कि लैटिन अमेरिका में चिली अंतरराष्ट्रीय संगठनों के लिए प्रधान मुख्यालयों में से एक था। तख्तापलट के साथ ही यहाँ छात्रों की संख्या में कमी आयी थी और FLASCO में तो छात्रों की संख्या लगभग शून्य हो गयी थी परन्तु जो छात्र वहाँ रूके रहे और जो नये आये, उन्होंने मेरी तरह स्वयं को अनुसंधान कार्यों में समर्पित कर दिया। शुरू में, जो लोग अध्ययन करने के लिए आए वे अनौपचारिक रूप से हमसे जुड़े और एक बहुत ही दिलचस्प बात यह थी कि कुछ शिक्षकों ने, जो कि विश्वविद्यालय में रूक गये थे, अपने छात्रों को कुछ अध्ययनों के लिए हमारे पास भेजा। बाद में हमने विशेष रूप से अकेडमी ऑफ क्रिश्चियन हयूमनिज्म के माध्यम से, बिना किसी शीर्षक और श्रेय के, अनेक पाठ्यक्रम उपलब्ध कराये। हमने नई पीढ़ी की शिक्षा में आए अन्तर को कम करने की भी कोशिश की। वे जानना चाहते थे कि उनके देश में और लेटिन अमेरिका में क्या चल रहा था और हम इन विषयों पर अनुसंधान कर रहे थे। अतः यह एक मुक्त, अनौपचारिक, खुला विश्वविद्यालय या प्रति विश्वविद्यालय (काउंटर विश्वविद्यालय) जैसा था। परंतु शिक्षण का कार्य हमारे काम का एक छोटा–सा हिस्सा ही था। हमारा मुख्य काम अनुसंधान, सेमीनार, वाद–विवाद कराना, विदेश भ्रमण करना और नए लोगों को आमंत्रित करना था। सत्तावादी संदर्भ में यह एक प्रकार का लोक समाजशास्त्र (पब्लिक समाजशास्त्र) था।

एम बी : एक तानाशाही शासन के अंतर्गत आपको इतनी अधिक स्वतंत्रता कैसे प्राप्त थी?

एम ए जी : आपको यह समझना चाहिए कि सेना ने सब कुछ अपने नियंत्रण में करने का प्रयास किया था। उदाहरण के लिए FLASCO, यह एक अंतःसरकारी संस्था थी, की परिषद में एक सैन्य अधिकारी को नियुक्त कर दिया था। बाद में उन्हें कर्नल के पद पर पदोन्नत कर दिया और उसके बाद चिली विश्वविद्यालय का रेक्टर (चांसलर) नियुक्त कर दिया गया। यद्यपि उन्होंने इन संगठनों और कैथोलिक चर्च को भी अपने नियंत्रण में करने की कोशिश की थी, तथापि यह बहुत मुश्किल था। हमने सामाजिक आंदोलनों के साथ जो सम्बन्ध बनाये थे उन्हें भी तोड़ने की कोशिश की और पहले दो या तीन वर्षों के भारी दमन के बाद उन्होंने हमारे प्रकाशनों और सर्वेक्षण के परिणामों पर लगातार प्रतिबंध लगाया। परंतु जब उन्होंने नव्य–उदारवाद की नवीन अर्थव्यवस्था को प्रारम्भ किया, उन्हें भी बाजार अनुसंधान की आवश्यकता हुई और सर्वेक्षण प्रक्रिया को एक बार पुनः स्वीकृति मिल गयी। परंतु उन्होंने एक अप्रभावी व प्रारम्भिक स्तर पर केवल प्रश्नों को नियंत्रित करने की कोशिश की।

एम बी : जब आप इतना अधिक अनुसंधान कार्य कर रहे थे तो आँकड़े एकत्र करने में क्या आपने कभी बाधाओं का सामना किया?

एम ए जी : यह एक दिलचस्प सवाल है। आप जानते हैं, एक तानाशाह के रूप में, सैन्य सरकार आँकड़ों में इस हद तक हेर–फेर करती थी कि उन पर भरोसा नहीं किया जा सकता था। इसलिए हम अपने खुद के आँकड़े तैयार करते थे। उदाहरण के लिए, आर्थिक संस्थान कैपलान (CEPLAN), जिसका संचालन ऐलेजेंड्रो फॉक्सलें करते थे, जो बाद में लोकतांत्रिक सरकार में वित्त मंत्री बने, को समानान्तर खाते खोलने के लिए बाध्य किया गया था। अन्य संस्थानों ने अपने मूल्य सूचकांक की गणना स्वयं की क्योंकि सरकारी उपाय/पैमाने अत्यधिक विकृत थे।

एम बी : यह तो हुई आँकड़ों की बात, अब सिद्धांत के बारे में भी कुछ बताइये। उस समय आप तानाशाही और उसके भविष्य के बारे में क्या सोचते थे?

एम ए जी : 60 के दशक में लैटिन अमेरिका में समाज विज्ञान में मार्क्सवाद पर केन्द्रित एक नई लहर विश्वविद्यालयों में उत्पन्न हुई और उसने आधुनिकीकरण सिद्धांत को विस्थापित कर दिया। परंतु तानाशाही का यथार्थ पूर्णतः नया था। इसलिए हमने अन्य व्यवस्थाओं को तलाशना शुरू किया और मैं कहूँगा कि उस समय में, ग्रामशी का परिप्रेक्ष्य उस नए क्षेत्र को समझने का एक नया दृष्टिकोण उत्पन्न किया और रूढ़िवादी मार्क्सवाद की उपेक्षा की। साथ ही राजनीतिक विज्ञान के लिए भी यह एक महत्वपूर्ण समय था क्योंकि जब से समाजशास्त्र समाज विज्ञान में शामिल हुआ था, राजनीति विज्ञान का अस्तित्व मुश्किल से ही बचा था। समाजशास्त्र के अन्तर्गत राजनीतिक शासन व्यवस्था का अध्ययन नहीं किया जा सकता था, एक राजनीतिक शासन व्यवस्था कैसे कार्य करती है, का अध्ययन इससे संभव नहीं है अपितु राजनीतिक शासन प्रणाली की या सामाजिक इकाईयों, जो कि व्यवस्था का विरोध करते हैं, की सामाजिक परिस्थितियों का अध्ययन करने के लिए यह एक उचित विषय है। इस प्रकार समाजशास्त्री राजनीतिक वैज्ञानिक कहलाने लगे या हम स्वयं को 'पॉलिटोलोगोस' कह सकते हैं।

>>

एम बी : जैसा कि आपने बताया, ऐसा लगता है जो कुछ भी आपने कल्पना की उसे करने के लिए आप स्वतंत्र थे। मुझे लगता है कि आप इस बारे में लिख भी रहे थे।

एम ए जी : हाँ, हमने बहुत कुछ लिखा जो यहाँ चिली में प्रकाशित भी हुआ। 80 के दशक में FLACSO ने एक पुस्तक श्रृंखला शुरू की जिसमें मेरी पुस्तक 'एल प्रोसेसो पोलीटिको चिलेनो' को भी शामिल किया गया। इस पुस्तक के अंग्रेजी अनुवाद 'द चिलियन पोलीटिकल प्रोसेस' की एक प्रति मैंने आपको दी है। हमारे अपने कुछ जर्नल्स भी थे जिनमें से कुछ को प्रतिबंधित कर दिया गया था। अंतिम विश्लेषण के रूप में, जुआन लिंज के अनुसार ये तानाशाही शासन फासीवादी अधिनायकवादी शासन व्यवस्था के बजाय सत्तावादी शासन व्यवस्था थी जो हमारे निजी जीवन को नियंत्रित करती थी। बेशक, कुछ लोगों ने इस प्रकार के कठोर नियंत्रण का अनुभव किया था परंतु वे बुद्धिजीवियों की सार्वजनिक सहभागिता को छोड़कर उन्हें नियंत्रित नहीं कर पाये थे। उदाहरण के लिए, हमें कभी भी टेलीविजन पर नहीं बुलाया जाता था। परंतु हम रेडियो पर अपने अनुसंधान कार्य की चर्चा कर सकते थे। हमारे जर्नल्स में हमारे स्तम्भ छपते थे। विरोध के लिए हमने अंशतः कुछ बौद्धिक सामग्री भी प्रस्तुत की क्योंकि हमारे शोध लोगों के जीवन्त अनुभवों पर आधारित थे। हम कहीं से भी अनुभवों को लेने में समर्थ थे जैसे स्पेन (1976) में तानाशाही से संक्रमण के रूप में किस तरह के विरोध की संभावना थी? हम छात्र संगठनों के सलाहकार के रूप में कार्य कर रहे थे।

एम बी : क्या आप पहले से ही तानाशाही के प्रारम्भ में आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करते रहे थे?

एम ए जी : हाँ, यदा–कदा। उदाहरण के लिए, तख्तापलट के कुछ महीनों के बाद, विश्वविद्यलाय से निष्कासित किये जाने के बाद मैंने अपने सहयोगियों के साथ मिलकर गोपनीय तरीके से रसैल ट्रीब्यूनल रिपोर्ट तैयार की। लैटिन अमेरिका में मानवता के विरूद्ध अपराधों की खुली आलोचना करने की यह एक व्यापक अन्तरराष्ट्रीय पहल थी, परंतु, विशेष रूप से चिली में, क्योंकि एलेन्डे के अपदस्थ होने की घटना ने विदेशों का अत्यधिक समर्थन व ध्यान आकर्षित किया। उन दिनों वहाँ कोई कम्प्यूटर्स नहीं थे और हम लोग छायाप्रति (कार्बन कॉपी) के साथ अपनी रिपोर्ट को वितरित करते थे।

इस शासन व्यवस्था में कुछ स्थान ऐसे थे जिनमें से कुछ को चर्च का संरक्षण प्राप्त था, कुछ को अंतरराष्ट्रीय संगठनों का और अन्य जो संस्थागत रूप से बिल्कुल भी सुरक्षित नहीं थे क्योंकि सेना उनकी परवाह नहीं करती थी। मुझे लगता है कि तख्तापलट के समर्थन का विरोध करने से ईसाई लोकतंत्र की तरफ हुए रूपांतरण ने भी वामपंथी बुद्धिजीवियों को सुरक्षा प्रदान करने में मदद की थी। इसका अर्थ है कि यदि आप बुद्धिजीवियों का दमन करना चाहते है तो आपको ईसाई लोकतंत्र का दमन करना होगा अर्थात् 50 से 70 प्रतिशत जनसंख्या का दमन करना होगा।

एम बी : तो तानाशाही के दौरान समाजवाद के विचारों का क्या हुआ?

एम ए जी : हम में से अनेक 'समाजवादी नवीकरण' अर्थात् समाजवाद और लोकतंत्र के मध्य सम्बन्धों पर पुनर्विचार करने में बहुत सक्रिय थे जो कि यूरो–साम्यवाद का ही एक प्रकार था। 1970 से 1973 तक के चिली के अनुभवों को देखते हुए, बयानबाजी से धोखा न खाते हुए क्योंकि बयानबाजी पूर्णतः मार्क्सवादी थी, हमने पूछा, एलेन्डे की परियोजना क्या थी? यह कोई सामाजिक लोकतंत्र नहीं था क्योंकि सामाजिक लोकतंत्र पूंजीवाद का रूपांतरण करने की कोशिश नहीं करता। इस तरह, उस समय, हमारे लिए एक सामाजिक लोकतंत्रवादी कहलाये जाना अपमानजनकर था। बाद में, इसकी काफी प्रशंसा हुई। किसी ऐतिहासिक मिसाल या सैद्धांतिक ढाँचे के बिना लोकतंत्र के साथ एक समाजवादी व्यवस्था को निर्मित करने का यह एक प्रयास था। राज्य को लोकतांत्रिक रूप से चुने गए मार्क्सवादियों का कोई भी अनुभव नहीं था जो सरकार में, स्पष्ट रूप से, समाजवाद लाने के लिए कोशिश कर रहे थे।

एम बी : तो, उस समय, एलेन्डे की हार का क्या अर्थ था?

एम ए जी : फिर भी, लैटिन अमेरिका के वामपंथ की विशिष्टता महत्व पूर्ण थी। यहाँ क्लासिकल लेनिनवादी दल थे जिन्होंने सैन्य संदर्भ में हार देखी थी। बेशक वे सही थे, वहाँ वामपंथ की सैन्य हार थी परंतु यह एक परियोजना की भी असफलता थी, एलेन्डे व यूनीडाड पॉपुलर संघर्ष के लिए जो कुछ कर रहे थे उसकी असफलता थी। वे दो चीजें करने की कोशिश कर रहे थे–लोकतंत्र को बनाए रखना और समाजवाद लाना। परंतु किस रणनीति के साथ? एक लेनिनवादी ढाँचे के साथ। परंतु यह असंभव था क्योंकि इसे एक दोहरी शक्ति माना जाता था और लोकप्रिय शक्ति, अंशतः, राज्य में पहले से ही एलेन्डे के पक्ष में थी।

एम बी : तो क्या आप यह कह रहे हैं कि लेनिनवादी सिद्धांत लोकतांत्रिक समाजवादी परियोजना के अनुरूप नहीं था?

एम ए जी : हाँ, लेनिनवादी विचार परियोजना के लिए उपयुक्त नहीं थे, परंतु इसके घातक परिणामों ने मध्य वर्गों व अन्यों में डर पैदा कर दिया था। दूसरा, लेनिनवादी सिद्धांत के अनुसार, यदि आप एक क्रांति करना चाहते हैं तो कम समय में सामाजिक–आर्थिक व राजनीतिक प्रारूप में कठोर व तीव्र परिवर्तन करना होगा, आपको एक क्रांतिकारी पद्धति की आवश्यकता होगी अर्थात् एक ऐसा समूह जो शक्ति छीन लेता है, राज्य पर नियंत्रण कर लेता है और नई संस्थाएं व एक नई सामाजिक व्यवस्था स्थापित करता है, जो हिंसा और हथियारों पर बल देता है, की जरूरत होती है।

एम. बी : ठीक है, पर लोकतांत्रिक समाजवादी परियोजना का सिद्धांत क्या है? वो क्या चीज है जो हिंसा और हथियारों को प्रतिस्थापित कर सकती है?

एम ए जी : सामाजिक–राजनीतिक बहुमत। यानि लोकतांत्रिक ढाँचे में आपके पास राजनीतिक बहुमत या सामाजिक और राजनीतिक बहुमत है, तो आप की जीत तय है। आपको उन ताकतों को पृथक करना होगा जो समाजवादी संस्थाओं को नष्ट करना चाहते हैं और पूंजीवादी व्यवस्था को बहाल करना चाहते हैं। एक राजनीतिक बहुमत को निर्मित करना, एक देश से दूसरे देश में बिल्कुल अलग था। यदि आप अर्जेन्टीना से है तो मैं आपको पेरोनिस्ट दल पर कब्जा करने, उसका नेतृत्व हासिल करने की राय दूंगा और फिर आपके पास बहुमत होगा। चिली में दलों व सामाजिक आंदोलनों के मध्य घनिष्ठ सम्बन्धों के माध्यम से 1930 के बाद एक समाज की रचना की गयी। छात्र आंदोलन को ही देखिए–यह एक ऐसा संघ था जिसमें चुनावी उम्मीदवार भिन्न दल से खड़े हुए थे। छात्र राजनीति एक दल की युवा शाखा की तरह थी। इसका मतलब यहाँ जोड़–तोड़ से नहीं था अपितु यह दोनों आपस में एक–दूसरे से घनिष्ठता से जुड़े हैं जिसका अर्थ है कि छात्र आंदोलन राष्ट्रीय राजनीति से कभी पृथक नहीं थे। आम तौर पर, सामाजिक वर्ग की कोई निश्चित परिभाषा नहीं थी परंतु प्रत्येक आर्थिक वर्ग दलों के संदर्भ में निर्मित था।

एम बी : ऐसे में आप कैसे एक राजनीतिक बहुमत का निर्माण करते हैं?

एम ए जी : आप कैसे बहुमत का निर्माण करते हैं? पार्टियों/दलों के

>>

गठबंधन के द्वारा। और आप एक ऐसे देश में बहुमत कैसे बना सकते हैं जो तीन मुख्य राजनीतिक शक्तियों में विभाजित हो और जहाँ प्रत्येक राजनीतिक दल के अन्दर भी अनेक दल हों? दक्षिणपंथी दल में उदारवादी और रूढ़िवादी दल सम्मिलित थे और उसके बाद 60 के दशक में राष्ट्रीय दल भी शामिल हो गए। 30 व 40 के दशक के दौरान केन्द्र में रेडीकल दल का प्रतिनिधित्व था जिसे बाद में ईसाई लोकतंत्र ने प्रतिस्थापित कर दिया था और वामपंथ में साम्यवादी व समाजवादी दल शामिल थे परंतु 60 के दशक में केन्द्र से अलग हुए कुछ अन्य छोटे दल भी इसमें शामिल हो गए। अतः समग्र समाज को बदलने हेतु वामपंथी दल के पास राजनीतिक बहुमत नहीं था। इन्हें अन्य दलों के साथ, दक्षिणपंथी दलों की बजाय केन्द्र के साथ गठबंधन करना होगा। 1973 के संसदीय चुनावों में एलेन्डे या यूनीडाड पॉपुलर ने 44 प्रतिशत मत प्राप्त किए, परंतु लोकतांत्रिक प्रणाली में 44 प्रतिशत मत प्राप्त करना बहुमत नहीं कहलाता।

एम बी : परंतु क्या केन्द्र के साथ गठबंधन करने का मतलब परिवर्तन के लिए अपनी परियोजना से समझौता करना नहीं है?

एम ए जी : निसंदेह, यह एक समस्या है। परंतु यहाँ ग्रामशी क्या कहते हैं? आपको अपने सहयोगियों को मनाने के लिए हथियारों के साथ नहीं अपितु गतिशीलताओं और सामाजिक शक्तियों के साथ समझौता करने की कोशिश करनी चाहिए। यही राजनीति है। और यही 1973 के दौर का मुख्य सबक भी है। आप एक लोकतांत्रिक ढाँचे के भीतर समाज में व्यापक बदलाव चाहते है और इस लोकतांत्रिक ढाँचे को मजबूती प्रदान करने के लिए आपके पास राजनीतिक बहुमत होना चाहिए। चुनावी बहुमत, अर्थात् किसी अन्य दल की तुलना में अधिक मत होना, ही काफी नहीं है अपितु सामाजिक–राजनीतिक बहुमत की भी आवश्यकता होती है यानि 50 प्रतिशत से अधिक मत प्राप्त करना। 1974 के आस–पास अपने एक प्रसिद्ध भाषण में बरलिंगुर (1972–1984 के बीच इतालवी कम्युनिस्ट पार्टी के राष्ट्रीय सचिव) ने कहा था, 'इटली में अगला चुनाव हम जीतेंगे, परंतु यदि ईसाई लोकतंत्र सरकार में हमारे साथ शामिल नहीं होगा तो हम पद ग्रहण नहीं करेंगे।' एक व्यापक बदलाव लाने के लिए आपको रूढ़िवादी, पुनारूत्थानवादी और सैन्य बलों से पृथक होकर बहुमत की आवश्यकता होगी।

संक्षेप में, तख्तापलट के बाद की अवधि में हम 'समाजवादी नवीकरण' पर काम कर रहे थे, लोकतंत्र व समाजवाद के मध्य सम्बंधों का पता लगाने के लिए एक नए सैद्धांतिक ढांचे का निर्माण कर रहे थे। यह विरोधाभासी चर्चा है परंतु तानाशाही से लड़ने के लिए ईसाई लोकतंत्र के साथ गठबंधन करने को यह चर्चा उचित ठहराती है। 1980 के बाद कम्यूनिस्ट पार्टी इस रणनीति के विरूद्ध हो गयी।

एम बी : अगली बार हम तानाशाही को उखाड़ फेंकने के लिए इस 'बहुमतवाद' की रणनीति के प्रभावों और इसके बाद राजनीतिक व्यवस्था के लिए निर्धारित इसकी सीमाओं पर चर्चा करेंगे। परंतु फिलहाल, तानाशाही शासन के तहत जीवन के इतने आकर्षक पक्षों और विचारों को हमसे बाँटने के लिए मैन्युएल एंटोनियो आपका बहुत शुक्रिया। ■

> सभी असमानताओं के विरूद्ध

ऐलिजाबेथ जैलिन, आई.डी.ई.एस. (इंस्टीट्यूटो डी डिसारोलो इकनॉमिको वाई सोशल), अर्जेंटीना एवं अंतराष्ट्रीय समाजशास्त्र परिषद (आई एस ए) की कार्यकारी समिति की सदस्य, 1986–1990

अर्जेंटीना की समाजशास्त्री, **ऐलिजाबेथ जैलिन** मुख्यतः मानव–अधिकार, राजनीतिक दमन की स्मृति, नागरिकता, सामाजिक आंदोलन, जेण्डर व परिवार के क्षेत्र में व्यापक योगदान के लिए प्रसिद्ध हैं। उनकी प्रमुख पुस्तकों में 'लांस ट्राबाजोस डी ला मेमोरिया' (2002 में प्रकाशित तथा 2012 में नवीन संस्करण के साथ प्रकाशित) (जो स्टेट रिप्रेशन्स एंड द लेबर्स ऑफ मेमोरी शीर्षक से अंग्रेजी में प्रकाशित हुई), फोटोग्राफिया ई आइडेंटिडाड (2010) (फोटोग्राफी एंड आइडेंडिटी), वूमन एंड सोशल चेंज इन लैटिन अमेरिका (1990) इत्यादि शामिल हैं। वह अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर के साथ–साथ अनेक अंतराष्ट्रीय शैक्षणिक परिषद जैसे समाज विज्ञान अनुसंधान परिषद, सामाजिक विकास हेतु संयुक्त राष्ट्र अनुसंधान संस्थान, आई. एल. ओ. (अंतराष्ट्रीय श्रम संगठन) में श्रम अध्ययन संस्थान और अंतराष्ट्रीय समाजशास्त्र परिषद (आई. एस. ए.) की भी सदस्य रहीं। वर्तमान में वह Wissenschaftskolleg zu Berlin संस्थान की शैक्षणिक परिषद के साथ–साथ CONICET (कोनसेजो नेसीओनाल डी इन्वेस्टीगेसीओनस सिएंटीफीकस वाई टेकनीकस ऑफ अर्जेंटीना) एवं आई डी ई एस (इंस्टीट्यूटो डी डिसारोलो इकनॉमिको वाई सोशल) ब्यूनस आयर्स में वरिष्ठ शोधकर्त्ता हैं एवं यू एन जी एस (यूनीवर्सीडाड नेसीओनाल डी जनरल सार्मिएंटो) में समाजविज्ञान में डॉक्टरेट कोर्स की प्रोफेसर हैं। 2013 में इन्हें समाजविज्ञान में उनके अनुसंधान कैरियर हेतु अर्जेंटीना में विज्ञान के सर्वोच्च राष्ट्रीय पुरस्कार 'बर्नाडो हाउसे राष्ट्रीय पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

ऐलिजाबेथ जैलिन

मैंने मात्र 16 साल की आयु में ही विश्वविद्यालय के पेशे को अपने कैरियर के रूप में चुना। उन दिनों ब्यूनस आयर्स विश्वविद्यालय में आधुनिकीकरण का व्यापक असर था और मैंने फैकल्टाड डी फिलोसोफिया वाई लेटरॉस में समाजशास्त्र के नवनिर्मित विभाग को चुना। यह विभाग एक अज्ञात व रहस्यपूर्ण किशोर की भाँति था। मेरे आस–पास कोई यह भी नहीं जानता था कि समाजशास्त्र क्या है? तथापि समाजशास्त्र (अपितु एक व्यापक और गैर–अनुशासनात्मक समाजविज्ञान परिप्रेक्ष्य) जल्दी ही मेरी जिंदगी का हिस्सा बन गया और सारी जिंदगी बना रहा। यह एक विशिष्ट ऐतिहासिक समय था–जब अर्जेंटीना में निजी शिक्षा होनी चाहिए या नहीं होनी चाहिए पर भीषण विवाद और राजनीतिक बहस शुरू हुयी एवं सम्पूर्ण शहर में यह बहस तेजी से फैल गयी। मैं उन लोगों में शामिल थी जो निःशुल्क, उचित और सार्वजनिक शिक्षा के लिए लामबंद थे। तब से ही मेरा निजी जीवन, मेरी अकेडमिक रूचि और मेरी नागरिक–राजनीतिक सहभागिता के गुण मेरे व्यक्तित्व में दृढ़ता से शामिल हो गए। उन्हें मेरे व्यक्तित्व से पृथक करना असंभव था और मैं भी नहीं चाहती थी।

ब्यूनस आयर्स में एक नौसिखिए अनुसंधान प्रशिक्षु के रूप में अनुभव प्राप्त करने के बाद और मैक्सिको में शिक्षण कार्य व अनुसंधान करने के बाद, मैंने अमेरिका में डॉक्टरेट की पढ़ाई की। साठ (60) के दशक के अंत में न्यूयार्क शहर में प्रवेश किया–मई 1968 में सिटी विश्वविद्यालय में खुली प्रवेश प्रक्रिया, कम्बोडिया में अमेरिकी आक्रमण के विरूद्ध प्रदर्शन (इस प्रदर्शन में मैंने गर्भावस्था के अंतिम चरण में होने पर भी सहभागिता की थी) और नारीवाद की नई लहर की शुरूआत से इस

> >

बात की पुष्टि हो गयी कि किस प्रकार मेरा व्यक्तिगत व पारिवारिक जीवन तथा मेरी राजनीतिक मान्यताएं पूर्णतः मेरे अकादमिक एजेण्डे का अभिन्न हिस्सा बन गये थे।

सामाजिक असमानता तथा समानता की प्राप्ति के लिए संघर्ष व न्याय मेरे अध्ययन के मुख्य विषय थे। समय के साथ और व्यापक सामाजिक परिस्थितियों के दबाव में विशिष्ट विषय व चिंतन के मुद्दों व प्रवृत्तियों में भी बदलाव आया। 1970 के दशक के विषयों में लैटिन अमेरिकी शहरों में प्रवासी, लोकप्रिय नगरीय क्षेत्रों में महिलाएं, श्रम बाजार में लैंगिक असमानता, श्रमिक–आंदोलन एवं श्रम विरोधी प्रदर्शन, सम्मिलित थे। 1980 के दशक में नवीन सामाजिक आंदोलन एवं लैटिन अमेरिका में राजनीतिक संक्रमण की प्रक्रियाओं के दौरान नागरिकता और मानवाधिकारों के लिए संघर्ष इत्यादि अध्ययन के मुख्य विषय थे। और हाल ही में, मैंने राजनीतिक हिंसा व दमन की स्मृति के लिए संघर्षों पर और सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक अधिकारों पर संघर्ष के व्यापक प्रभावों के अध्ययन पर अपना ध्यान केन्द्रित किया।

मुझे लोगों की परवाह है, इसलिए मैं उनकी अत्यधिक निजी और व्यक्तिगत से लेकर सामूहिक और सार्वजनिक–राजनीतिक स्तर की प्रतिदिन की गतिविधियों का अध्ययन करती हूँ–इस प्रकार परिवार और देखभाल के तर्कों पर मैं नियमित रूप से चिंतन करती हूँ। मैं क्रिया के अर्थ और उससे सम्बद्ध भावनाओं के साथ–साथ उनके संस्थागत व संरचनात्मक स्वरूपों को भी जानने की कोशिश करती हूँ। मैं शब्दों के परे जाने, दृश्य भाषाओं (विशेष रूप से फोटोग्राफी) को सम्मिलित करने और वास्तविक गतिविधियों को भी समझने में रूचि रखती हूँ। वह तथ्य जो मेरे कार्य को सामाजिक घटना में रूचि से जोड़ता है, वह है सामाजिक घटना का स्थायित्व एवं प्रक्रियाओं की बहुलता का दृष्टिकोण, जिसके कारण घटनाएं मूर्त रूप लेती हैं। मेरी राय में, इतिहास और जीवनी से संपर्क, परिवर्तन का स्वरूप एवं गति, घटनाओं का परस्पर संयुक्त होना व लम्बी अवधि, ऐसे मुख्य कारक हैं जिनके आधार पर सामाजिक विश्व को समझने व भविष्य की कल्पना की जा सकती है।

मुझमें एक आदत है कि मैं दूसरों को उनमें विद्यमान क्षमताओं व पूर्व के अज्ञात विचारों व अनुभवों के विषय में परिचित करवाऊँ या उनके दृष्टिकोण को विस्तृत कर सकूँ। मेरे काम की इससे बेहतर तारीफ नहीं हो सकती जब कोई मुझसे कहता है कि आपके इस अध्ययन ने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया। छात्रों के संदर्भ में यह एक निरंतर चिन्तन का विषय है कि वे, एक युवा विद्वान के रूप में, किस प्रकार के शोधार्थी बनते हैं? दशकों तक मैंने अपने समय व प्रयासों का एक बहुत बड़ा हिस्सा युवा शोधार्थियों के लिए प्रारम्भिक क्षेत्र तैयार करने में लगा दिया। बौद्धिक जिज्ञासा एवं जीवन के अनुभव शोध प्रक्रिया, अपने प्रश्नों को स्वयं तैयार करना सीखना, मूल जवाबों को खोजना और यह पहचानना कि कोई 'दूसरों के कंधों पर खड़ा है' जैसे पक्ष आते हैं। पूर्व में प्रयुक्त मानक सूत्रों से ही काम नहीं चलता। बौद्धिक कल्पनाओं का विकास वरिष्ठ सदस्यों के विचारों को थोपे बिना और उनकी सत्ता के प्रयोग के बिना संभव नहीं है। व्यक्तिवाद और अलगाव को तोड़ना, समान स्तर पर संवाद और सहयोग को बढ़ावा देना, मेरे अध्ययन के मुख्य साधन थे। मैंने इन साधनों का प्रयोग 6 लैटिन अमेरिकी देशों से आए साथियों के साथ 'दमन की स्मृतियाँ' सम्बंधी अध्ययन पर युवा शोधार्थियों को प्रशिक्षण देने के कार्यक्रम में किया। समाज विज्ञान के डॉक्टरेट कार्यक्रम में यह मेरा मुख्य दायित्व था (जो कि यूनीवर्सीडाड नेसीओनाल डी जनरल सार्मिएंटो एवं ब्यूनस आर्यस में द इंस्टीटयूटो डी डिसारोलो इकनॉमिको वाई सोशल के संयुक्त प्रयासों द्वारा चलाया गया था)।

एक अथक यात्री की भाँति दक्षिण व उत्तरी अमेरिका, यूरोप और उसके परे अनेक स्थानों पर मैं रही,, पढ़ाया और शोध कार्य भी किया। मेरा निवास व कार्य स्थल ब्यूनस आयर्स है, जिसमें अंतराष्ट्रीय संपर्कों के कारण लगातार विस्तार होता रहा। बाद के सम्बन्धों में मेरा एजेण्डा बिल्कुल स्पष्ट है–प्रभुत्वकारी पश्चिम में अकादमिक शक्ति के केन्द्रों में सहकर्मियों को यह बताने के लिए कि 'परिधि' के देशों के पास भी कुछ देने के लिए है। हमारे अपने क्षेत्र से परे विश्व में क्या चल रहा है, को जानने का एक सही महानगरीय परिप्रेक्ष्य विकसित करने की चुनौती वर्तमान भू–राजनीतिक व्यवस्था के विपरीत उभर रही है। वास्तव में यह अभी हाशिए पर था तब महानगरीय बौद्धिकता उभरी और जिसने परिधि के विद्वानों को तैयार किया कि वे ये जान जाऐं कि केन्द्र के विद्वानों ने किन विचारों को विकसित किया। अपने खुद के अकादमिक स्थान के सम्बन्ध में 'केन्द्र' के ज्ञान को उन्होंने महत्व दिया। इसके विपरीत, केन्द्र के विद्वान, उनके अपने स्थानों पर क्या चल रहा है, के आधार पर सार्वभौमिक, सामान्य और यहाँ तक कि सैद्धांतिक पक्षों पर विचार करते हैं। आगे चलकर यही अभिवृत्ति–मूल्यांकन की प्रणालियों और संस्थानों में भी देखी गयी, इस अभिवृत्ति ने हमारे विषयों के विकास के लिए महत्वपूर्ण ज्ञान व उसके महत्व के संदर्भ में तथा एक अत्यधिक समान विश्व के हमारे मूल्यों और लक्ष्यों–दोनों के संदर्भ में–अत्यधिक नकारात्मक परिणामों को उत्पन्न किया। अतः इस प्रकार के असंतुलन व असमानता को समाप्त करने के लिए हमें निरन्तर सक्रिय रूप से काम करने की आवश्यकता है। ■

> ऐतिहासिक समाज वैज्ञानिक

इमेन्युएल वालरस्टाइन, येल विश्वविद्यालय, संयुक्त राज्य अमेरिका तथा आई. एस. ए. (अन्तराष्ट्रीय समाजशास्त्र परिषद) के भूतपूर्व अध्यक्ष, 1994–1998

इमेन्युएल वालरस्टाइन

इमेन्युएल वालरस्टाइन के समाजविज्ञान में योगदान को उनकी लगभग पुरस्कृत 50 पुस्तकों व लेखों के माध्यम से आंका जा सकता है। उन्होंने अपने अध्ययनों की शुरूआत उपनिवेशवाद तथा 1960 के दशक में अफ्रीका के राष्ट्रीय स्वतंत्रता संघर्ष से की थी। जहाँ से उन्होंने 'आधुनिक विश्व व्यवस्था' के उद्भव और उनमें होने वाले परिवर्तनों के विस्तृत ऐतिहासिक बौद्धिक अध्ययन की ओर प्रस्थान किया। 1970 में वालरस्टाइन के 'विश्व व्यवस्था उपागम' ने समाजशास्त्र को एक तुलनात्मक ऐतिहासिक उद्यम के रूप में पुनर्स्थापित किया। उनके शोध कार्यक्रमों ने लैटिन अमेरिका, अफ्रीका और एशिया के समाज–वैज्ञानिकों के लिए भावी अध्ययनों हेतु क्षेत्र तैयार किया। और साथ ही, उन्होंने समाज–विज्ञानों के अर्थ पर पुनर्विचार करने के लिए अन्य विषयों के विद्वानों के साथ सहयोग किया। उन्होंने अन्तराष्ट्रीय समाजशास्त्र परिषद के अध्यक्ष पद पर रहते हुए अनेक यात्राएं की एवं विभिन्न संगठनों को अपनी सेवाएं प्रदान की। अपने कार्यकाल के दौरान वे दुनिया भर से विशेष रूप से ग्लोबल दक्षिण के समाजशास्त्रियों को आई. एस. ए. में शामिल करने हेतु प्रतिबद्ध रहे। उनके आजीवन योगदान के लिए आई. एस. ए. द्वारा हाल ही में उन्हें अनुसंधान व व्यवहार में उत्कृष्टता हेतु प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता कि समाजशास्त्र मेरा पेशा है। एक स्नातक स्तर के छात्र के रूप में मैंने लगभग सभी समाजविज्ञानों का अध्ययन किया। तब मैंने समाजशास्त्र में स्नातक करने का निश्चय किया क्योंकि मैंने अनुभव किया कि एक संगठनात्मक संरचना के रूप में समाजशास्त्र किसी भी अन्य विषय, जिसका मैं अध्ययन कर सकता हूँ, की तुलना में अधिक व्यापक है। अतीत में देखने पर मुझे लगता है कि इस संदर्भ में मेरा निर्णय सही था।

मैंने कोलम्बिया विश्वविद्यालय के विभाग में उस समय (1950s) प्रवेश किया जब वहाँ विश्व समाजशास्त्र अध्ययन का केन्द्रीय विषय था। हालांकि मैं पूरी तरह से कोलम्बिया के छात्रों की अपेक्षा के अनुरूप नहीं था। मैं मर्टन और लेजार्सफील्ड के साथ किसी प्रकार के शोध कार्य में भी संलग्न नहीं था। मैं विभाग में एकमात्र अकेला ऐसा व्यक्ति था जो अफ्रीका में अध्ययन कार्य करने में रूचि रखता था। पॉल लेजार्सफील्ड ने एक बार कहा था कि मैं एकमात्र ऐसा स्नातक छात्र हूँ जो फ्रांसीसी क्रांति के विषय में पूर्ण जानकारी रखता था। निःसंदेह,

> >

यह अतिश्योक्तिपूर्ण है, यह एक पूर्वानुमान ही था कि मैं यहाँ अध्यक्ष बनकर आऊँगा, सौभाग्य से मेरे कुछ गूढ़ गुणों के कारण वे मुझसे कुछ हद तक प्रभावित थे और वे मुझे सहन करते थे।

मैंने 1958 में कनिष्ठ संकाय सदस्य के रूप में कोलम्बिया में अध्यापन कार्य शुरू किया। 1963 तक कोलम्बिया, जो शांति कोर में सम्मिलित था, में स्नातक छात्रों की संख्या बहुत अधिक थी, इसलिए जो छात्र तृतीय विश्व के देशों से थे और जो संयुक्त राज्य अमेरिका के बाहर के विश्व की राजनीति व अर्थव्यवस्था में स्पष्ट रूचि दिखा रहे थे। ऐसे पाठ्यक्रम जो मैंने (अकेले या फिर टैरी हॉपकिंस के सहयोग से) निर्मित किये थे इन छात्रों में (और अन्य समाजविज्ञान के विभागों के छात्रों में भी) काफी लोकप्रिय हुए।

तत्पश्चात् 1968 में विश्वविद्यालय परिसर में विद्रोह की शुरूआत हुयी। इस विद्रोह में समाजशास्त्र के छात्र सबसे आगे रहते थे और कनिष्ठ संकाय सदस्य भी इसमें सक्रियता से भाग लेते थे। 1968 की विश्व क्रांति ने न केवल सहभागिता की राजनीति में बदलाव उत्पन्न किया अपितु उनके ज्ञानमीमांसीय परिप्रेक्ष्य में भी परिवर्तन उत्पन्न किया। इसकी चर्चा मैंने अपने एक लेख 'द क्लचर ऑफ सोशियोलॉजी इन डिसऐरे : द इम्पेक्ट ऑफ 1968 ऑन यू. एस. सोशियोलॉजिस्ट[1]' (अव्यवस्था के दौर में समाजशास्त्र की संस्कृति : अमेरिका के समाजशास्त्रियों पर 1968 का प्रभाव) में की है। 1970–71 में, मैंने 'द मार्डन वर्ल्ड सिस्टम' (आधुनिक विश्व व्यवस्था) की प्रथम श्रृंखला लिखीं। अब तक, मैं अपनी स्वयं की छवि को एक 'समाजशास्त्री' के रूप में देख रहा था जो कुछ हद तक अनुपयुक्त थी। बाद में, एक 'ऐतिहासिक समाज वैज्ञानिक' के रूप में मैंने खुद के बारे में सोचना शुरू किया।

आत्म–विवरण का मुद्दा लगातार दो तरह से या दो स्तरों पर एक गंभीर समस्या के रूप में उभरा। पहली छवि जो अन्यों ने मेरे विषय में बना रखी थी, विशेष रूप से अमेरिका के बाहर। दूसरी तरफ, यूरोप में और विशेष रूप से फ्रांस में जहाँ मैंने अपने जीवन का सबसे ज्यादा समय बिताया था, वहाँ के विद्वानों ने मेरे विचारों पर जो कुछ भी लिखा, उसने मुझे अक्सर एक इतिहासकार, एक आर्थिक इतिहासकार या एक अर्थशास्त्री या इन सबके मिश्रित रूप में या एक समाजशास्त्री के रूप में प्रस्तुत किया। परंतु सबसे बड़ी समस्या तो संयुक्त राज्य अमेरिका में थी। अन्य समाजशास्त्रियों की तरह मैंने भी वित्तीय/आर्थिक सहायता के लिए विभिन्न संस्थाओं/संघों को प्रोजेक्ट तैयार करके भेजे। संभवतः मुझे एक असामान्य चुनौती का सामना करना पड़ा, खास तौर से तब जब मैंने राष्ट्रीय विज्ञान संस्था में प्रोजेक्ट प्रस्तुत किया। इस संस्था के स्टॉफ कॉर्डिनेटर (समन्वयक) की सहानुभूति के साथ अन्य सदस्यों की राय दो भागों में बँट गयी–स्टॉफ के दो सदस्य मेरे प्रोजेक्ट से सहमत थे और दो सदस्य पूर्णतः असहमत थे। मैं समझ चुका था कि 'अच्छा' विज्ञान क्या था, के बारे में यह एक गंभीर ज्ञानमीमांसात्मक विभाजन है। और इसलिए मैंने अपना ध्यान 'ज्ञान की संरचनाओं' की उत्पत्ति और उसके मानकों के अध्ययन पर केन्द्रित किया।

इस कार्य ने मुझे प्रेरित किया कि मैं विभिन्न विषयों (और संभवतः पेशों) के बारे में स्पष्ट विचार बनाऊ, जिनमें कि मैंने अपने अध्ययन को विभाजित किया था–उनका इतिहास, उनकी वैधता, उनका भविष्य। मुझे लगता है कि जिसे हम विषय/संकाय कहते हैं, तीन अलग–अलग बातें हैं–(1) विषय अपेक्षाकृत अपनी स्पष्ट सीमाओं के साथ घटना के एक वर्ग की स्वायत्तता के लिए एक बौद्धिक दावा करते हैं कि शोध इन सीमाओं के भीतर या बाहर होती है। (2) विषय संगठनात्मक ढाँचे के भीतर अधिकार क्षेत्र का दावा करते हैं और विश्वविद्यालयों के भीतर संगठनों में, पत्रिकाओं में और राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय संगठनों में अपने इस दावे को प्राथमिकता प्रदान करते हैं। (3) विषय सामान्य संदर्भ की संस्कृति, कार्य शैली और प्रसिद्ध व्यक्तित्व हैं जिन्हें सम्मान और मान्यता देने के लिए संगठन व्यक्तियों पर दबाव डालते हैं।

गुलबेन्कियन आयोग की रिपोर्ट[2], जिसका मैं समन्वयक था, में हमने यह तर्क दिया था कि विषयों के तीनों अर्थ 1870–1950 की अवधि के लिए एक साथ प्रयुक्त होते थे, परंतु अनेक कारणों से इस समय के बाद ये तीनों अर्थ एक–दूसरे से पृथक हो गए। परिणामस्वरूप वर्तमान स्थिति उत्पन्न हुई, जिसमें पूर्व के बुद्धिजीवी विषय की जिन सीमाओं का दावा करते थे वे अत्यधिक विवादास्पद हो गयी और जो कार्य/अध्ययन किसी एक लेबल/शीर्षक के तहत किए गये वे अन्य लेबल के अधीन किए गए कार्यों के साथ ओवरलेप करने लगे। इसका एक परिणाम यह हुआ कि अंतर–अनुशासनात्मक (बहु अनुशासनात्मक, पार–अनुशासनात्मक आदि) कार्य की माँग में वृद्धि हुयी।

इसी समय, विषयों के अधिकार क्षेत्र हेतु संगठनात्मक दावा पहले की तुलना में कहीं अधिक मजबूत होता जा रहा था और निश्चित रूप से सीमाओं की पुर्नपरिभाषा का प्रतिरोध हो रहा था। विभिन्न विषयों की 'संस्कृतियाँ' अपेक्षाकृत कम विकसित है, जिसे विद्वानों के लेखों के फुटनोट संदर्भों को देखकर सत्यापित किया जा सकता है।

निष्कर्षतः, मुझे लगता है कि विश्व व्यवस्था में जो कुछ भी हो रहा है उसमें हम अपने आपको तलाशते हैं जिसका मैं तर्क देता हूं वह एक पूंजीवादी विश्व–अर्थव्यवस्था है। मुझे लगता है कि यह व्यवस्था संरचनात्मक संकट का सामना कर रही है और यह हमे बाध्य करता है कि हम सभी इस संरचनात्मक संकट के संभावित परिणामों पर सक्रिय रूप से चिंतन करे। 1968 की विश्व क्रांति से मैं इस संरचनात्मक संकट का प्रारम्भ मानता हूँ और मुझे लगता है कि यह संकट 20 से 40 सालों तक भी हल नहीं हो सकेगा। मैंने इस संरचनात्मक संकट पर और इसके संभावित परिणामों पर काफी कुछ लिखा है और जो इसके नैतिक व राजनीतिक विकल्पों की आवश्यकता पर जोर देता है। जब कोई मुझसे मेरे काम के बारे में पूछता है तो मैं कहता हूँ कि मेरा काम तीन अलग–अलग क्षेत्रों से सम्बद्ध है। पहला, मैं आधुनिक विश्व व्यवस्था के ऐतिहासिक विकास का विश्लेषण करने की कोशिश करता हूं। दूसरा, मैं संरचनात्मक संकट का विश्लेषण करने की कोशिश करता हूं जिसमें यह विश्व व्यवस्था अब स्वयं को फँसा हुआ पाती है। और तीसरे, मैं ज्ञान की संरचनाओं में उत्पन्न संकटों का विश्लेषण करने का प्रयास करता हूं, जो कि आधुनिक विश्व व्यवस्था के संरचनात्मक संकट का ही एक भाग है परंतु इसके एक विस्तृत–विशेष विश्लेषण की आवश्यकता है।

ये तीनों कार्य ही मेरे पेशे का हिस्सा हैं और इस पेशे का सबसे अच्छा संक्षिप्त विवरण एक ऐतिहासिक समाज–वैज्ञानिक के रूप में किया जा सकता है। हालांकि मुझे इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि मैंने समाजशास्त्र में पीएच. डी. की है और विश्वविद्यालय में मेरी सभी नियुक्तियाँ समाजशास्त्र विभाग में ही हुई। इसके अतिरिक्त, निश्चित रूप से, मैं अंतराष्ट्रीय समाजशास्त्र, संभवतः जैसा मैंने पहले भी कहा था, अन्य विषयों की तुलना में अधिक व्यापक है। ■

1. क्रेग कॉल्हन, (सपा.) (2007), सोशियोलॉजी इन अमेरिका : ए हिस्ट्री। शिकागो : यूनीवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस, पृष्ठ : 427–437.

2. इमेन्युएल वालरस्टाइन (समन्वयक), (1996), ओपन द सोशल साइसेंज : रिपोर्ट ऑफ द गुलबेन्कियन कमीशन ऑन द रिस्ट्रक्चरिंग ऑफ द सोशल साइसेंज। स्टैन्फोर्ड : स्टैन्फोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस।

> ब्राजील में जून के दिन

रुई बर्गा, साओ पाउलो विश्वविद्यालय, ब्राजील एवं कार्यकारी सदस्य, श्रमिक आंदोलनों पर शोध समिति (**RC** 44) और **रिकार्डो एंट्यूनेस,** केम्पीनास राज्य विश्वविद्यालय, ब्राजील

ब्राजील के जून के विरोध आर्थिक विकास के ईंजन की सीमाओं तथा इसकी थकान को इंगित करते हैं।

जून 2013 ब्राजील मे सामाजिक बगावत के इतिहास में अपना स्थान रखेगी। 6 जून को साओ पाउलो में एक प्रदर्शन, जिससे सार्वजनिक परिवहन के किराये में वृद्वि के विरोध में करीबन 2000 लोगों को विरोध के लिए आकर्षित किया, शुरू हुआ। मोविमेण्टो पासे लिवरे (शुल्क मुक्त आंदोलन) (MPL) के युवाओं ने कभी यह कल्पना नहीं की होगी कि वे देश को ऐसे धमाके से हिला देगें जो सैन्य तानाशाही के अन्तर्गत 1984 में प्रत्यक्ष चुनावों की माँग के अभियान के समान है।

वास्तव में, ब्राजील की लोकमत और सांख्यिकी संस्था (Brazilian Institute of Public Opinion and Statistics) (IBOPE) द्वारा 19 जून और 23 जून के बीच में 22 राज्यों की राजधानियों सहित लगभग 400 शहरों में कराये गये सर्वेक्षण के अनुसार ब्राजील की जनसंख्या का तकरीबन 6 प्रतिशत सड़कों पर प्रदर्शन और जुलूस के लिए उतर गया था। इस लोकप्रिय लामबंदी की लहर के तीन मुख्य कारण हैं। पहला, सस्ते श्रम के लोचदार शोषण पर आधारित विकास के वर्तमान मॉडल का नौकरियों में वृद्वि और आय का पुर्नवितरण पर प्रभाव खत्म हो गया है। दूसरा, ब्राजीन में संग्रहण की वर्तमान व्यवस्था पर गहराते वैश्विक आर्थिक संकट का नकारात्मक प्रभाव जिससे आर्थिक वृद्वि में कमी आई। तीसरा, 2005 और 2010 के बीच सकल घरेलू उत्पाद में वृद्वि के साथ होने वाले कम या ज्यादा अप्रकट सामाजिक बगावत अब लोकप्रिय आक्रोश में बदल गई जो पिछले महीनों में सड़कों पर फैल गया।

लूला का पहला कार्यकाल रूढ़िवादी आर्थिक नीतियों द्वारा अंकित था और बड़े शोरगुल के साथ भ्रष्टाचार के मामले के साथ खत्म हुआ। इस तथ्य ने सरकार पर अपना मार्ग बदलने के लिए दबाब डाला जिसने सामाजिक खर्चे में और अधिक वृद्वि करी, मुद्रास्फीति के उपर न्यूनतम मजदूरी में वृद्वि की और लोकप्रिय ऋण को मजबूत बनाया। जैसा कि राजनीतिक वैज्ञानिक आन्द्रे सिंगर ने दिखाया कि इस रणनीति ने ब्राजील की जनसंख्या के सबसे गरीब क्षेत्र से आर्थिक नियन्त्रण के लूला के तरीके के लिए निर्वाचन सम्बन्धी सर्मथन को एकीकृत करने में मदद की।

इसके अलावा, सार्वजनिक ऋण के कारण बढ़ते हुए भार का प्रबंधन करने और कार्यशील वर्ग के महत्वपूर्ण क्षेत्रों से समर्थन पुनः प्राप्त करने के लिए संघीय सरकार ने श्रम बाजार के औपचारीकरण को बढ़ावा दिया। इस प्रक्रिया ने श्रमिकों को उच्च स्तर की सामाजिक सुरक्षा प्रदान की। ब्राजील की वस्तुओं की कीमतों में वृद्वि से प्रेरित पिछले दशक में आर्थिक वृद्वि ने सामाजिक खर्चे में वृद्वि और श्रम सुरक्षा के विस्तार के संयोजन को सम्भव बनाया।

हालाँकि वर्तमान प्राद्यान्य शासन के अन्तर्गत छिपे हुए संकट के दौर धीरे धीरे प्रकट होने लगै। आखिरकार, औपचारिक क्षेत्र में प्रगति, प्रफुल्लित श्रम बाजार और न्यूनतम मजदूरी में वास्तविक लाभ के अलावा विकास के वर्तमान मॉडल के कारण काम पर दुर्घटनाओं की संख्या में वृद्वि, कर्मचारियों के टर्नऑवर का तीव्रीकरण, कर्मचारी आउटसोर्सिंग की उच्च दर, अधिक लचीले

>>

काम के घंटों के साथ सार्वजनिक परिवहन, स्वास्थ्य और शिक्षा में निवेश सापेक्ष रूप से गिरावट आई।

मॉडल के दूसरे पक्ष ने श्रमिकों, विशेष रूप से उनमें से युवा जो अयोग्य, गैर–यूनियन वाले, अर्ध–कुशन और कम मजदूरी पाने वाले थे, के माध्य कमोबेश अशांति के एक स्थायी स्तर को बढ़ावा दिया । हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि पिछलें दस वर्षों में औपचारिक श्रम बाजार में सृजित 94% नौकरियॉ न्यूनतम मजदूरी से 1.5 गुना कम भुगतान करती हैं (तकरीबन 450 यूएस डालर)

यह देखते हुए कि औपचारिक नौकरियों का 65 प्रतिशत 18 से 28 वर्ष की आयु के युवा लोगों द्वारा भरा हुआ है, हम समझ सकते हैं कि वर्तमान मॉडल के समाप्ति से उत्पन्न सामाजिक बगावत मुख्य रूप से इस समूह पर केन्द्रित क्यों थी जिसके कारण इसने जून के दिनों की शुरूआत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ''प्लस–मार्केटिंग'' परामर्श संस्था द्वारा कराये गये शोध के अनुसार, रियो डी जेनेरियो में 20 जून 2013 के मार्च के दौरान अधिकांश प्रदर्शनकारी (70.4%) कार्यरत थे और न्यूनतम मजदूरी से कम कमा रहे थे (34.3%)। यदि हम उन को भी जोड़ दें जो न्यूनतम मजदूरी का तीन गुना कमाते हैं (30.3%) तो रियो डी जेनेरियों की सड़कों पर उतरने वाले 10 लाख लोगों में से 64 प्रतिशत जोखिमपूर्ण स्थिति में इस नगरीय श्रमिक वर्ग का हिस्सा हैं।

इसके अलावा, कम से कम 2008 से तो देश में हड़तालों में तीव्र वृद्वि के सबूत दृष्टिगोचर होते हैं। सांख्यिकी एवं सामाजिक–आर्थिक अध्ययन के विभाग (DIEESE) की उद्वितांकित सूचना के अनुसार 2010 के बाद हड़तालों की संख्या बढ़ गई ताकि 2012 में डाउनटाइम 2011 से 75% अधिक था। यह एक ऐसा उच्चतम स्तर था जो सिर्फ 1989 और 1990 के वर्षों से ही नीचे था। धीमी होती आर्थिक वृद्वि और अभी भी मजबूत श्रम बाजार का संयोजन इस महत्वपूर्ण घटना की व्याख्या करने में मदद करता है।

दरअसल, राजनैतिक रूप से बहुआयामी जिस आंदोलन को हम सड़कों पर देखते हैं वह ब्राजील के हाल के इतिहास में होने वाले अन्य से काफी अलग है। इसके अलावा, हम प्रदर्शनकारियों की पृष्ठभूमि में परिवर्तन देख सकते हैं : शुरूआत में वे सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करने वाले विद्यार्थी और श्रमिक थे और जो MPL के माध्यम से 2005 से फ्लोरियानोपोलिस, पोर्टो अलगेरे, विटोरिया, साल्वाडोर जैसे कई शहरों में विभिन्न वामपंथी दलों से जुड़ी युवा गतिविधियों के साथ प्रदर्शन आयोजित करते हैं। ये धीरे धीरे बढ़े और साओ पाउलो शहर में 13 जून के मार्च के दौरान हिंसक पुलिस दमन के बाद, प्रतिरोध फैल गया और शहर के बाह्य इलाकों में पहुँच गया जहाँ युवाओं की एक साधारण भीड़ ने लामबंदी की प्रक्रिया शुरू की जिससे कई सड़कों अवरूद्व हो गई। इसके पश्चात् जोखिमपूर्ण स्थिति में स्थित युवा लोगों और श्रमिकों ने पारपंरिक श्रथ्मक वर्ग को आकर्षित किया : 11 जुलाई को करीबन 3 लाख लोगों ने एक सामान्य हड़ताल में हिस्सा लिया जिसने देश के मुख्य राज्यों की राजधानियों को बंद कर दिया। कुल मिलाकर, इन हड़तालों और प्रदर्शनों ने इस मिथक को तोड़ा कि ब्राजीन एक मध्यमवर्गीय देश है जो विश्व की पांचवी आर्थिक शक्ति बनने को अग्रसर था – एक ऐसा देश जहॉ बहुमत अपने शासकों और विकास के वर्तमान मॉडल से संतुष्ट है। लामबंदी के वर्तमान चक्र ने वर्तमान विकास मॉडल के साथ एक गहरी बैचेनी की मौजूदगी प्रकट की, अतः विरोध शायद कुछ समय के लिए सहना होगा।

अब एक ओर तो निजीकरण चक्र की बहाली जो बंदरगाहों, हवाई अड्डों और संघीय राजमार्गों के निजीकरण और दूसरी तरफ स्वास्थ्य, शिक्षा और सार्वजनिक परिवहन जैसे क्षेत्रों में सार्वभौमिक अधिकारों के लिए लोकप्रिय मांग के बीच विरोधाभास के प्रति बढ़ती हुई चिंता पाई जाती है, जैसा कि जून दिवस के दौरान व्यापक रूप से काम में आने वाला वाक्य कहता है : ''यह पैसों के बारे में नहीं है, यह अधिकार के बारे में है।'' ■

> क्रान्ति–सुधारों (Refolution) की सीमाएँ

आसिफ बयात्, इलिनोइस विश्वविद्यालय, अरबाना–चैम्पेन, यूएसए

राष्ट्रपति मोर्सी सेना का सामना कर रहे हैं।

21 अगस्त 2013 को पूर्व प्रधानमंत्री होस्नी मुबारक की जेल से रिहाई एक निर्णायक मोड़ का प्रतिनिधित्व करती है; यह एक प्रतिक्रांति बहाली को चिन्हित करता है जो कदाचित् 11 फरवरी 2011 को मुबारक के इस्तीफे के अगले दिन शुरू हुई परन्तु पूर्ण जनरल एल सीसी द्वारा इस्लामिक मुस्लिम ब्रदरहुड के नुमाइन्दे और निर्वाचित राष्ट्रपति मोहम्मद मुर्सी के पदच्युत् करने पर 3 जुलाई 2013 को पूर्ण हुई। सेना ने संविधान को निरस्त कर एक अंतरिम नागरिक सरकार को स्थापित किया जिसे नये राष्ट्रपति, संसद और संविधान के लिए चुनाव कराने का जिम्मा सौंपा। एक हिंसक कार्यवाही, जिसमें 1000 से भी ज्यादा लोग मारे गये (100 पुलिसकर्मी भी शामिल), के द्वारा जनरल ने उदण्ड मुस्लिम ब्रदर्स का दमन शुरू किया। मुस्लिम ब्रदर्स के पीछे हटने और उदारवादी–धर्मनिरपेक्ष विपक्ष के अव्यवस्थित होने से मुबारक समर्थक परमानंद में झूम उठे और मीडिया, सड़कों और राजकीय संस्थाओं में आक्रामक हो गये। राष्ट्रीय वर्चस्व, गलत सूचनाओं और स्व–भोग के नंगे नाच ने प्राचीन शासन को बहाल करने की उनकी कल्पना

> >

को पोषित किया। पुराने महत्वपूर्ण लोग–सुरक्षा कप्तान, खुफिया आकाओं, बड़े व्यवसायी और मीडिया प्रमुखों में ताजे खून का संचार हुआ। शीघ्र ही निगरानी/चौकसी ब्रदर्स के नये शासन को घता बताने वाले किसी भी गणमान्य व्यक्ति–जिसमें वामपंथी, उदारवादी और क्रांतिकारी भी सम्मिलित थे, तक विस्तृत हो गई। यहॉ तक कि नई सरकार के उपाध्यक्ष, मोहम्मद–एल–बरदई को भी बख्शा नहीं गया। अचंभित क्रांतिकारी (जिन्होंने, रोटी, स्वतन्त्रता और सामाजिक न्याय की मांग के लिए 25 जनवरी 2011 को विद्रोह की शुरूआत की और उसे आगे बढ़ाया) प्रतिक्रांति को आगे बढ़ते देखते रह गये।

दो वर्ष के अनवरत क्रांतिकारी संघर्ष के पश्चात् इस तरह का बदलाव कैसे हो गया? यदि क्रांतियों का सम्बन्ध गहरे/व्यापक परिवर्तन से है तो सभी क्रांतियाँ अपने अंदर प्रतिक्रांति के रोगाणु को ले कर चलती हैं जो हमला करने के लिए एक अवसर का इंतजार करते हैं; परन्तु वे व्यापक बहुत मुश्किल से सफल होते हैं क्योंकि उनमें लोकप्रिय जनसर्मथन का अभाव होता है। लुई बोनापार्ट का कुख्यात 18वाँ ब्रूमेयर ज्यादा नहीं चला और फ्रांस की क्रांति ने स्वयं को पुर्नस्थापित कर दिया। दो दशकों की समयावधि के दौरान नये लोकतंत्रों द्वारा पुरानी व्यवस्था को पराजित कर, 1848 की यूरोपीय क्रांतियो ने दुर्जेय प्रतिक्रांति की लहरों पर काबू पा लिया। 20वीं शताब्दी में, रूस, चीन, क्यूबा और ईरान की क्रांतियों के विरूद्व आंतरिक षडयंत्राों और अंर्तराष्ट्रीय युद्व सभी असफल हुए। ऐसा इस बात के बावजूद हुआ कि उनके कारण ये क्रांतियाँ गहन रूप से सुरक्षा के प्रति सचेत और दमनकारी थीं। मारकोस के खिलाफ 1986, के जन–आंदोलन का अनुसरण करते हुए फिलीपीन्स में, कोरी एक्वीनो सरकार की सरकार के खिलाफ सेना के लगातार तख्तापलट के सभी प्रयासों को निष्प्रभावी कर दिया था। सिर्फ निकारागुआ में 1979 की क्रांति के बाद लोकतांत्रिक व्यवस्था के एक दुर्लभ अनुभव के रूप में, चुनावी प्रक्रिया के माध्यम से प्रतिक्रांति सफल हुई। अमरीका–समर्थित कान्ट्रा–युद्व ने क्रांतिकारी सेण्डिनिस्ता सरकार को गंभीर रूप से कम आँका जिसके फलस्वरूप दक्षिण पंथी वायलेटा चमेरो की चुनावी जीत सुनिश्चित हुई।

परन्तु मिस्र में घटना चक्र भयंकर रूप से अतिश्योक्तिपूर्ण नहीं था। जैसा कि मैंने अन्यत्र भी सुझाव दिया है, मिस्र, ट्यूनिशिया और यमन ने 20वीं शताब्दी के राज्य में तीव्र और आमूलचूल परिवर्तन करने वाली क्रांतियों को अनुभव नहीं किया अपितु उन्होंने ''रेफो–लूशन्स'' (Refu-lutions) या क्रांतियाँ जो अवलंबी राज्यों की संस्थाओं में और उनके माध्यम से सुधार पर जोर देना चाहती थी, का अनुभव किया। इस विरोधाभासी प्रक्षेपपथ में क्रांतिकारियों को भारी लोकप्रिय जनसर्मथन मिला परन्तु उनमें प्रशासकीय शक्ति का अभाव था; उन्होंने अभूतपूर्व आधिपत्य तो कमाया परन्तु वे वास्तव में शासन नहीं कर पाये जिसका परिणाम यह हुआ कि उन्हें चीजों को बदलने के लिए (जैसे मंत्रालय, न्यायपालिका, सेना) अवलंबी राज्यों की संस्थाओं पर विश्वास करना पड़ा। बेशक निहित हितों की गहरी जड़ो वाली इन संस्थाओं से स्वयं को बदलने की अपेक्षा रखना अनुभवहीनता थी। और कुछ नहीं वे तो जवाबी हमले के एक मौके के इंतजार में आक्रामक बनी रहीं। क्रांतिकारियों ने अपनी इस कभी को शीघ्र ही भाँप लिया परन्तु वे सड़को पर वीरतापूर्ण प्रदर्शन करने के अलावा कुछ नही कर सकते थे क्योंकि उनमें सशक्त और सुसंगत संगठन, शक्तिशाली नेतृत्व और आवश्यकता पड़ने पर दमनकारी शक्ति को तैनात करने की शक्ति का अभाव था।

अतः जहाँ एक ओर गैर–इस्लामी क्रांतिकारी तेजी से हाशिये पर जा रहे थे, वहां अत्यधिक संगठित मुस्लिम ब्रदर्स, चाहे एक बहुत कम बहुमत से, चुनाव के माध्यम से सरकार बनाने में सफल हुए। परन्तु वे आंदोलन की ''रोटी, स्वतन्त्रता और सामाजिक न्याय'' की माँग को पूरा करने में विफल रहे। अगर कुछ किया तो उन्होंने अपनी स्वयं की शक्ति को मजबूत करने पर ध्यान केन्द्रित किया चाहे इसके लिए उन्हें "Deep State" की संस्थाओं जैसे पुलिस और खुफिया तंत्र जिन्हें वास्तव में बड़ी मरम्मत की आवश्यकता थी, के साथ समझौता करना पड़ा। शासन के औचित्य को सिद्व करने के लिए उन्होंने धर्म का असरदार तरीके से इस्तेमाल किया, राज्य को इस्लामिक करने का ख्वाब देखा, नव उदारवादी अर्थव्यवस्था को चालू रखा और शासन कार्य में उल्लेखनीय असमर्थता दिखाई। काफी बड़ी संख्या में मुबारक समर्थकों द्वारा पहले से ही तिरस्कृत ब्रदरहुड, कई आम लोग जिन्होंने मुर्सी का राष्ट्रपति के पद के लिए समर्थन किया था, की तेजी से हमदर्दी खो रहे थे। अपने प्रथम वर्ष के अंत तक राष्ट्रपति मुर्सी और उनके संरक्षकों को आंदोलन की गहनता के लिए बाधा माना गया। अतः ब्रदरहुड के शासन के विरोध ने व्यवहार में मुबारक–विरोधी आंदोलनकारियों को प्रतिक्रांति मुबारक समर्थकों को एक साथ कर दिया जिसने लाखों मोहभंग साधारण मिस्र निवासियों के साथ मिलकर 30 जून के विद्रोह का निर्माण किया। तमारोड़ (विद्रोह) आंदोलन ने इन विचित्र सहयात्रियों के गठ बंधन की मध्यस्थता करने हेतु एक उत्प्रेरक के रूप में काम किया। इसके कार्यकर्ताओं ने 30 जून के पहले कई महीनों तक रात–दिन एक करके असहमत भीड़ को लामबंद किया। उन्होंने राष्ट्रपति मुर्सी को अपदस्थ करने के लिए अविश्वास प्रस्ताव पर तकरीबन 22 लाख लोगों के हस्ताक्षर करवाने का दावा किया।

शक्तिशाली एकीकृत नेतृत्व के अभाव में पनपे भारी असंतोष को देखते हुए सेना को प्रोत्साहन मिला और वह ''मुर्सी–विरोधी आंदोलन'' के नेता के रूप में स्वयं को घुसा कर इस अव्यवस्थित लहर पर कूद पड़ी। उस समय कई मिस्रवासियों ने सेना के हस्तक्षेप को एक आवश्यक ''आंदोलनकारी दबाब'' के रूप में मुख्य बाधा अर्थात ब्रदरहुड शासन जिसने उनके अनुसार आंदोलन को थाम दिया था, को हटाने वाला माना। परन्तु वे इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकते थे जो जनरल और उनके प्रतिकारी क्रांति के सहभागियों के साथ 3 जुलाई के बाद होगा। मुर्सी को निर्वासित करने के इरादे से तमारोड़ का समर्थन करने वाली सेना और उनके प्रतिक्रांति के सहभागियों के फैलाव की रिपोर्ट को ब्रदर्स के शासन द्वारा पहले से भड़काये व्यापक असंतोष को धुंधला नहीं करना चाहिए। तमारोड़ नेताओं के दिमाग में जो कुछ भी था और 30 जून के विद्रोह के पहले लाखों साधारण मिस्रवासियों की कल्पना में तमारोड़ के लोकप्रिय विचार में अंतर है। सड़कों पर लोगों से एक आकस्मिक बातचीत में मैंने चार बच्चों के पिता और पर्यटक नावों का मैकेनिक, जिसने अपनी नौकरी चले जाने पर काहिरा में काम करने हेतु अपने परिवार को असवान् के दक्षिण शहर में पीछे छोड़ दिया था। मुर्सी पर गुस्सा दर्शाते उसने कहा कि ब्रदर्स में ''देश चलाने का दिमाग नहीं है''; वे कहते है पर्यटन हराम (अनुमति नहीं होनी चाहिए) है, और कि विदेशियों को घर लौट जाना चाहिए।'' उसने आगे कहा कि ब्रदर्स भयानक हैं परन्तु इस 30 जून को इनका अंत हो जायेगा; लोग उनको गिराने के लिए बाहर निकलेंगे। उसने यह 30 जून के तीन सप्ताह पूर्व 9 जून को कहा। ब्रदर्स सचमुच में गिराये गये परन्तु सेना और प्रतिक्रांति विजयी उभरे।

सेना की इस चाल ने न सिर्फ मुस्लिम ब्रदर्स अपितु होने वाली क्रांति को भी निशाना

>>

बनाया। पुराने मुबारक समर्थक दिग्गजों की तरह क्रांति के विचार से कभी भी जुड़ नहीं पाये–यह विचार कि मिस्र बदल गया है, नये कर्त्ता, भावनाएँ और काम करने के तरीके उभरे हैं और यह स्थापित संस्तरणों–शासक बनाम् शासित, अमीर बनाम् गरीब, शेख बनाम् आम आदमी, पुरूष बनाम् महिलाएँ, बूढ़े बनाम् युवा या शिक्षक बनाम् विद्यार्थी को उलट पुलट करने की संभावना रखते हैं। अपने शासन को पुनः प्रभावकारी बनाने हेतु दिग्गजों ने पहले ही राष्ट्रवादी भावनाओं को तीव्र कर दिया है परन्तु यह आर्थिक नवउदारवाद के साथ रूढ़िवादी धार्मिकता (चाहे सलाफी प्रकार जैसी) को लाने में संकोच नहीं करेंगे और उसकी वैचारिक त्रिमूर्ति–नैतिकता, बाजार और सैन्य शासन का विपरिनियोजन करेंगे।

यह देखते हुए कि प्रतिक्रांति पुनः हमला करने के लिए दृढ़ है क्या इससे बचा जा सकता था? यदि मुस्लिम ब्रदर्स सचमुच में समावेशी थे और क्रांतिकारी गठबंधन में गैर–इस्लामी विपक्ष के साथ काम करने को तैयार थे और यदि गैर इस्लामी विपक्ष निर्वाचित इस्लामियों, चाहे वे अनुदार हो, को विस्तृत प्रतिनिधिपूर्ण राजनीति में भागीदार के रूप में मानने को तैयार होते, तो चीजें अलग तरह से हो सकती थीं। वस्तुतः निर्वाचित इस्लामिक, गैर–इस्लामी विपक्ष और मंद पुराने दिग्गज के बीच ताकतों का सम्भाव्य संतुलन, नागरिकता, नागरिक स्वतन्त्रता और अधिकार एवं कर्त्तव्यों जैसे मुद्दों पर बहस के लिए जगह पैदा करता। एक ऐसी जगह जिसमें पार्टियाँ लोकतांत्रिक खेल के नियमों में खेलना सीखती। ऐसा राजतंत्र सामाजिक न्याय के शक्तिशाली दावों को सम्बोधित करने में असंभव होता परन्तु दलित वर्गो के लिए प्रतिक्रांति के बजाय गतिशीलता के अधिक अवसर होते।

यह एक अमूर्त अनुमान/अटकल की तरह लगता है परन्तु इसका ट्यूनिशिया पर सीधा प्रभाव पड़ता है। ट्यूनिशिया में सत्तारूढ़ अल–नाहदा, यदि अपनी कार्यशैली में धर्मनिरपेक्ष विपक्ष के साथ अधिक समावेशी होती है तो यह नागरिक और व्यक्तिगत हितों पर चिंता को स्वीकार कर अपने ही हित साध सकती है। और बेन–अली का विरोध करने वाली धर्मनिरपेक्ष ताकतें अपनी स्वतन्त्रता हासिल करेंगी यदि वे अल–नाहदा धार्मिक दल को ट्यूनिशिया के सार्वजनिक क्षेत्र में एक खिलाड़ी या फिर एक साझेदार के रूप में मानती हैं। एक लोकप्रिय प्रतिक्रांति, यदि सफल होती है, तो वह न केवल राजनैतिक इस्लाम का बल्कि बेन अली के पुलिस राज के अंतर्गत ''राजनैतिक मृत्यु'' से उबरी धर्मनिरपेक्ष प्रबुद्व वर्ग का भी सफाया कर सकती है। ■

[1] **Bayat, A. (2013) "Revolution in Bad Times."** *New Left Review* **80: 47-60.**

> राज्य के विरुद्ध सड़क

मोहम्मद ए बामेह, पिट्सबर्ग विश्वविद्यालय, यू.एस.ए. और आई.एस.ए. की अंतराष्ट्रीय समाजशास्त्र समीक्षा के सम्पादक

काहिरा की सडकों की कला सर्वव्यापक एवं राजनैतिक है। यहां एक भित्ति चित्र प्राचीन मिश्र के संघर्षों को वर्तमान शहीदों की छवियों से जोडते हुए दर्शा रहा है। चित्र– मोहम्मद बामेह द्वारा।

मिस्र की क्रांति का पहला शानदार चरण खत्म हो गया है : 11 फरवरी, 2011 और 14 अगस्त 2013 के बीच का समय स्पष्ट रूप से वर्णित काल था। यह पुराने शासन के स्पष्ट विध्वंस के साथ शुरू होता है। यह बदला लेने को प्यासा, अपनी वापसी के साथ समाप्त होता है। परन्तु ऐसा एक घुमाव के साथ होता है क्योंकि अब वह क्रांति की तरफ से कार्य कर रहा है। जनसंख्या का स्पष्ट बहुमत मुस्लिम ब्रदरहुड़ के अल्पकालिक शासन के साथ असंतुष्ट हो गया। इसने सैन्य हस्तक्षेप जिसने मिस्र के इतिहास में पहली बार लोकतांत्रिक तरीके से निर्वाचित राष्ट्रपति को अपदस्थ किया, के आधार के रूप में काम किया।

हालांकि, यह स्पष्ट नहीं है कि साधारण व्यक्तियों जिन्होंने मुर्सी को हटाने का समर्थन किया था, वास्तव में 14 अगस्त का खूनखराबा चाहते थे। इस दिन सेना ने मुर्सी समर्थक दो शिविर, जिसमें लगभग 1000 लोग मारे गये या उसके पहले दो अन्य छोटे नरसंहार का सफाया कर दिया। न ही यह स्पष्ट है कि वे सेना द्वारा देश को मुबारक के शासन से भी अधिक मजबूती से नियंत्रित करना चाहते थे, जैसा कि शायद ये अभी करने की कोशिश कर रहे हैं। आखिरकार, मुबारक के 30 वर्षों में ऐसा कुछ भी नहीं है तो अब सत्ता में सैन्य शासन द्वारा किये गये अत्याचार जैसा दिखता है। न ही मुबारक के युग ने इस तरह की सार्वभौमिक सत्ता समर्थक प्रेस को देखा था। मिस्र के दो–तिहाई प्रांत अब उच्च–स्तरीय सेना या पुलिस अधिकारियों द्वारा शासित हैं। सबसे उल्लेखनीय है कि अढ़ाई साल तक जीवन के कोई लक्षण नहीं होने के बावजूद

> >

पुराना शासन का सुरक्षा तंत्र, कैसे पूरी ताकत से जीवित हुआ। ऐसा लगता है कि जैसे पुराना शासन इतना भूमिगत हो गया था कि किसी को यह संदेह भी नहीं था कि वह अस्तित्व में है। यह उचित समय पर अपनी पूरी जानलेवा क्षमता के साथ पुनः प्रकट हुआ है। यह एक ऐसा तंत्र है जो हिंसा पर पनपता है इसने अपने विपक्षियों को हिंसक बनने के लिए प्रोत्साहित करने की हर संभव चेष्टा की है ताकि राज्य सुरक्षा के पूर्ण बल का औचित्य साबित किया जा सके।

मिस्र की क्रांति की जटिल गतिकी को हालाँकि राज्य सत्ता प्राप्त करके संघर्ष के संदर्भ के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। वास्तव में 2011 जनवरी से अधिकतम क्रांतिकारी ऊर्जा किसी विशिष्ट व्यक्ति या दल द्वारा सत्ता ले लेने की मांग के बजाय, राज्य के विरूद्ध खर्च हुई है। साधारण अराजकतावादी प्रवृत्तियों में जड़वत् यह लोकप्रिय रवैया न तो संगठित राजनैतिक दलों द्वारा न ही सेना शक्तियाँ जो राज्य पर नियन्त्रण करने के लिए संघर्ष कर रही हैं, द्वारा समझा गया है। वास्तव में, मिस्र की क्रांति का सबसे कम उल्लेखनीय गुण उसके गतिवाद के दोहरे स्त्रोत है : एक तरफ तो हमारे पास सड़क गतिशीलता है जो बल से नहीं बल्कि राज्य के अधिरोपण के बावजूद और बाहर रहने की पुरानी तकनीकों में जड़ित है। दूसरी तरफ हमारे पास संगठित बल हैं – उल्लेखनीय रूप से ब्रदरहुड और सेना और साथ ही संगठित उदारवादी दल, जो सड़क गतिशीलता में सिर्फ अपने एजेण्डा के राजनैतिक अवसरों को देखतें है न कि एक नये युग और सोच के नये तरीकों का आगाज करता एक भव्य क्रांतिकारी तमाशा। वस्तुतः, व्यक्ति मिस्र के राजनैतिक अभिजात वर्ग की बौद्धिक मध्यमता जो वर्तमान सरकार के दृढपटल (sclerotic) संगठन/बनावट में स्पष्ट दिखाई देती है लोकतंत्र के लिए इसके अ–प्रेरणादायक मानचित्र (जो पहले ही अपदस्थ राष्ट्रपति द्वारा लगभग शब्दशः प्रस्तावित किया गया था), इसके द्वारा प्रायोजित मीडिया की अपठनीय गुणवत्ता और इस संकट के दौरान बुनी हुई अनगिनत निम्न स्तरीय षड़यंत्रों के सिद्धान्त के द्वारा साबित होती है।

हाल की सभी अरब बगावतों के समान मिस्र की क्रांति भी काफी हद तक साधारण व्यक्तियों का एक आंदोलन था। ''साधारण'' से मेरा तात्पर्य उन व्यक्तियों से है जिनकी कोई विस्तृत वैचारिक प्रतिबद्धताएँ और किसी पार्टी से सम्बद्धता नहीं थी और जिन्होंने जनवरी, 2011 के पहले शायद कभी भी सड़क पर राजनैतिक विरोध नहीं किया था और शायद विरले ही चुनाव में मतदान करते थे। साधारण व्यक्तियों की ये क्रांतियाँ करिश्माई नेता या संस्तरित संगठनों से मार्गदर्शन पर भरोसा नहीं करती थीं। उन्होंने अपने प्रतिभागियों को विश्वास दिलाया कि छोटा व्यक्ति अब इतिहास का एजेंट है। इस नवीन जज्बात ने अधिक कलात्मक रचनात्मकता और उच्च गतिदायक बहस और सभी तरफ बातचीत के वातावरण के साथ बेहद समृद्ध प्रयोग की संस्कृति का विकास किया है। परन्तु इसने ऐसा राज्य जो कम से कम इस तरह की नीचे से सामाजिक गतिशीलता से प्रेरित हुआ हो या उसके जैसा हो, को उत्पन्न नहीं किया है। ऐसा लगता है कि अधिकांश मिस्रवासियों की इच्छा आंदोलन से ऐसे राज्य को बनाना था जो सिर्फ उन पर शासन करने की बजाय उनके साथ रहता। परन्तु मिस्र का राज्य शायद ही इस अपेक्षा के अनुसार चला है और अगस्त के नरसंहार के बाद ऐसी कल्पनाओं से यह और भी दूर है।

मिस्र के मौजूदा शक्ति धारक ध्रुवीकरण के निर्मम पर्यावरण जो अगस्त नरसंहार का अंतिम स्त्रोत था, को भुनाते हैं। जहां इस वातावरण से उस सरकार को लाभ पहुंचाता है जो एक पार्टी को दूसरी पार्टी के विरूद्ध रक्षा के लिए मजबूती का वादा करती है। एक ऐसा वातावरण भी है जो काफी हद तक दुश्मन को नष्ट करने की कला के रूप में समझी जा रही राजनीति के लिए अनुकूल है। इस तर्क ने कई टकराव पैदा कर 14 अगस्त को बड़े पैमाने पर कत्ले आम के लिए मार्ग तैयार किया है : मानवता के विरूद्ध अपराध जो ''लोगों की इच्छा'' के रूप में उचित ठहराया गया। उदारवादी ताकतों में वफ्द पार्टी ने इस संत्रास का इस तर्क के साथ समर्थन किया कि सुरक्षा बल ने तो केवल 'लोगों' द्वारा सौंपे गये कार्य को किया है। ये लोग वे थे जो जनरल सीसी के आतंकवाद से निपटने के लिए जनादेश के अनुरोध के समर्थन के लिए 26 जुलाई को बाहर आ गये। (इससे इनका तात्पर्य आबादी का एक–तिहाई से होगा)

लेकिन यदि जो 14 अगस्त को हुआ वह ''लोगों'' की इच्छा था, तो भी वह मानवता के विरूद्ध अपराध ही रहेगा। ऐसा अपराध सामान्य तैयारी के साथ शुरू होता है : दुश्मन का अमानवीयकरण जो मिस्र की मीडिया और कुछ मिस्र बुद्धिजीवी लगातार कर रहे हैं ताकि खून खराबा न्यायसंगत और तर्कसंगत प्रतीत हो। द्वितीय, ऐसे अपराध को राजनैतिक जीवन में एक निश्चित दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है : यह विश्वास कि राजनीति अपने दुश्मन को, पूर्ण रूप से, खत्म करने की कला है। और तीसरा, यह विश्वास कि यह कार्य वास्तव में पूरा किया जा सकता है। तीनों तरह की सोच की आपूर्ति हाल ही के महीनों में प्रचुर मात्रा में पाई गई है। परन्तु मैं विशेष रूप से 3 जुलाई से, ब्रदरहुड़ के शत्रुओं को यह कहते हुए सुन रहा हूं कि आंदोलन को एक बार पूर्ण रूप से समाप्त करने का क्षण यही था। अतः इस प्रकार अंतिम विश्लेषण में मानवता के खिलाफ अपराध अंधविश्वास का एक कृत्य है : यह विश्वास कि थोड़ा सा खून खराबा उस समस्या का समाधान करेगा जिसे हम समझना नहीं चाहते। यदि आंदोलन/क्रांतियाँ तर्क से काम करती है जैसा हर्बट मारक्यूज ने 1940 में समझ लिया था, वे अंध विश्वास से बिगड़ती है, जहां से उन्हें बचाना चाहिए। ■

[1] See Bamyeh, Mohammed A. (2013) "Anarchist Method, Liberal Intention, Authoritarian Lesson: The Arab Spring between Three Enlightenments." *Constellations* 20(2): 188-202.

> अपमान से विद्रोह की तरफ

पोलात् अल्पमान, अंकारा विश्वविद्यालय, तुर्की

तैल्सिड मानव – गेजी पार्क के आन्दोलन के अनेक प्रतीकों में से एक – जो कि उस तैल्सिड समाधान का संदर्भ देता है जो कि अश्रुगैस से पैदा हुए आंखों के दर्द में कमी लाता है।

तुर्की में इस्लामी रूढ़िवाद अब सत्ता में आया है। ऐसा एक बार नहीं बल्कि तीन बार हुआ है और प्रत्येक समय इसके समर्थन में वृद्वि हुई है। इसने एक ऐसा राजनैतिक मार्ग लिया है जिसका विस्तार राजनैतिक सत्ता से सामाजिक और यहाँ तक कि सांस्कृतिक वर्चस्व तक फैला हुआ है। यह तुर्की सेना के संरक्षण को हटाने का प्रयास करता है और आर्थिक और राजनैतिक सुधारों के द्वारा यह कुर्द और स्कार्फ पहनने जैसे मुद्दों को खोलने का प्रयास करता है। यह यूरोपीय संघ को एक आदर्श के रूप में और मनोवैज्ञानिक–आर्थिक प्रशासन के साथ तुर्की को अंतराष्ट्रीय बाजारों के लिए सत्कारशील और अपने क्षेत्र के अर्न्तगत विदेशी मामलों में प्रभावशाली के रूप में प्रस्तुत करता है।

समय के साथ, इस शासन ने बहुमत का सर्मथन हासिल कर लिया है और यह अब इसे अपनी ही छवि में सामाजिक जीवन को डिजाइन करने के लिए प्रेरित करता है। तुर्की सेना का राजनैतिक प्रभाव वस्तुतः घटा है परन्तु पुलिस का बल मजबूत हुआ है जो अब एक ऐसे संगठन के रूप मे जाना जाने लगा है जो सिर्फ सरकार के लाभ के लिए कार्य करती है। अकादमी और मीडिया सेंसर हो गये हैं (या फिर उन्होंने स्वयं को सेंसर कर लिया है)। एक विचित्र ''महान आदमी'' और ''सज्जन[1]'' राजनीति का सामान्यीकरण हो गया है।

फिर भी नगरीय रूपांतरण के पीड़ितों के अनकहे गुस्से, उप–संविदा (Subcontracting) के दमनकारी प्रयोग और अर्थव्यवस्था की तथाकथित मजबूती के बावजूद बहुमत की भौतिक बेहतरी के अभाव में असंतोष बढ़ रहा था। अपनी मातृभाषा में कानूनी बचाव की संभावना की मांग के लिए जेलों में भूख हड़तालें हुई। मई दिवस समारोह के लिए तक्सिम स्केवयर को फर्जी बहानों के द्वारा बंद रखने वहीं यवुज सुल्ताम सलीम, एक ओटोमान सुल्तान जिसने एलेविस की एक बड़ी संख्या का नरसंहार किया, के नाम पर इस्तांबुल में तीसरे पुल के निर्माण ने कई लोगों को क्रोधित किया। फिर, कुछ ऐसे मामलें भी थे जो सरकार नहीं लेना चाहती थी जैसे हिंसा की सर्वव्यापकता, यातनाएँ, पोजान्ती जेल में कुर्द बच्चों के साथ बलात्कार और 2011 में कुर्द ग्रामीणों का रोबोस्की/यूलूडेरे नरसंहार एवं मई 2013 में रेहानली आतंकवादी गोलाबारी।

गेजी पार्क की घटनाएँ सिर्फ एक विरोध के रूप में शुरू हुई। हालांकि प्रधानमंत्री के लिए यह विरोध आंतरिक और बाह्य षडयंत्र द्वारा निर्मित एक वैचारिक उकसावा था। सत्ता के लिए अत्यधिक इच्छा और लोकतंत्र के लिए आवश्यक समझौते करने की अनिच्छा के कारण प्रधानमंत्री ने प्रभावी रूप से सड़कों को अपनी राजनीति का हिस्सा बना दिया। 31 मई को शुरू होने वाले संघर्ष को बढ़ने से टाला जा सकता

> >

था यदि प्रधानमंत्री ने लोगों को ''लूटने वाले'' और ''विशेष हितों के सेवक'' से दोषारोपित नहीं किया होता। यदि उन्होंने प्रदर्शनकारियों पर उन्हें सार्वजनिक दुश्मन घोषित करते हुए लगातार उंगली नहीं उठाई होती और पुलिस द्वारा प्रदर्शनकारी नहीं मारे जाते, तो किसी समझौते पर आना आसान होता।

1 जून को बड़ी संख्या में सामूहिक रूप से लोग पुलिस बैरीकेड़ को तोड़ कर गेजी पार्क में प्रवेश हुए और वहाँ से उन्होंने पूरी दुनिया को अपनी आवाज सुनाई। पुलिस पीछे हट गई और पार्क छोड़ कर चली गई। तब पार्क में अपनी शिकायतों को व्यक्त करने का एक पर्व मन गया। हास्य के बोध, ग्राफिटी और सोशल मीडिया के व्यापक प्रयोग वाली प्रतिरोध की नई संस्कृति विकसित होने लगी। नारीवादी और LGBT आंदोलन विशिष्ट रूप से प्रमुख थे। इन्होंने ''महिलाओं, समलैंगिकों, वैश्याओं को गाली मत दो'' या ''हठपूर्वक विरोध करो पर गालियों के साथ नहीं'' जैसे नारों के साथ लैंगिक विमर्श को उजागर किया।

शनिवार 15 जून को प्रधानमंत्री ने अंकारा में गेजी पार्क घटनाओं के पीछे काम कर रही विध्वसंक ताकतों और ''विशेष हितों'' को प्रकट करने के लिए एक सार्वजनिक प्रदर्शन का आयोजन किया। उन्होंने कहा कि अगले दिन इस्तांबुल में एक सार्वजनिक प्रदर्शन होगा अतः गेजी पार्क को तुरन्त खाली कराना होगा। इसके फलस्वरूप गैस गोलों, पानी की तोप और लाठियों के प्रयोग से होने वाला पुलिस हमला एक असफलता में बदल गया। सप्ताहंत होने के कारण पार्क बच्चों, वरिष्ठ नागरिकों और निशक्तों से भरे एक मेले की तरह था और वे गैस गोलों के इस आकस्मिक हमले से घबरा गये। अपने शब्दों पर कायम, प्रधानमंत्री एक परिष्कृत किये गयें इस्तांबुल मे अपने सार्वजनिक प्रदर्शन हेतु अवश्श आये। वे इस बात से बेपरवाह थे कि शहर के अस्पताल घायल, चोटिल और मृत व्यक्तियों से भी भरे हुए थे और कई प्रदर्शनकारी हिरासत में थे।

प्रतिरोध अभी जारी है। लोग गेजी पार्क और अन्य पार्कों में सरकारी राजनीति एवं शहर के भविष्य पर चर्चा करने के लिए फोरम आयोजित करते है। वे अपनी स्वयं की भाषा, संस्कृति और अपनी नगरीय चेतना का निर्माण कर रहे हैं। सामाजिक आंदोलन ने सरकार से जातीय समुदायों की रक्षा करने और समाज को सिर्फ बहुसंख्यक संदर्भ में देखने करने की बजाय उसकी बहुलता के संदर्भ में कल्पना करने की मांग करी है। वह अभिव्यक्ति और साहचर्य के अप्रतिबंधित अधिकारों की मांग रखता है।

जैसे जैसे गेजी पार्क की गतिविधियाँ, विरोध से दंगे की तरफ और अब दंगे से प्रतिरोध की तरफ विकसित हो रही हैं, यह व्यक्तिगत शासन को पूरी तरह से संस्थानीकृत लोकतंत्र से प्रतिस्थापित करने की आगाज करने वाला एक अत्यन्त प्रभावशाली सामाजिक आंदोलन बन गया है। गेजी माँगो के साथ साथ प्रदर्शनकारी कुर्द समस्याओं की तरफ भी ध्यान आकर्षित करते हैं। सरकार का इन मुद्दों पर क्या दृष्टिकोण होगा और क्या यह अपने मार्ग को बदलने में सक्षम है, इस पर सब की निगाहें हैं। ■

[1] The phrase of "gentleman" is an adjective commonly used for Recep Tayyip Erdoğan, and this phrase implies a "one man" administration.

> गेजी पार्क : प्रतिरोध की कला

जैनप बैकल, मध्य पूर्व तकनीकी विश्वविद्यालय, तुर्की और आई.एस.ए. की नृजातिवाद, राष्ट्रीयवाद और नृजातीय सम्बन्धों की शोध समिति (**RC** 05) और **नजीह बसाक ऐरगिन,** मध्य पूर्व तकनीकी विश्वविद्यालय, तुर्की और आई. एस.ए. की प्रादेशिक और नगरीय विकास की शोध समिति (**RC** 21) एवं सामाजिक वर्ग एवं सामाजिक आंदोलन (**RC** 47) के सदस्य

अतातुर्क सांस्कृतिक केन्द्र के बाहरी हिस्से पर – जो कि इस्ताम्बुल का एक आईकन है – को एक सुरम्य गैलेरी मे परिवर्तित कर दिया गया, जो कि इस केन्द्र के गिराये जाने के प्रतिरोध को तथा गेजी पार्क और तक्सीम चौक के प्रस्तावित पुर्नःविकास को दर्शाता है।

>>

''एक अकेले पेड़ की तरह स्वतन्त्रता से जीना और भाइयों की तरह जंगल के पेड़ों की तरह जीना, यह हमारी तड़प है।''

नजीम हिकमत

प्रतिरोध के अंतिम दो महीने, जून और जुलाई 2013 जो न सिर्फ तुर्की के लिए अपितु पूरी दुनिया के लिए अद्वितीय और प्रेरणादायक थे, के बारे में अपनी भावनाएँ व्यक्त करना अत्यन्त कठिन है। ''तक्सिम हर जगह है ; प्रतिरोध हर जगह है'' अनेक भाषाओं और अवसरों पर बोले जाने वाला एक प्रसिद्ध नारा बन गया। पर्यावरणीय और नगरीय चेतना के साथ कई लोग इस्तांबुल के तक्सिम स्केवयर के बगल में स्थित गेजी पार्क के नगरीय विध्वंस के विरोध में एकत्रित हुए। हालांकि इनमें से कोई भी यह नहीं सोच रहा था कि ''दो या तीन पेड़ों'' का बचाव, मुक्ति और गरिमा के एक व्यापक आंदोलन का नेतृत्व करेगा।

फिर भी, यह दावा करना कि यह आंदोलन सिर्फ पार्क के विध्वंस के विरोध में एक प्रतिक्रिया था, कठिन है। अपितु यह प्रधानमंत्री द्वारा युवाओं और महिलाओं के निजी जीवन से सम्बन्धित बयानों और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और मानवाधिकारों पर प्रतिबंधों द्वारा उकसाया गया था। बिना चर्चा और विमर्श के रातोंरात पारित नये नियम जिन्होंने निवासियों को शहर के केन्द्र और कच्ची बस्तियों (गेकेकोण्डू) से, सामाजिक आवास और पुराने इलाके से विस्थापित कर दिया, के खिलाफ यह एक विरोध था। इस तरह का अधिकारिक विमर्श इन दो महीनों तक चलता रहा जिसने आम आदमी की व्यापक भागीदारी सुनिश्चित की। यह भागीदारी, पुलिस हस्तक्षेप जिसने विरोध को युद्ध स्थल में तब्दील कर दिया, के फलस्वरूप और गहरी हो गई। सरकार ने तक्सिम चौराहे पर आयोजित होने वाले 1 मई, 2013 के समारोह को चल रही सरकारी परियोजनाओं के मद्देनजर निरस्त कर दिया। एमेक मूवी थियेटर को बंद कर उसकी जगह शापिंग मॉल बनाने का विरोध कर रहे लोगों पर सरकार ने क्रूरता से हमला किया। ऐसा हश्र अतातुर्क सांस्कृतिक केन्द्र और म्यूअम्मर कराका थियेटर का भी हुआ यद्यपि इस्तांबुल को 2010 में यूरोपीय सांस्कृतिक राजधानी का विशेष दर्जा भी दिया गया था। सरकार ने कला के सभी पक्षों–अभिनेता, बजट, वेशभूषा, नाटकों और प्रदर्शन के मंचन के प्रति आक्रामक रूख अपनाया।

अनेक प्रकार के बाड़ों के खिलाफ नगरीय समानता का दावा करते हुए पेशेवर समूह एवं संघ, राजनैतिक मंच, पड़ौसी संघ सभी तक्सिम एकता, जो कई वर्षों से नगरीय समस्याओं के साथ संघर्ष कर रही थी, के बैनर के तले एक साथ एकजुट हुए। इन दिनों के दौरान विभिन्न वामपंथी, समाजवादी, कुर्द, अराजकतावादी और LGBT समूह, Kemalist लोग और अधिक व्यापक रूप से विभिन्न वर्गों और पीढ़ियों के सामान्य लोग परन्तु विशेष से ''एक्स/वाय पीढ़ी'' के युवा, सभी भावनाओं से परिपूर्ण और मस्ती में एक साथ चले।

शहर का अधिकार, शहर के केन्द्र का उपयोग करने तथा वहाँ तक पहुंच का अधिकार, जगह/स्थान के उत्पादन के निर्णय में भाग लेने का अधिकार, शहर को कला का एक नमूना बनाने में आत्मबोध के अधिकार को प्रकाशमान बनाने के लिए गेजी पार्क एक प्रकाश पुंज बन गया। प्रतिरोध सम्बन्धी शब्दावली का एक मुख्य शब्द Capulcu था, जिसका प्रयोग प्रधानमंत्री एरडोगान ने प्रदर्शनकारियों को ''लूटने वाले'' के रूप में जिक्र करने के लिए किया था। इस शब्द को प्रदर्शनकारियों ने पुनः हथिया लिया और इसे सकारात्मक अर्थ, वे लोग जो अपने अधिकारों, मनुष्य के रूप में अपनी गरिमा के लिये सभी प्रकार के दमन को करते हुए गर्व से लड़ते हैं, दिया। यह नागरिक विद्रोह दलगत राजनीति के परे जा कर सामूहिक प्रदर्शन और भाषा का स्थल बन गया है जिसने लोगों को बंद हॉल से निकाल कर देश भर के शहरों में पड़ौसी पार्क में ''एकता मंचों'' के लिए एकत्रित कर दिया है।

ऐसे माहौल में जहाँ तथाकथित ''सूचना चैनल'' केवल विचारधारा की पेशकश करते हैं, राजनैतिक कला, सोशल मीडिया द्वारा फैलाई जा रहे रचनात्मक हास्य से मजबूती पा कर उभरी है। इसने शक्ति की संरचनाओं को आश्चर्यचकित किया और उनकी राजनैतिक परम्पराओं और भण्डार को चुनौती दी। इन जंगी परन्तु कार्निवल जैसे दिनों के दौरान, कल्पना, कला और हास्य ने पारंपरिक स्थिति के बाहर आशा के नये नारों का निर्माण किया और वे पुनः हथियाई सड़कों की दीवारों पर लिखे गये।

छवियों, लोकप्रिय चरित्रों, शब्दों और सांस्कृतिक तत्वों की विस्तृत श्रृंखला ने विभिन्न प्रकार के समूहों, परन्तु सभी समान लोकतांत्रिक माँग को रखते हुए, को प्रतिबिंबित किया। 80 और 90 के दशक की पीढ़ियों के हास्यपूर्ण सांस्कृतिक भण्डार की ''असंतुलित बुद्धिमानी'' जिस पर अक्सर अराजनैतिक होने का आरोप लगता रहा, ने कलात्मक रूप से पुलिस की ''असंतुलित हिंसा'' जिसके कारण 6 लोगों की जान गई और सैंकड़ों घायल हुए और पन्द्रह लोगों ने अपनी आँखें गँवाई, का प्रतिरोध किया। प्रदर्शनकारियों ने स्वरचित Capulcu जुलूस के गीत गाये। लोकप्रिय टी. वी. श्रंखलाओं के अग्रणी अभिनेता जैसे मुहते सम, यूज्यिल और बेहजात सी प्रतिरोध में ''लोकप्रिय व्यक्ति'' बन गये। न सिर्फ तुर्की बल्कि दुनिया भर के कलाकारों जैसे पैट्टी स्मिथ, जोन बाएज और रोजर वाटर्स ने अपनी तस्वीरों, विडियों और कंसर्ट से प्रतिरोध का समर्थन किया है। शब्दों के हेरफेर से आंदोलन के नारों का निर्माण हुआः लोकप्रिय फिल्मों से (प्रतिरोध में शामिल होने वाली घरेलू महिलाओं का वर्णन करने के लिए ''वेन्डेटा के लिए v'' ''श्रीमती विल्दान के लिए v''; काम के पश्चात विरोध में भाग लेने वाले सफेद पोश कर्मचारियों के लिए ''दिन में क्लार्क केण्ट, रात में सुपर मैन'') लेकर गायकों (''जस्टिन बीबर'' ''जस्ट इन बाइबर/पेप्पर'' में बदल गया जो पुलिस द्वारा पेप्पर गैस के अत्यधिक प्रयोग से संदर्भित है), गानें "Everyday I'm shuffling" Everyday I'm capulling" में बदल गया और फुटबॉल और वाणिज्यिक नारे ''लोगों को जोड़ता नोविया'' ''लोगों को जोड़ता फासीवाद'' में बदल गया।

तक्सिम स्केयर में अतातुर्क सांस्कृतिक केन्द्र का बाह्य हिस्सा प्रतिरोध का ''सामान्य चेहरा'' बना दिया गया। ऐसा 1 मई के समारोह के चित्रों में दिखाई देता है। पार्क में

>>

कई अन्य कलाकृतियाँ भी थी जिसमें थियेटर, विभिन्न प्रकार के नृत्य मंचन, फिल्म और संगीत भी सम्मिलित थे। प्रतिरोध का सबसे विशिष्ट चिन्ह, दीवारों पर चित्रों में प्रयोग लाया हुआ, ''पेंगविन'' था जो हिंसात्मक पुलिस हमलों के समय के दौरान CNN तुर्क पर प्रसारित वृत्तचित्र को इंगित करता है। विरोध के दौरान आठ घंटे तक एक दम स्थिर और चुप रहने वाला ''द स्टेडिंग मैन'' (''ड्यूरानदम'') तैल्सिड मैन (तैल्सिड, पेट में पेपर गैस के प्रभाव को कम करने वाली दवा है) या फिर वूमन इन रेड (वह महिला जिसने शुरू के दिनों में पेपर स्प्रे का सामना किया था) के समान गेजी पार्क का हीरो था। ग्राफिक की सहायता से ये फेसबुक पर सामूहिक चिन्हों के रूप में प्रदर्शित हुए। द स्टेडिंग मैन जो असली में कोरियाग्राफर एरडेम गुंडुंज था, अतातुर्क सांस्कृतिक केन्द्र के सामने खड़ा हुआ और उसने सिर्फ खड़े रह कर एक नये प्रकार का प्रतिरोध किया। अन्य लोग पुलिस के सामने बड़ी गंभीरता से किताबें पढ़ते थे। विरोध का एक और अन्य महत्वपूर्ण प्रकार, पुनः प्रधानमंत्री के शब्दों का व्यंगात्मक फेर, इस बार जब उन्होंने आंदोलन के लिए ''बर्तन और भांडे, हमेशा वही आवाज'' कहा, के फलस्वरुप शहर के सभी कौनों मे बाल्कनियों से बर्तन भांडों को बजाने की आवाज निकाली गई। जब वातावरण शांत हो गया तो प्रदर्शनकारी सड़कों की सीढ़ियों को इन्द्रधनुषी रंगों में रंगने लगे।

संक्षिप्त में, तक्सिम चौक और गेजी पार्क में प्रदर्शन/विरोधों ने एक नये प्रकार के राजनीतिकरण, सामूहिक याद्दाश्त और पारंपरिक राजनीति के परे भाषा का प्रति–निधित्व किया। जैसा कि विद्वानों ने रेखांकित किया है लेकिन कई राजनेताओं ने उसका खण्डन किया कि ''सामान्य राजनीति'' द्वारा छिपाये गये अन्याय की स्थानिक संभावनाओं को प्रकट करने की क्षमता शहरी स्थान/जगह/स्पेस में है। सामाजिक विभाजन को दर्शाते हुए, कला हमारी चेतना की गहराई में चित्रों का प्रभाव छोड़ते हुए सार्वभौमिक एकता का निर्माण करती है। Capulcu की सामूहिक कला जो अब Chapulling के नाम से जानी जाती हैं, सड़कों की दीवारों से मिटाई जा सकती है परन्तु इसे गेजी प्रतिरोध के दर्शकों और प्रतिभागियों के दिलों दिमाग से मिटाना आसान नहीं होगा। हालांकि यह हत्या कर दिये गये व्यक्ति, ऐथेम सीरसुलुक, अब्दुल्ला कोमर्ट मेहमत आयुलितास, मेदनी यिल्डिन, अली इस्माइल कोर्कमज और अहमत ऐटेकन की हानि की क्षतिपूर्ति नहीं है, हम सड़कों पर पोते गये आशावादी नारे के साथ अंत करते हैं: ''कुछ भी दुबारा समान नहीं हो; अपने आँसू पोंछ डालो।'' ■

> भारत का प्रयोग : मूल आय अनुदानों में

गॉय स्टेन्डिंग, स्कूल ऑफ ओरियन्टल एण्ड अफ्रीकन स्टडीज, यू.के.

भूमण्डलीकरण से न केवल वृहद असमानता आई है बल्कि विश्व जनसंख्या में व्यापक आर्थिक अनिश्चितता भी आई है। सरकारें आर्थिक असुरक्षा को कम करने में प्रभावी विकास अथवा सामाजिक सुरक्षा प्रणाली अपनाने में असफल रही हैं। धन–प्रयोग, व्यवहार प्रयोग, चयनता, लक्ष्यता, सशर्तता व कार्यभाव की ओर उनका झुकाव रहा है। उद्धारक सार्वभौमिकतावाद की हमेशा बलि दी गई है।

इस संदर्भ में सार्वभौमिक बिना शर्त मूल आय अनुदान में कई हित रहे हैं। नामतः यह सुनिश्चित करने के लिए कि उनकी अल्प आय है सभी नागरिकों को नकदी स्थानांतरण करने के लिए कि उनकी अल्प आय है सभी नागरिकों को नकदी स्थानांतरण दिया गया जबकि पूरे वर्ष में सशर्त नगदी अंतरण प्रचलित हो चुका है तो बिना शर्त सार्वभौमिक विकल्प पर पर्याप्त रूप से विचार नहीं किया गया है। भारत में ऐसे आय अनुदान की प्रभावकता का प्रायोगिक अध्ययन करने के लिए यूनिसेफ द्वारा वित्तयोजित एक परियोजना 'सेवा' (स्वरोजगारित महिला संगठन) में योगदान दिया।

भारत में नकदी लाभों पर सार्वजनिक बहस विवादित रही है। एक ओर खाद्य सहायता के समर्थक है जो कि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा विधेयक जो अब संसद के समक्ष है में योजनानुसार जनसंख्या के 68 प्रतिशत को लोक वितरण प्रणाली प्रदान करने की इच्छा रखते हैं। आलोचकों का विश्वास है कि इससे भ्रष्टाचार बढ़ेगा, बड़ी लागत लगेगी, निम्न गुणवत्ता खाद्य मिलेगा एवं यह अस्थिर होगा। दूसरी ओर नकदी अंतरण के समर्थकों पर लोक सेवा को उखाड़ने व सामाजिक व्यय को कम करने का आरोप लगाया गया। वास्तविक समस्या यह है कि वर्तमान नीतियों से दो दशकों की उच्च आर्थिक विकास दर के बावजूद 350 मिलियन (35 करोड.) लोग, जनसंख्या का कुल 30 प्रतिशत इससे वंचित रहे।

इस संदर्भ में वर्ष 2011 में हमने सेवा के साथ समन्वयक के रूप में मूल आय अनुदान के प्रभाव के परीक्षण के लिए यूनिसेफ द्वारा वित्त पोषित दो प्रयोग आरम्भ किए। इसके परिणाम मई 30–31 (2013) को दिल्ली के एक सम्मेलन में प्रस्तुत किए गए जिसमें योजना आयोग के उपाध्यक्ष तथा ग्रामीण विकास मंत्री, जो नकदी अंतरण नीतियों के प्रभारी है ने भाग लिया। सोनिया गांधी के अनुरोध पर बाद में उन्हें एक निजी प्रस्तुतीकरण दिया गया।

राशि व्यक्तिगत रूप से शुरूआत में नकद भुगतान की गई तथा तीन माह पश्चात् बैंक अथवा सहकारी खाते में डाली गई। राष्ट्रीय व राज्य प्राधिकारियों ने सबक सीखा कि यदि उन्हें पूरे देश में प्रत्यक्ष व नकदी लाभ को फैलाना है तो उन्हें इसका अनुसरण करना होगा।

प्रयोगों में, ग्रामीणों को नकदी अनुदान के लिए खाद्य सहायता विकल्प की अनुमति नहीं दी गई थी। प्राप्तकर्ताओं पर कोई शर्त नहीं थोपी गई थी। जो शर्त लगाने के पक्ष में थे उन्होंने कहा वे यह विश्वास नहीं करते कि लोग वे करें जो उनके हित में हैं तथा जो नीति निर्माता जानते हैं कि क्या है?

प्रयोग के प्रारूपकारों को विश्वास है कि मूल आय अनुदान अच्छी सार्वजनिक सेवा व सामाजिक निवेश के साथ अनुकूल रूप से कार्य करेगा तथा यह कि वे इसे अच्छी तरह संचालित करेंगे। यदि इसे वंचित संगठन अर्थात् एक निकाय जो सदस्यों को एक साथ कार्य करने की क्षमता दे के माध्यम से कार्यान्वित किया जाए। मूल आय पर कई वर्षों से मेरी यह स्थिति रही है अर्थात् यह कि अभीष्टतम रूप से तभी कार्य करेगा यदि संवेदी का संस्थागत प्रतिनिधित्व हो, ताकि इस दावे का चयनित आधे गांवों में जहाँ 'सेवा' संचालित थी, जबकि अन्य आधे में जहां नहीं थी मे परीक्षण किया जा सके।

आलोचकों का दावा है कि नकदी लाभ फजूलखर्ची व मुद्रास्फीति बढ़ाने वाला होगा तथा श्रमिक आपूर्ति कम कर इससे कम वृद्धि होगी। समर्थकों का विश्वास है कि उनके पास उन्नत जीवन स्तरों तथा समुदाय आधारित आर्थिक विकास हेतु बाधाओं को दूर करने की क्षमता है।

कई जनसांख्यिकी, सामाजिक व आर्थिक गुणों पर एकत्रित आंकड़ों पर आधारभूत जनगणना से आरम्भ कर तथा इन्हीं पहलुओं को शामिल कर बाद में एक अंतरिम व अंतिम मूल्यांकन सर्वेक्षण कर हमने अठारह महीनों तक मूल आय अनुदान के प्रभाव का अध्ययन

> >

मूल आमदनी वाले परिवारों के बच्चों के स्कूल में प्रदर्शन में सुधार की संभावना ज्यादा रहती है, 2012

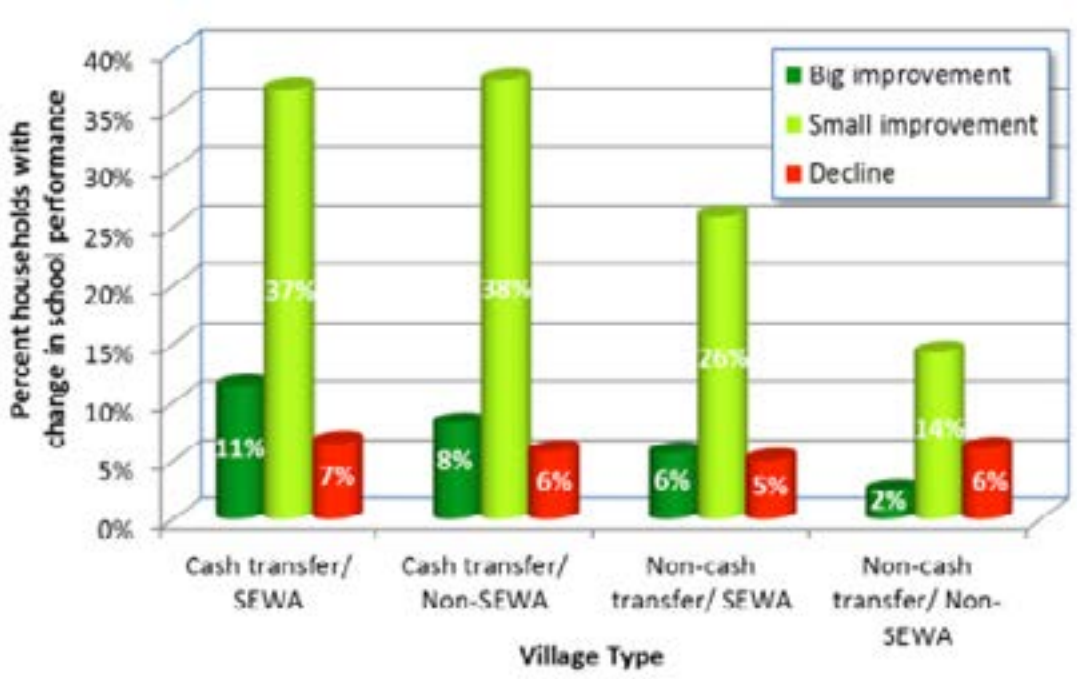

Figure 1

किया जिसमें हमने अनियत नियंत्रण परीक्षणों का प्रयोग किया जिससे मूल आय प्राप्त करने वाले गृहस्थियों व ग्रामीणों के परिणामों की 12 अन्य 'नियंत्रण' गांवों, जहां किसी ने मूल आय प्राप्त नहीं की से तुलना की गई। इसके अतिरिक्त अनुभवों के व्यक्तिगत व पारिवारिक लेखों का विवरण देते हुए एक स्वतंत्र दल द्वारा 80 से अधिक विस्तृत मामलों का अध्ययन किया।

हमारे पास करने के लिए काफी विश्लेषण है किंतु जैसा सम्मेलन ने दर्शाया कहानी बिल्कुल स्पष्ट है। कुछ निष्कर्षो का उल्लेख करने से पूर्व कुछ दावों में विरोधाभास देखा, अधिकतर ने अनुदान (चावल, गेहूँ, कैरोसिन व चीनी) को प्राथमिकता नही दी तथा मूल आय के अनुभव के परिणामस्वरूप अधिकतर ने अनुदान की बजाय नकदी को प्राथमिकता दी। ग्यारह परिणाम उल्लेखनीय हैं–

I. बहुत लोगों ने 'धन' से अपने घर की मरम्मत, शौचालय निर्माण, दीवार और छत ठीक कराने तथा मलेरिया जैसी गंभीर बीमारी से सावधानी बरतने में उपयोग किया।

II. पिछड़ी जाति एवं जनजाति के लोगों में 'पोषण' में तुलनात्मक विशेष सुधार हुआ। विशेषरूप से छोटे बच्चों के वजन बढ़ने में विशेष सुधार हुआ (विश्व स्वास्थ्य संगठन – आंकड़े) एवं इसी तरह कन्याओं में भी।

III. वित्तीय तरलता के पश्चात्, लोग राशन की दुकानों से बाजार जाने लगे। पूर्व प्रचलित राशन प्रणाली, सार्वजनिक वितरण पद्वति जिसमें खराब अनाज एवं कंकड मिला खाद्यान्न, से मुक्ति के बाद अब लोगों की पाचन क्रिया में विशेष सुधार हुआ इसलिए सरकार ने खाद्य सुरक्षा पद्वति को नियमित किया। इससे पोषित भोजन करने से लोगों के स्वास्थ्य में सुधार हुआ एवं मौसमी बीमारियों से मुक्ति मिली। जिससे दवा के सेवन से बचा जा सका विशेषकर निजी चिकित्सालयों से सामान्यजनों को मुक्ति मिली। सार्वजनिक सेवाओं में सुधार आवश्यक है।

IV. स्वास्थ्य में सुधार आने से, बच्चों के विद्यालयों में जाने की संख्या में आशातीत वृद्वि हुई यह परिणति है परिवार की सक्षमताओं में वृद्वि की जिससे अभिभावक बाल वाहिनी एवं जूते खरीदने पर खर्च कर पा रहे है। महत्वपूर्ण बात यह है कि परिवार स्वयं कार्य करने का बीड़ा उठा रहे हैं।

V. योजना के सकारात्मक परिणाम आने लगे हैं। विशेषकर कम आय वाले समुदाय में, महिलाओं में, विकलांगों में, तुलनात्मक प्रगति के लक्षण स्पष्ट दिख रहे हैं। अचानक उन सब लोगों को अपना सामान क्रय करने का, सौदा करने का साहस मिला क्योंकि उनके पास अपना धन क्रय करने को है। यूं 'सामाजिक नीति' में विकलांगों की उपेक्षा करना निदंनीय है।

VI. मूलभूत आर्थिक अनुदान से लघु कुटीर उद्योग धंधे लगने लगे, अच्छी नस्ल के बीज क्रय करने लगे– छोटी–छोटी दुकानें खुलने लगी, मरम्मत के औजार क्रय कर रोजगार मिलने लगे। इससे उत्पादन में वृद्वि होने लगी और आय में तुलनात्मक वृद्वि हुई। पैदावार में सकारात्मक प्रगति से पूर्व आश्रित लचीली योजना से मुक्ति मिली जिसमें भोज्य पदार्थों एवं अन्य सामान की आपूर्ति थी। यह सराहनीय तथ्य है कि स्थानीय खाद्यान्नों के उत्पादन में आशातीत वृद्वि होने लगी जिससे पूर्व सार्वजनिक वितरण प्रणाली ने अवरूद्व कर दिया था।

VII. शंकाओं के विपरीत, श्रम एवं कार्य को अधिक अनुदान प्राप्त होता है (चित्र 2)। परंतु बात बहुत स्पष्ट एवं छोटी है। इसे आकस्मिक मजदूरी श्रम से अधिक अपनी कृषि व व्यवसायिक गतिविधियों (स्व

> >

मूल आमदनी वाले परिवारों में काम के जरिये आमदनी बढ़ गयी, 2011–12

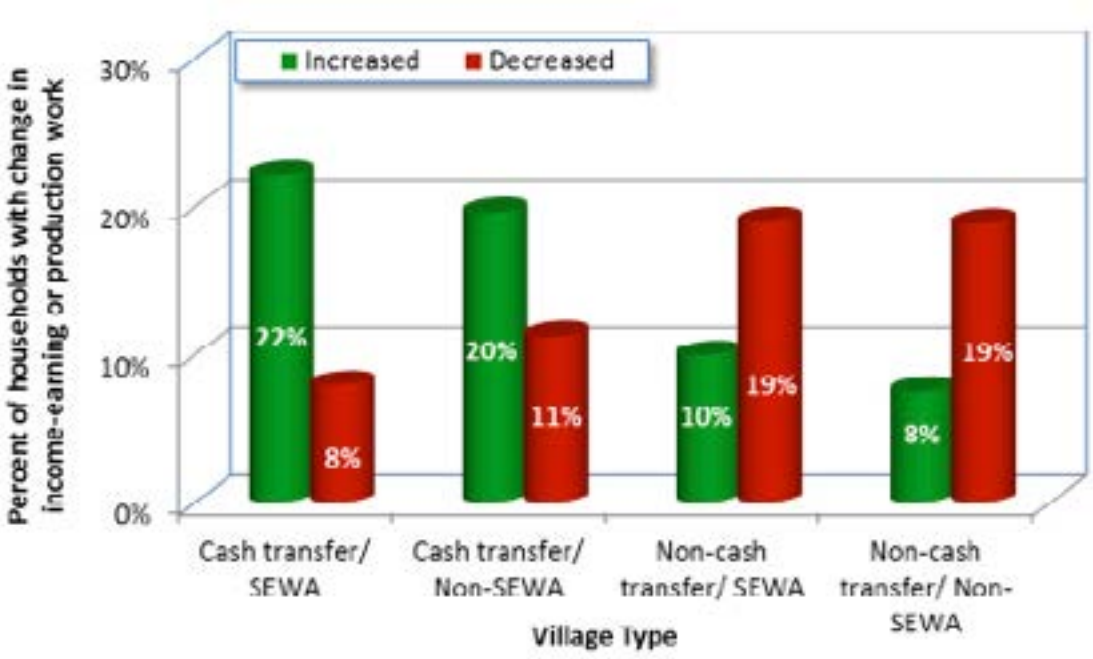

Figure 2

रोजगार) की ओर एक शिफ्ट कहा जा सकता है जिसमें प्रवसन की कठिनाईयां भी अपेक्षाकृत कम थीं। महिलाओं ने पुरुषों की तुलना में अधिक लाभ प्राप्त किया।

VIII बंधुआ श्रम (नौकर, ग्वाला) में यहां अप्रत्याशित कमी देखी गई। स्थानीय विकास और समतामूलक विकास पर इसका व्यापक सकारात्मक प्रभाव पडा।

IX उनमें अपनी मूलभूत आय के कारण ऋण लेने की संभावना कम हुई तथा अधिक ऋण लेने की संभावना कम हुई है। संभवतः एक कारण यह भी था कि उन्हें 5 प्रतिशत से अधिक की ब्याज दर पर अल्पकालिक उद्धेश्यों के लिए ऋण लेने की आवश्यकता कम थी। वास्तव में पूर्व–सर्वेक्षण के बारे में स्थानीय लोगों की शिकायत करने वाले साहूकार थे।

X निम्न–आय समुदायों में नकदी के महत्व को कोई भी अतिमूल्यांकित नहीं कर सकता। धन एक दुर्लभ व एकाधिकारवादी वस्तु है जिसके कारण साहूकारों व अधिकारियों को व्यापक शक्ति प्राप्त है। इन्हे दरकिनार करके भ्रष्टाचार का सामना किया जा सकता है। यद्यपि परिवार बहुत निर्धन थे फिर भी अनेक लोगों ने पैसों की व्यवस्था की और इस प्रकार बीमारी या मृत्यु के आने से उत्पन्न वित्तीय संकट में गहरा/बडा कर्ज लेने से बचते रहे।

XI इस नीति ने परिवारों और ग्रामीण समुदायों दोनों में रुपांतरणकारी परिवर्तन उत्पन्न किये। अशों के योग से समग्र अधिक व्यापक होता है। खाद्य सब्सिडी योजनाओं से भिन्न, जो कि आर्थिक व शक्ति संरचनाओं को प्रतिबंधित करती है, बी.पी.एल. कार्ड, राशन और अनेक सरकारी योजनाओं, जो कि अभी अस्तित्व में हैं, को भ्रष्ट वितरकों द्वारा अतिक्रमित करना, के स्थान पर 'मूलभूत आय अनुदान' ग्रामीणों को अपने जीवन पर अधिक नियंत्रण प्रदान करता है तथा उन्हें विकास केन्द्रित लाभ व लाभकारी हिस्सा भी उपलब्ध कराता है।

भारत में एक सार्वजनिक बहस के दौरान हमने यह दावा किया कि सार्वजतिक योजनाएं लक्षित योजनाओं की तुलना में अधिक महंगी हो सकती हैं। चाहे बी.पी.एल. कार्ड की साख कम करके या फिर अन्य किसी विधि द्वारा लक्ष्य निर्धारण को डिजाइन करना व उसे लागू करना महंगा होता है। चूंकि सभी लक्ष्य निर्धारण पद्धतियों में उच्च स्तरीय त्रुटियां हैं – मूल्यांकन सर्वेक्षण बताते हैं कि केवल एक सबसे गरीब अल्प संख्यक के पास बी.पी.एल. कार्ड था।

संक्षेप में, मूलभूत आय अनुदान 21वीं सदी की सामाजिक संरक्षण प्रणाली का एक महत्वपूर्ण भाग है। भारतीय सामाजिक नीति के लिए यह एक महत्वपूर्ण समय था। पुरानी शैली के धंधों को अस्वीकार कर देना चाहिए और एक नयी प्रगतिशील प्रणाली को निर्मित करना चाहिए। ■

> लेटिन अमरीका में गिरती असमानता : कितनी? कितनी चिरस्थायी?

जूलियाना मार्टिनेज फ्रेनजोनी, कोस्टा रीका विश्वविद्यालय, सदस्य, आई.एस.ए. की गरीबी, सामाजिक कल्याण और सामाजिक योजना की शोध समिति (**RC** 19) एवं **डियगो सांचेज–एनकोचिया,** आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, यू. के.

लैटिन अमेरिका में असमानता के परिवर्तित होते हुए प्रतिमान

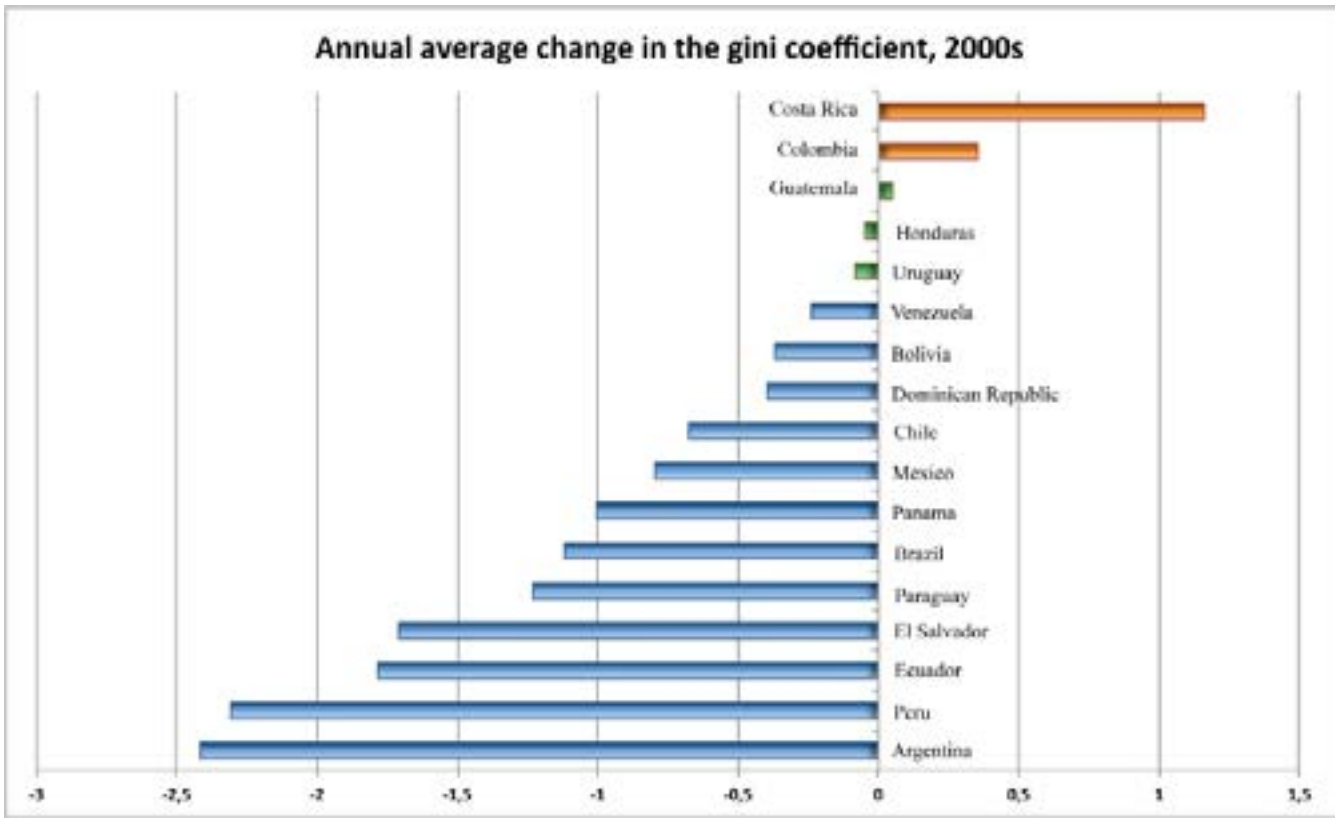

पारंपरिक रूप से लेटिन अमरीका दुनिया का सबसे असमान क्षेत्र रहा है और इसने असमानता के नकारात्मक परिणाम : अप्रकार्यात्मक राजनीति, शक्तिशाली कुलीन वर्ग, सामाजिक तनाव और गरीबी को कम करने में कठिनाइयों को भोगा है। पिछले एक दशक के दौरान, तथापि पहली बार, जब से असमानता के आंकड़े उपलब्ध हुए हैं सम्पूर्णता में इस क्षेत्र में और 18 में से 12 देशों में आय–असमानता में गिरावट देखी गई है।

इस अभूतपूर्व परिवर्तन के लिए क्या कारण हैं? राजनैतिक परिदृश्य में तथा–कथित ''लेफ्ट टर्न'' है : रूढ़िवादी सरकारों के नेतृत्व में लोकतांत्रिक बदलाव का अनुसरण करते हुए, क्षेत्र में सभी तरफ, प्रगतिशील दलों

> >

ने कार्यकारी सत्ता संभाली और 2000 के दशक के शुरूआत में विधायी बहुमत प्राप्त किया। इसमें कोई शक नहीं है कि वेनेजुएला से चिली तक की वामपंथी सरकारों ने वितरण को अपने नीतिगत एजेंडा के केन्द्र में रखा है परन्तु कोलम्बिया और मेक्सिको जैसे रूढ़िवादी प्रशासन में भी असमानता कम हुई है। चारों तरफ नवउदारवादी विचारों और सामाजिक नीति के लिए (अधिकतर गरीबी–विरोधी) औपचारिक रोजगार और संसाधन का सृजन करने के बाजार के अपूर्ण वादे के साथ व्यापक निराशा को प्रतिबिंबित करते हुए नीतिगत परिवर्तन हुए।

ज्यादातर नई सरकारें सकारात्मक बाह्य परिस्थितियों से लाभान्वित हुई हैं। अपने उत्पादन कौतुक में पैसा लगाने के लिए चीन के द्वारा काफी अधिक संसाधनों की खरीद से गैस तेल, सोया और माँस जैसी वस्तुओं की अंतर्राष्ट्रीय कीमतों में अप्रत्याशित वृद्धि हुई और लेटिन अमरीकी निर्यात तेजी से बढ़ा। 2000 और 2009 के मध्य, लेटिन अमरीका का चीन को निर्यात सात गुना बढ़ गया जिससे नये सामाजिक कार्यक्रमों के लिए डालर की उपलब्धता में वृद्धि हो गई।

राजकोषीय संसाधनों और वितरण में राज्य की सक्रिय भूमिका में विश्वास करने वाले दलों के संसर्ग से श्रम और सामाजिक नीति में सकारात्मक परिवर्तन आये। औसत और न्यूनतम मजदूरी के साथ औपचारिक रोजगार में वृद्धि हुई और सामाजिक कार्यक्रमों के कार्यक्षेत्र में विस्तार हुआ। 2008 और 2012 के मध्य पिछली शताब्दी के एक सबसे खराब वैश्विक संकट के मध्य भी दक्षिण अमरीका औपचारिक नौकरियों और सामाजिक खर्च की रक्षा करने में सफल हुआ।

सशर्त नकद हस्तांतरण कार्यक्रम जैसे कार्यक्रमों से नकद और बुनियादी सामाजिक सेवाओं में मौद्रिक हस्तांतरण द्वारा 100 मिलियन लोगों तक पहुँचा गया।

बेशक, उपलब्धियाँ सभी देशों में समान नहीं रही हैं। सिर्फ सामाजिक निवेश के संदर्भ में ही नहीं अपितु बड़े पैमाने पर रोजगार के सृजन और श्रम व्यवस्थाओं के औपचारिकरण को प्रोत्साहित कर सकारात्मक परिवर्तन लाने में कुछ देश अन्य से अधिक सफल हुए हैं। ब्राजील में रोजगार को औपचारिक बनाने और न्यूनतम मजदूरी को बढ़ाने की चेष्ठा के परिणाम शानदार रहे हैं : 2002 और 2012 के मध्य, मध्यम वर्ग में ब्राजिलियों की संख्या 69 मिलियन (कुल का 38 प्रतिशत) से 104 मिलियन (53 प्रतिशत) बढ़ गई। सामूहिक सौदेबाजी से आबादी की बड़ी संख्या को लाभ पहुँचाने में सफल होने वाला लेटिन अमरीका का एक मात्र देश उरूग्वे है। अन्य देशों ने सामाजिक नीतियों के विस्तारीकरण के संदर्भ में अच्छा कार्य किया है लेकिन कुल मिलाकर श्रम की स्थितियों को सुधारने में इतना अच्छा कार्य नहीं हुआ है। रोचक बात यह है कि ऐसा मिश्रित प्रदर्शन दोनों जिन्हें कुछ लोग ''अच्छी'' राजस्व जिम्मेदार लेफ्ट (जैसा कि चिली में) कहते हैं और उनमें भी जो बोलिविया जैसे ''बुरे'', लोकलुभावन लेफ्ट हैं, मे पाया गया।

हाल ही में सुधारों ने नये युग की बातों को जन्म दिया है और जब मेड्रिड से बीजिंग तक असमानता में वृद्धि हो रही है तब वे लेटिन अमरीका को बाकी दुनिया के लिए एक उदाहरण के रूप में पेश करना चाहते हैं। फिर भी हमें अत्यधिक आशावाद से सावध ाान रहना होगा और लेटिन अमरीका के हाल ही के मार्ग की महत्वपूर्ण कमियों की पहचान करनी होगी।

पहला, 2000 के दशक के दौरान श्रम एवं सामाजिक समावेश में होने वाले व्यापक लाभ पूरी तरह से मध्य अमरीका, जहाँ 80 मिलियन से अधिक लोग निवास करते हैं, नहीं पहुँचें : पनामा के उत्तर में स्थित देशों को अधिकांशत अमेरिका को अपने श्रम बल के निर्यात पर निर्भर रहना पड़ा और सिर्फ हिंसक समुदायों में अल सल्वाडोर में असमानता में उल्लेखनीय रूप से कमी आई (वहाँ भी अत्यधिक अमीर और अत्यधिक गरीब तक पहुँचने की सीमाओं के कारण आंकड़ों की विश्वसनीयता गंभीर संदेह में है) मध्य अमरीकी देश सरकारी राजस्व में वृद्धि, अभिजात जन के प्रभाव को कम करने और एक ही समय में अच्छी नौकरियां और उच्च गुणवत्ता वाली सामाजिक सेवाओं को विकसित करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

दूसरा, इस पूरे क्षेत्र में अमीर संसाधनों के बड़े हिस्से पर लगातार नियंत्रण रखते हैं और वे अपने हिस्से के उचित कर के भुगतान नहीं करते हैं। बोलिविया और अर्जेन्टीना में तेल और गैस निष्कर्षण से प्राप्त आय के कुछ अपवादों को छोड़कर, वितरण, कार्पोरेट लाभ को छुए बिना ही हुआ है। पारिवारिक सम्बन्धों के इर्द गिर्द निर्मित लेटिन अमरीकी फर्में पहले जैसी कंजूस बनी हुई हैं। ब्राजील में, अपेक्षाकृत रूप से अधिकतम अमीरों ने पिछले सालों में शायद अधिक खोया है परन्तु साओ पाउलो के उच्च स्तरीय प्रबन्धकर्ता औसतन रूप से 6,00,000 डालर प्रतिवर्ष कमाते हैं। यह न्यूयॉर्क या लंदन से भी कहीं ज्यादा है।

अंतिम और अत्यधिक विवेचित रूप में, अर्थव्यवस्था के परिवर्तन में समान प्रगति का अभाव है। एक सदी पहले की तरह, लेटिन अमरीका आज भी उच्च मूल्य जोड़ कर उत्पादित वस्तुओं के बदले में कच्चा माल बेचता है। यह विशेष रूप से चिंताजनक है न सिर्फ इसलिए क्योंकि यह औपचारिक रोजगार के सृजन को धीमा करता है और यह प्रगति को चीन पर निर्भर करता है परन्तु इसलिए भी कि यह निचोडनें वाली अर्थव्यवस्था पृथ्वी के भविष्य के लिए चुनौती प्रस्तुत करती है। ■

> अफ्रीका में चीन

चिंग क्वान ली, कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय, लॉस एंजिल्स, अमेरिका

चीनी व्यवस्थापक तथा निरीक्षक चाम्बीशी खान में अन्दर प्रभावशाली छेदन करते हुए।
चित्र स्वेन तोर्फीन द्वारा।

प्रिय माइकल, किटवी की तरफ से शुभकामनाएं।

मैं आपके पुराने महत्वपूर्ण क्षेत्र जाम्बिया के ताम्बे के क्षेत्र में नृवंशीय क्षेत्रीय कार्य कर रहा हूं। इस माह मैं नकाना की खान में हूं। यहां के स्थानीय निवासियों ने मुझे आश्वस्त किया है कि यह क्षेत्र एक समय 'रोहकाना' कहलाता था। रोहकाना वह खान क्षेत्र है जहां आपने 40 वर्ष पूर्व 'द कलर ऑफ क्लास' (वर्ग के विभिन्न पक्ष) के लिए अनुसंधान किया था। अब मैं इसी जगह पर अपने क्षेत्र अध्ययन की समाप्ति कर रहा हूं। जैसा कि आप जानते होंगे अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) के दबाव में जिम्बावे की सरकार ने बाध्य होकर 1997 के प्रारम्भ में ताम्बे की खानों का निजीकरण किया। नकाना खान को मुफलिरा के साथ जोड़कर उसे ग्लैनकोर को बेच दिया गया। ग्लैनकोर स्विट्जरलैण्ड में स्थापित एक शक्तिशाली एवं कुख्यात उपभोक्ता वस्तुओं को व्यापारिक प्रतिष्ठान है। खान का यह प्रतिष्ठान अब मोपानी कॉपर माइन्स कहलाता है।

इन खानों के नजदीक जो बंगले (आवास गृह) थे उनमें से शायद कोई ऐसा भी हो जिसमें आप रहे हों। अब यह बंगले प्रबंधकों, इंजीनियर्स एवं भू–वैज्ञानिकों के कार्यालय हैं। इन खानों की सीमाओं पर बहुमंजिला आवासीय क्षेत्र है जहां जनसंख्या का घनत्व बहुत अधिक है। इन क्षेत्रों में खान श्रमिक निवास करते हैं। इन क्षेत्रों में सामान्यतः बिजली नहीं है, पीने के पानी के लिए सामुदायिक नल है और खुली नालियां हैं। मेरा दिल उस समय भर आता है जब मैं बिना चप्पल पहने छोटे–छोटे बच्चों को सड़क किनारे बिजली के खम्भों के नीचे बैठे हुए देखता हूं जहाँ वे बियर की टूटी हुयी बोतलों से खेलते हैं। मुझे आश्चर्य नहीं होगा यदि मैं यह कहूं कि जब आपने जाम्बिया को छोड़ा था तब आपके सम्मुख बहुत आशावादी एवं विश्वासमूलक क्षण रहे होंगे। ठहराव के पिछले 4 दशकों में कहीं न कहीं पहले वाली स्थितियों से विपरीत पक्ष उभरकर आएं हैं। 2004 के आस–पास विश्व बाजार में जब ताम्बे की कीमतों में बहुत मजबूती से वृद्धि होना शुरू हुयी तब चीन और भारत में ताम्बे की मांग तीव्रता से बढ़ी और जाम्बिया के लोगों को यह लगा कि आर्थिक स्थितियां सकारात्मक दिशा में बदलेंगी। लेकिन अब तक बेकारी एवं गरीबी को व्यापक रूप में देखा जा सकता है।

आज से 5 वर्ष पूर्व मैंने जब जाम्बिया का दौरा प्रारम्भ किया ठीक उस समय चीनी पूंजीवाद भी अफ्रीका में प्रवेश कर रहा था। चीनी श्रम के एक विद्यार्थी के रूप में मेरा 20 साल का अनुभव है। मैं उन आलोचनात्मक प्रतिवेदनों से बहुत परेशान था जो पश्चिमी मीडिया में चीनी श्रमिकों के शोषण की कहानियों पर आधारित थे और कहीं न कहीं यह निष्कर्ष प्रस्तुत करते थे कि यह शोषण वास्तव में 'चीनी नव्य–उपनिवेशवाद' है। वास्तव में यहां पर ताम्बे के समूचे क्षेत्र में चीन का प्रभुत्व है। बैंक ऑफ चाइना की शाखाएँ यहां पर हैं, चीनी ठेकेदार सड़कों को बनाते हैं एवं उन्हें ठीक करते हैं। एक पतली चिड़िया के घोंसले के आकार जैसा नडोला स्टेडियम यहां चीन ने बनवाया है और जाम्बिया–चीन आर्थिक सहयोग जोन, जिसे हाल ही में गठित किया गया है, के माध्यम से इमारतों के रूप में आधारभूतीय संरचनाएं तेजी से उभार ले रही हैं। इन सबको चीन के राज्य के स्वामित्व वाली चम्बीशी ताम्बा खान एवं चम्बीशी तांबा गलन उद्योगों के द्वारा नियंत्रित किया जा रहा है।

लेकिन जल्दी ही यहां आने के उपरांत मैंने महसूस किया कि इस समूचे तांबा क्षेत्र में

>>

विस्तार ले रही अंतराष्ट्रीय पूंजी की प्रणाली में चीन की उपस्थिति तो केवल एक भाग है यहां सबसे बड़ा खनन उद्योग कौनकोला कॉपर माइन्स है जो कि लंदन के स्टॉक एक्सचेंज में अधिसूचित वह बहुराष्ट्रीय संगठन है जो भारतीय है और जिसे वेदांता के नाम से जाना जाता है। विश्व के सबसे बड़े खनन संघों में से एक ब्राजील का वेले है जिसे हाल में लुबाम्बे खनन ने अधिगृहीत किया है। दक्षिण अफ्रीका की पहली बड़ी खनन कंपनी कनशांसी में खुले क्षेत्र में खनन कर रही है और ये सब बेतहाशा लाभ अर्जित कर रही हैं। इनमें स्विट्जरलैंड के नियंत्रण वाली मोपानी कंपनी भी सम्मिलित हैं। अब यह समझना बहुत आसान है कि तांबे की खानों के इस समूचे क्षेत्र का निजीकरण कर इसे तुलनात्मक समाजशास्त्र से सम्बन्धित अध्ययन के लिए एक स्वाभाविक आकर्षण का केन्द्र बना दिया गया है। मेरे सामने एक प्रश्न आया कि, अफ्रीका में चीनी पूंजी की विशिष्टता क्या है? मैं आशा कर रहा हूं कि यहां चीनी एवं गैर–चीनी उद्योगों के मध्य एवं निर्माण तथा खनन उद्योगों के मध्य मुझे दोहरी तुलना के अवसर प्राप्त होंगे जिसके आधार पर मैं चीनी उद्योगों से सम्बन्धित हितों, उनकी क्षमताओं एवं उनके व्यवहारों/कार्य–प्रणालियों को जान सकूंगा जो उन्हें साधारण 'पूंजीपति' की अपेक्षा विशिष्ट रूप से 'चीनी' बनाती हैं।

इस खनन क्षेत्र में विभिन्न माध्यमों से हुए प्रवेश और उनकी तुलना यह दर्शाती है कि पिछले 40 वर्षों में जाम्बिया के राजनीतिक अर्थवाद में महत्वपूर्ण परिवर्तन आए हैं जो हमारी अध्ययन परियोजनाओं को पृथक करते हैं। तब से अब तक विदेशी पूंजी इस क्षेत्र में अत्यंत शक्तिशाली भूमिका निभा रही है। मैं उनके बारे में यह सोचता हूं कि यह उद्योग एक सुनिर्धारित क्षेत्र के महाराजा हैं जिन्होंने चारों तरफ अपनी सुरक्षा के जाल फैला रखे हैं और वे उद्योगों की सूचनाओं पर अपने स्वामित्व का दावा करते हैं। अपने निजी संपर्कों के माध्यम से एक पूर्णकालिक कर्मचारी के रूप में आप इस विश्व में प्रवेश कर सकते हैं। इसके साथ ही आप इन उद्योगों की अनुसंधान इकाइयों, मानव संसाधन निकायों में भी प्रवेश पा सकते हैं। ये निकाय इस समय के दो खनन उद्योगों–एंग्लों अमेरिकन संगठन एवं रोअन सिलेक्शन ट्रस्ट की जरूरतों को पूरा करते हैं। मैंने भी इसी माध्यम से प्रवेश करने की कोशिश की। लेकिन मेरा नौकरी पाने से सम्बन्धित साक्षात्कार जो कि चीनी क्षेत्र में चीन की कम्यूनिस्ट पार्टी के सचिव ने लिया, बड़े खतरनाक संदर्भों के साथ समाप्त हुआ। पार्टी के इस नेता ने मुझे 21वीं शताब्दी के एक प्रबंधक के रूप में क्या करना चाहिए, की अपेक्षाओं के साथ सवाल पूछे थे परंतु 'गुगल' पर खोज करते हुए उन्होंने चीन एवं जाम्बिया के श्रमिक विरोध प्रदर्शनों से सम्बन्धित मेरे अध्ययनों को देखा। उन्होंने मुझे एक लम्बा भाषण देते हुए उस वैश्विक विमर्श के बारे में बताया जिसने अफ्रीका में चीन के

जाम्बिया के श्रमिक अपने चीनी अधिकारी के समक्ष। चित्र स्वेन तोर्फीन द्वारा।

हितों को चोट पहुंचायी है और यह एक ऐसा नवीन उदाहरण है जो साम्राज्यवादी पश्चिम के द्वारा चीन को नीचा दिखाने के संदर्भ में दिया जाता है। इसके बाद उन्होंने मुझे वहां से जाने के लिए कहा। मेरे पास अन्य कोई विकल्प नहीं था कि मैं दूसरे पक्ष के साथ जाकर मिल जाऊं और यह मेरे लिए एक दृष्टि से उपयोगी भी साबित हुआ क्योंकि उस क्षेत्र में काम करने वाले सभी श्रमिक मुझसे खुश थे। जाम्बिया के विपक्षी राजनीतिज्ञों ने जो मेरे दोस्त बन गए थे, मेरे उन लेखों में रूचि ली जो जाम्बिया में चीन की उपस्थिति को लेकर लिखे गए थे। मुझे नौकरी न मिलने पर सहानुभूति जताते हुए उन्होंने कहा कि जब हम सत्ता में आऐंगे तब तक इंतजार करो। मैंने वह इंतजार किया। 2011 के चुनाव में विपक्षी दल की जीत हुयी और जाम्बिया गणतंत्र के उपराष्ट्रपति के रूप में उन्होंने मुझे मुख्य खानों का सी.ई.ओ. (CEO) बना दिया और जाम्बिया की सरकार में एक सलाहकार के रूप में उन्होंने मुझे स्थान दिया।

यह परिवर्तन संभवतः अफ्रीकन राज्य एवं बहुराष्ट्रीय खानों के मध्य विकसित हुए महत्वपूर्ण पुनः सम्बंधों को हतोत्साहित करता है। यह मुझे याद दिलाता है कि जाम्बिया राज्य के अभिकरण ों एवं हितों को गंभीरता से लेने की आवश्यकता है, इन्हें शक्तिहीन मानने की आवश्यकता नहीं है। 'द कलर ऑफ क्लास' में फ्रेंच फैनन के विचारों से प्रभावित होकर आपने यह तर्क दिया था कि बिना संरचनात्मक आर्थिक परिवर्तनों के मिलने वाली राजनीतिक स्वाधीनता एक प्रभावी राष्ट्रीय पूंजीपति को अस्तित्व में नहीं लाती है। लेकिन आज जाम्बिया के प्रथम गणतंत्र में स्थापित हुए एक दलीय शासन को प्रतियोगी बहुदलीय व्यवस्था ने 1991 से प्रतिस्थापित कर दिया। यह संयोग है कि विश्व बैंक एवं अंतराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) के द्वारा थोपे गये निजीकरण एवं संरचनात्मक समायोजन के कार्यक्रम भी ठीक उसी समय प्रारम्भ हुए थे। नव्य उदारवाद के 20 वर्षों में जनप्रतिरोध एवं असंतोष तीव्र हुए हैं क्योंकि निर्धनता एवं असमानता का तीव्र विस्तार हुआ है और इसलिए राजनीतिक दल बाध्य हैं कि वे विदेशी स्वामित्व वाली खानों के प्रति कड़ा रूख अपनाएं। हाल के वर्षों में खदान कंपनियों से नाराज एवं उनकी कार्यप्रणालियों से खफा होकर जाम्बिया की सरकार ने अप्रत्याशित लाभ से सम्बद्ध कर को लागू किया, हालांकि बाद में उसे समाप्त कर दिया गया। इसके साथ ही खानों को निजी स्वामित्व में देने वाले विकासमूलक समझौतों को एक पक्षीय निर्णय लेकर निरस्त कर दिया गया।

खनन से प्राप्त होने वाली धातुओं की रायल्टी की दर दोगुनी कर दी गई और अब प्रविधि विशेषज्ञों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है कि वे खानों के अंदर रासायनिक प्रशिक्षण की अनवरत ऑडिट करें। मैं अपने अनुसंधान को राज्य के इन प्रयासों के एक हिस्से के अन्तर्गत देखता हूं। राज्य का यह प्रयास वित्तीय एवं समाजशास्त्रीय दृष्टि से खानों के संदर्भ में नितान्त वैध है। हालांकि राजनेताओं के लिए यह आसान है कि वे इन प्रयासों को 'संसाधन राष्ट्रवाद' की लहर की संज्ञा दे। यह एक ऐसा राष्ट्रवाद है जिसे खानों से मिलने वाली धन राशि के आधार पर राजनीतिक समर्थन सुनिश्चित किया जाता है। इससे राज्य की क्षमता में वृद्धि होती है जो विकास को तीव्र करती है। जाम्बिया की सरकार के साथ और इसके अंदर कार्य करना इन सब पक्षों को तत्काल परंतु कहीं–कहीं पर क्षोभ भरी सकारात्मक अनुभूति प्रदान करता है।

चीनी एवं गैर–चीनी विदेशी निवेशक इस नए अफ्रीकन यथार्थ से किस प्रकार मुकाबला करेंगे एवं क्या इसका विकल्प खोजेंगे? मुझे इस विषय पर एक पुस्तक लिखनी होगी न कि इन परिवर्तनों की सुखद अनुभूति पर एक आलेख। भविष्य के वैश्विक विमर्श हेतु केवल यह एक प्रारम्भ है। ■

> स्थायी लहरें :
एक आधुनिक नाविक का जीवन और कार्य

हैलेन सैम्पसन, कार्डिफ विश्वविद्यालय, ब्रिटेन एवं कार्य के समाजशास्त्र पर आई.एस.ए. की अनुसंधान समिति (**RC 30**) के बोर्ड की सदस्य

फिलीपीन्स का नाविक, मिगुएल, मैक्सिको के जलाने वाले सूर्य में अन्तहीन प्रतीक्षा करते हुए। चित्र हैलेन सैम्पसन द्वारा।

एक नाविक जहाज के पीछे की छड़ पर बैठा है। गर्म मैक्सिकों उस पर सूरज की किरणें बरसा रहा है। यह इतना भीषण है कि हवा इसे भड़काती प्रतीत होती है। नाविक एक वी.एच.एफ. रेडियों के साथ अपने घाट स्थान पर निर्देश पाने का इंतजार कर रहा है। वह वहाँ दो घंटे से है परंतु वह दूर जा नहीं सकता। वह छाया नहीं तलाश सकता और वहाँ पीने के लिए भी कुछ नहीं है। वह नहीं जानता कि उसे कितना इंतजार करना पड़ेगा। जहाज एक टैंकर है, जिसने मैक्सिकों में एक बंदरगाह पर लंगर डाला हुआ है और बहुत विलम्ब हो गया है। पायलट बोर्ड पर खुले समुद्र में पोत के दिशानिर्देशन हेतु इंतजार कर रहा है। कप्तान और निर्देशन अधिकारी भी पुल पर हैं। फिर भी अभी तक कुछ नहीं हुआ। एक भीतरी पोत बंदरगाह के दायरे में स्थित हो गया है और जहाज रवाना होने के लिए अनुमति का इंतजार कर रहा है। नाविक का गला प्यासा है, वह थक गया है और वह दुःखी भी है परंतु वह शिकायत नहीं कर सकता। मैं इस नाविक से कार्डिफ विश्वविद्यालय में स्थित नाविक अंतराष्ट्रीय शोध केन्द्र (SIRC) में 'समुंद्र में जहाजों पर सवार'' विषय पर अध्ययन, जिसे ब्रिटेन के आर्थिक

> >

व सामाजिक अनुसंधान परिषद द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त थी, में सहभागी अवलोकन के दौरान मिला था। उसका नाम मिगुएल[2] था और मैं उसके साथ था और वह अपने साथी चालक दल के सदस्यों के साथ जापान में निर्मित 20 वर्ष पुराने टैंकर पर सवार था। यह टैंकर आधुनिक मानकों वाले 40,500 भार टन वाले टैंकर से तुलनात्मक रूप से छोटा था। इसकी कुल लम्बाई 179 मी. और चौड़ाई 30 मी. थी। बोर्ड पर सभी नाविक पुरूष थे जोकि पांच देशों से सम्बन्धित थे। अधिकारीगण क्रोएशियाई, पाकिस्तानी और बांग्लादेशी थे। 'उच्च श्रेणी' के नाविक फिलीपींस से थे जबकि 'तकनीकी सहायक' टर्की से थे। मिगुएल विशिष्ट योग्यताओं वाला एक फिलीपीनों नाविक था। जैसा कि बोर्ड पर उसे दिये गए स्थान से ज्ञात होता है परंतु वह निम्नतम श्रेणी में नहीं था, जो एक 'साधारण नाविक' या एक 'अयोग्य आदमी' को दी जाती थी। मिगुएल और उसके फिलीपीनों साथी एक एजेंसी, जो जहाज के प्रबंधकों को नाविक उपलब्ध कराती थी, द्वारा 9 माह के लिए संविदा पर नियुक्त किए गए थे। यदि उन्होंने शिकायत की तो उन्हें घर वापिस भेज दिया जायेगा। उन्हें डर था कि यदि उन्हें घर भेज दिया गया तो पूरे मनीला में नाविकों के एजेंट द्वारा उनका नाम काली सूची में डाल दिया जायेगा अथवा उन्हें प्रतिबंधित कर दिया जायेगा और वे दोबारा कभी समुन्द्र में काम नहीं कर सकेंगे। ऐसे में वह जो नया घर अपने परिवार के लिए बना रहा था उसे पूरा नहीं कर पायेगा। वह अपने माता–पिता को स्वास्थ्य सुविधाएं भी उपलब्ध कराने योग्य नहीं रहेगा, साथ ही वह जैसी शिक्षा अपने बच्चों को देना चहाता हैं, उन्हें नहीं दे पायेगा। उसके चचेरे भाई–बहन, चाचा/ताऊ व चाची/तायी सभी उसके द्वारा भेजी गयी रकम पर आश्रित थे और स्थल पर ऐसे अवसर भी नहीं थे जिनसे वह उतना कमा पाता जितना समुद्र से कमाता था। एक नाविक का जीवन पूर्णतः काम पर आश्रित था। निरीक्षण अधिकारी संविदानुसार एक सप्ताह में सात दिन काम करते थे। जैसा कि एक नाविक ने बताया, 'मेरा काम बहुत ज्यादा उबाऊ और कठोर श्रम वाला है मुझे बोर्ड पर 365 दिनों में प्रतिदिन काम, काम और काम करना पड़ता है'। कभी–कभी जब जहाज बंदरगाह से दूर होता है, नाविक जिन्हें उस समय निरीक्षण का कार्य नहीं करना है, उन्हें तब भी रविवार की छुट्टी/अवकाश की अनुमति नहीं थी। परंतु कुछ जहाजों पर सींक पर मांस भूनने की व्यवस्था हो सकती है और अनेक बार केवल कुछ घंटों के विश्राम के अलावा रविवार को कुछ विशेष नहीं होता। बंदरगाह पर काम के बीच न ही दिन का समय और न ही सप्ताह कोई विशेष दिन अवरोध डाल सकता है। यदि जहाज नियमित रूप से चलता है तो उसका लाभ केवल इसके प्रबंधकों को मिलता है। एक गुणवत्तामूलक जहाज को बंदरगाह पर आने–जाने में कुछ ही घंटे लगते हैं, वह सामान को इतनी तेजी से चढ़ाता और उतारता है कि नाविकों को किनारा छोड़ने का समय भी मुश्किल से मिलता है। अनेक लोगों ने जहाज को एक जेल के रूप में वर्णित किया है परन्तु यह एक ऐसी जेल है, जहां कमाई होती है और विकासशील देशों में ऐसे नाविकों की पूर्ति सदैव तैयार रहती है जो कि प्रतिष्ठित अंतराष्ट्रीय कंपनियों के साथ नियमित रूप से काम करने के बदले वित्तीय लाभ प्राप्त करने के लिए अपने पारिवारिक जीवन, अपने मित्रों और अपनी खुद की खुशियों को त्यागने हेतु तैयार रहते हैं। जैसा कि एक नाविक ने बताया ''जहाज पर जीवन बहुत एकांतवादी होता हैं, मैं अपने बच्चों की कमी अनुभव करता हूं, जहाज पर काम करना बहुत–बहुत कठिन है।''

किंतु अनेक नाविकों को समुद्र में काम करने की अब भी भारी कीमत चुकानी पड़ती है। समुद्री यात्रा एक जोखिमपूर्ण व्यवसाय है। नवम्बर, 2011 में, उत्तरी वेल्स के समुद्री किनारे पर एक छोटा मालवाहक पोत खराब मौसम के कारण दो भागों में टूट गया जिसके कारण 8 में से 6 नाविक जो इस जहाज पर सवार थे, डूब गये। इनमें से एक नाविक जो बच गया था, ने बताया कि किस तरह से 'यह जहाज बीच में से और दांये हिस्से से टूटना शुरू हुआ। मैंने इसे अपनी आँखों से देखा और ऐसी स्थिति में किसी को भी बचाना असंभव था।[3]'' यह कोई असामान्य बात नहीं है। 2010 के लगभग प्रत्येक 670 जहाजों में से एक जहाज गुम हो गया है। इसमें बहुत सारी जोखिम है। जहाज पर काम करने की प्रकृति अनेक जोखिमों से भरी है, पीठ में चोट का खतरा, अंगुलियों का टूट जाना, हड्डियों का टूटना, आंख की चोट, सामान उतारने एवं भारी मशीनों के चढ़ाने व उतारने के समय जोखिम एवं अनेक खतरनाक गैस तथा आग की संभावनाओं से जुड़े खतरे कार्य की प्रकृति के भाग हैं। इसके साथ ही नाविकों का मानसिक स्वास्थ्य भी जोखिमों से भरा हुआ है क्योंकि ये नाविक महीनों तक एक ही जहाज में यात्रा करते रहते हैं। ये नाविक अन्य राष्ट्रीयताओं से जुड़े हुए यात्रिओं एवं नाविकों के साथ कार्य करते हुए संचार हेतु दूसरी भाषा (सामान्यतः अंग्रेजी) का प्रयोग करते हैं। इनका अपने परिवारों के साथ नियमित संपर्क नहीं है। इसके साथ–साथ ऐसा बहुत कम होता है कि वे अपने प्रबंधकों की नजरों से बच पाएं। कठोर संस्तरण भी समुद्री जीवन का एक प्रभावी हिस्सा है। दिन और रात काम करते समय यहां तक कि अवकाश के दौरान भी यह संस्तरण सक्रिय रहता हैं इससे बचने का कोई रास्ता नहीं है परिणामस्वरूप वे किसी भी समय कुछ भी राहत महसूस नहीं करते। ■

1. देखें सैम्पसन, एच. (2013) 'इंटरनेशनल सीफारॅर्स एंड ट्रांसनेशल्सिम इन द ट्वंटी–फर्स्ट सेंचुरी', मैनचेस्टर : मैनचेस्टर यूनीवर्सिटी प्रेस।

2. नाविक की पहचान को गोपनीय बनाए रखने के लिए मिगुएल नामक एक छद्म नाम का प्रयोग किया है जिसने हमारे अनुसंधान में सहभागिता की थी।

3. बी.बी.सी. समाचार, 6 जनवरी, 2012 को रोबोट सबमैरीन के द्वारा स्वानलैण्ड जहाज के टूटनें की घटना का परीक्षण।

> प्यूर्टो रिको :
नरसंहार का एक द्वीप?

जार्ज एल. गिओवनेती, प्यूर्टो रिको विश्वविद्यालय, सैन जुआन, प्यूर्टो रिको

प्यूर्टो रिको की शैली का नरसंहार – 4 व्यक्तियों की गोली मारकर हत्या।

प्यूर्टो रिको में 2012 में नरसंहार की 10 घटनाएं हुईं। मई, 2013 तक 3.7 लाख की जनसंख्या वाले इस अमेरिकी कैरेबियन कब्जे वाले क्षेत्र में कुल 6 हत्याकांड की घटनाएं मीडिया में दर्ज हुई।

जबकि वर्ष 2011 में प्यूर्टो रिको ने संयुक्त राष्ट्र की 'ग्लोबल स्टडी ऑफ होमीसाइड' रिपोर्ट में अशोभनीय स्थान प्राप्त किया और इसकी हत्या दर न्यूयार्क टाइम्स की सुर्खियाँ बनी। सोलह महीने में सोलह हत्याकांड की घटनाएं हुयी पर तथ्य यह है कि ये घटनाएं अन्तराष्ट्रीय समुदाय का ध्यानाकर्षण का केन्द्र नहीं बन पायी। मैं इस द्वीप की अंतराष्ट्रीय स्तर पर पहचान को स्थापित करने के लिए हिंसा के आंकड़ों की वकालत नहीं कर रहा हूं। मैं चिंतित हूं क्योंकि कोलोरोडो के एक सिनेमाघर में हुए एक ही हत्याकांड को समाचारों में अपेक्षाकृत अधिक स्थान मिला जबकि महीनों से हत्याकांड की घटनाओं का सामना कर रहे एक द्वीप की उपेक्षा की गई।

यहाँ तक कि वैश्विक समाचार नेटवर्क द्वारा भी हिंसा की घटनाओं पर कम ध्यान दिया गया और प्यूर्टो रिको में घटनाओं के पैटर्न इसलिए कभी 'ब्रेकिंग न्यूज' नहीं बन पाये। उनका ध्यान घटना पर केवल एक बार और विशेषतः पश्चिम की घटनाओं पर ही जाता है शेष पर नहीं। परन्तु दूसरा कारण है कि क्यों हत्याकांड का चौंकाने वाला यह सिलसिला समाचार संगठनों या समाजशास्त्रियों का ध्यान आकर्षित नहीं कर पाया या हत्याकांड के आंकड़े व इसका नामकरण क्या हो सकता है? प्यूर्टो रिको के मीडिया ने तीन घातक पीड़ितों की हिंसक घटना को हत्याकांड का नाम दिया।

स्थानीय स्तर पर, उनके द्वारा तीसरे पीड़ित तक पहुंचने के बाद हत्याकांड के नामकरण की प्रक्रिया अविवादित प्रतीत होती है। कथित रूप से यह पुलिस द्वारा इन घटनाओं को वर्गीकृत करने हेतु प्रयुक्त किया गया उपाय है और अभी तक पुलिस अधीक्षक हत्यांकाड शब्द का प्रयोग किये बिना 'एक घटना जिसमें कई पीड़ित है, को

> >

चुनता है, जबकि स्थानीय अपराधशास्त्री उसकी भर्त्सना करते हैं। एक अपराधिक न्यायिक प्रोफेसर द्वारा, प्रथा या प्रतिमानों के कारण, तीन या अधिक पीड़ितों से सम्बन्धित मामलों में इस अवधारणा के प्रयोग को उचित ठहराया गया।

परन्तु एक वैश्विक तुलनात्मक ढाँचें के भीतर या जब प्यूर्टो रिको समाचार मीडिया कहीं ''हत्याकांड'' की घटना को प्रस्तुत करता है तो इस शब्द का स्थानीय प्रयोग समस्या उत्पन्न कर सकता है। उदाहरण के लिए, प्यूर्टो रिको के समाचार पत्रों ने गुणात्मक रूप से भिन्न दो घटनाओं के लिए मुख पृष्ठ पर बड़े–बड़े अक्षरों में 'हत्याकांड' शीर्षक को छापा–एक घटना में एक स्थानीय निवासी ने कार–से–कार पर गोलबारी के दौरान 4 व्यक्तियों की हत्या की थी और दूसरी घटना में एक अंतरराष्ट्रीय व्यक्ति ऐन्डर्स ब्रेविक्स ने नार्वे में 69 व्यक्तियों की हत्या की थी। अतः स्पष्ट है कि हिंसा की विभिन्न प्रकार की घटनाओं को एक ही नाम से सम्बोधित करना, दोनों घटनाओं के प्रति हमारी समझ को और सामान्य रूप से हिंसा की घटनाओं को समझने में मुश्किल पैदा करता है।

जैक्स सैमलिन मानते हैं कि समाजशास्त्री बहुत लंबे समय से अध्ययन के इस क्षेत्र की उपेक्षा करते आये हैं, उन्होंने हत्याकांड पर लेखन की प्रक्रिया को इतिहासकारों पर छोड़ रखा है। वास्तव में, इतिहासकारों और समाजवैज्ञानिकों ने भी सामूहिक हिंसा को समझाने का अत्यधिक प्रयास किया है परंतु उन्होंने जातिगत संहारो (जीनोसाइड) पर अधिक बल दिया है। समाजशास्त्रीय साहित्य में चार्ल्स टिली को सम्मिलित किया जाता है जिन्होंने सामूहिक हिंसा के विविध स्वरूपों का मूल्यांकन किया परंतु हत्याकांड की अवधारणा को बिना स्पष्ट किए हुए। वोल्फगाँग सॉफस्की एवं सैमलिन दोनों ने घटित हुए हत्याकांडों के विशिष्ट घटकों को रेखांकित करने का प्रयास किया है और बाद में इसे 'एक ऐसी क्रिया जो अक्सर सामूहिक होती है और जिसका लक्ष्य गैर–यौद्धाओं को नष्ट करना/मारना होता है' के रूप में परिभाषित किया। फिर भी किसी ने यह स्पष्ट नहीं किया कि कितने पीड़ितों वाली घटना को हत्याकांड का नाम दिया जा सकता हैं। एक परिभाषा जो ग्वाटेमाला मानव अधिकार आयोग द्वारा दी गई 'तीन या अधिक' व्यक्तियों के पीड़ित होने पर उसे हत्याकांड कहा जाता है, परन्तु तभी जब उसमें अन्य कारक या विशेषताएं भी सम्मिलित हो (अर्थात् विपक्ष या विरोधी को नष्ट करने का इरादा, आतंक पैदा करना, पीड़ितों के साथ क्रूर और अपमानजनक व्यवहार करना तथा संगठित अपराध इत्यादि)।

हम अभी भी वहीं खड़े है जहाँ पहले थे जब तक यह तय करने में सक्षम नहीं हो जाते कि प्यूर्टो रिको में हुई तीन हत्याएं वास्तव में हत्याकांड है या नहीं। उपरोक्त परिभाषा में सम्मिलित तत्वों से स्पष्ट है और साथ ही यह एक तथ्य भी है कि सैमलिन हत्याकांड को जातिगत संहार के एक भाग के रूप में या उसके एक माध्यम के रूप में समझाते प्रतीत होते हैं (जातिगत संहार में समूल उन्मूलन के तत्व शामिल होते हैं), जो हत्याकांडों के हमारे विश्लेषणात्मक उपागम पर तथा उनके अपराधियों–जिन्होंने प्यूर्टो रिको में तीन व्यक्तियों की हत्या की हो या कहीं और दर्जनों की हत्या की हो–पर सवाल खड़ा करते हैं। क्या विरोधी दवा तस्कर गिरोहों के द्वारा कार–से–कार पर एक मशीनगन से तीव्र आक्रमण अपमानजनक श्रेणी में आता है? क्या ब्रेविक का मुख्य इरादा नार्वे लेबर पार्टी के समस्त सदस्यों का उन्मूलन करना था? क्या एडम लान्जा का लक्ष्य कनेक्टिकट के सेंडी हूक प्राथमिक स्कूल में एक विशिष्ट समूह (नृजातीय या अन्यथा) का उन्मूलन करना था?

समाजशास्त्रियों के रूप में हमें निश्चित रूप से व्यापक मध्य भू–भाग का अधिक गहन विश्लेषण करने की आवश्यकता हैं जो हिंसा व हत्याकांड के व्यक्तिगत कृत्यों के बीच स्थित है, जहाँ हत्याकांड एक सामाजिक प्रघटना के रूप में मौजूद है। कुछ लोग तर्क देते हैं कि एक बार जब हम जान लेते हैं कि सामूहिक हिंसा (सीरिया के हौला गांव में हुई 2012 हत्याएं) की प्रस्तुत गंभीर घटना में क्या हुआ था, तो इस बात का कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम उस घटना को हत्याकांड कह सकते हैं या नहीं। यह ठीक है कि हम यह जान सकते हैं कि क्या हुआ था परंतु हम यह नहीं समझ सकेंगे कि ऐसा क्यों व कैसे हुआ था। हिंसा के अकल्पनीय कृत्यों की सूची में प्रथम शब्द के बाद किसी अवधारणा को समझने की प्रक्रिया आसान नहीं है।

इसके अतिरिक्त, यदि हम पियर बुरदिए के विचारों को आधार बनायें कि हम चीजों का निर्माण उन्हें नाम देकर ही करते है, कम से कम प्यूर्टो रिको के संदर्भ में, हम अन्य महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय पक्षों को सम्मिलित किए बिना ही हत्याकांड की परिभाषा केवल संख्या के आधार पर (तीन या अधिक पीड़ित) ही कर सकते हैं। यह अप्रसांगिक नहीं है। हाल के वर्षों में, प्यूर्टो रिको में मौत की सजा विषय पर एक गंभीर बहस छिड़ी हुयी थी, अभी हाल ही में 2009 में एक हत्याकांड के दोषी व्यक्ति के विरूद्ध एक संघीय अदालत में चल रहे मुकदमे ने इस बहस को तीव्र किया। सार्वजनिक बयान देते हुए उनमें से एक स्थानीय राजनीतिज्ञ ने, संभवतः, प्यूर्टो रिको की शैली में परिभाषित, ''हत्याकांडों के लेखक'' के लिए मौत की सजा का समर्थन किया। बिना अधिक देर किए हुए कि द्वीप दूसरे हत्याकांड के परीक्षण का साक्ष्य बने, इस शब्द की परिभाषा हो जानी चाहिए। बुरदिए कहते हैं कि 'वैधानिक वार्ता एक सृजनात्मक भाषण है, जो कुछ विचार मंथन होता है, के कारण अस्तित्व में आता है'।

यदि मीडिया द्वारा या कुछ राजनीतिज्ञों द्वारा तीन पीड़ितों की हत्या को हत्याकांड की वैधानिक परिभाषा मान लिया जा सकता है, और इसके अपराधियों/दोषियों को मृत्युदण्ड दिया जा सकता है तो यह समय समाजशास्त्रियों के लिए सामूहिक हत्याओं व हत्याकांडों की अवधारणा की गहन व्याख्या में व्यस्त रहने का है। ■

> दक्षिण–दक्षिण वार्ता में वास्तविक अवरोधक

एलियाना कैमोविट्ज, कानून, न्याय एवं समाज के अध्ययन हेतु केन्द्र (डिजस्टिशिया), बोगोटा, कोलम्बिया

चित्रण आर्बू द्वारा।

कल्पना करो कि तुम दक्षिण अमेरिका के एक छोटे–से कस्बे में मानवाधिकार कार्यकर्ता हो जो कि अपने समुदाय के पीने के पानी को एक यूरोपीय खनन कंपनी के द्वारा दूषित होने से बचाने के लिए प्रयास कर रहे हो। तुमने हाल ही में सुना था कि अफ्रीका में एक मानवाधिकार कार्यकर्ता ने उसी कंपनी से अपनी कस्बे के पानी के स्त्रोत को प्रदूषित होने से बचाया था। वस्तुतः आप उस व्यक्ति से जुड़ सकते हैं, उन्हें फोन, ई–मेल या उससे भी अच्छा, आप उन्हें व्यक्तिगत रूप से मिल सकते हैं। किसी से जानकारी साझा करने के लिए उससे व्यक्तिगत सम्बंध बनाने से अच्छा कोई विकल्प नहीं है।

> >

तुम सोचते होगे कि एक ही जहाज पर सवार अर्थात् एक ही विषय से जुड़े दो कार्यकर्ता परस्पर मिलकर तथा विचार मंथन करके व्यक्तिगत विनिमय द्वारा गहराई में चिंतन कर सकते हैं। यह उत्तरी अमेरिका या यूरोप के लोगों के लिए सच हो सकता है परंतु ग्लोबल दक्षिण से सम्बद्ध लोगों के लिए उतना सच नहीं हो सकता।

आश्चर्य की बात है कि वैश्वीकरण व अनन्त सूचना स्त्रोतों के इस युग में ग्लोबल दक्षिण के दो लोग मिलते हैं और नौकरशाही की प्रक्रिया पर, जिसे पूरा करने के लिए अत्यधिक धन व समय की आवश्यकता है, प्रयास करते हैं जो कि इनके लिए दुर्गम बाधा बन सकती है। यहां तक कि जब उनकी यात्रा की लागत का मूल्यांकन किया जाता है, ग्लोबल दक्षिण के लोगों को उत्तर से पारगमन करने के लिए वीजा की आवश्यकता होती है चूंकि अधिकांश उड़ान मार्ग यूरोप व अमेरिका से होकर गुजरते हैं उसी तरह कोलम्बिया में प्रवेश के लिए भी वीजा की आवश्यकता होती है। उनके लिए सूचना राजमार्ग पर लगे चिह्न बताते हैं 'वीजा आवश्यक है' इसलिए वे बिना वीजा के प्रवेश नहीं कर सकते।

डिजस्टिशिया में शोधकर्त्ताओं के रूप में, बोगोटा, कोलम्बिया में स्थित मानवाधिकार विषयों का चिंतक समूह, हमने इसे बहुत कठिनाई से सीखा है। हमारी ग्लोबल मानवाधिकार नेतृत्व परियोजना दक्षिण–दक्षिण वार्ता के लिए एक अधिक व्यापक स्थान खोलने का एक प्रयास है और जबकि हमें कुछ सफलता मिली है तब हमारे प्रयासों को वीजा प्रक्रियाओं की जटिलता से निराशा हाथ लगती है क्योंकि वे समय, धन व प्रपत्रों को भरने की भावनात्मक कीमत, यात्रा करने तथा सूचनाओं के वैश्विक आदान–प्रदान में योगदान करने की अनुमति के लिए घंटों तक इंतजार करने के हमारे प्रयासों को महत्व नहीं देते। यह स्पष्ट है कि जब व्यक्ति विनिमयों में ऐसा होता है तब उत्तर–उत्तर व दक्षिण–दक्षिण विनिमयों के बीच कोई बराबरी नहीं है।

फरवरी, 2013 में बोगोटा में हुए केन्याई व कोलम्बिया के संवैधानिक न्यायालय के न्यायाधीशों के बीच एक सफल न्यायिक विनिमय हमें बताता है कि दक्षिण–दक्षिण अनुभवों को किस प्रकार समृद्ध किया जा सकता है। यह विनिमय लाभदायय था क्योंकि ये दोनों ग्लोबल दक्षिण के देश हिंसा, नृजातियता और राजनीतिक उथल–पुथल तथा आरोपित निर्धनता के इतिहासों को समान रूप से झेल रहे थे। उदाहरण के लिए अमेरिका व कोलम्बिया के न्यायविदों की वार्ता समान नहीं हो सकती थी। फिर भी, एक अमेरिकी न्यायाधीश मियामी से बोगोटा एक सीधी उड़ान ले जा सकते हैं और हमें लगता है कि अगर वे अपने रास्ते में पनामा पर जहाज रोकते हैं तो उन्हें पारगमन के लिए वीजा की आवश्यकता नहीं होती। केन्याई न्यायाधीश को यात्रा करने के लिए यूरोपीय संघ और/या अमेरिका के मार्ग से या तो दोनों स्थानों से पारगमन करने के लिए वीजा की आवश्यकता थी।

अभी हाल ही में, डिजस्टिशिया ने ग्लोबल दक्षिण के कोलम्बिया से आए दोहन उद्योगों पर काम करने वाले युवा मानवाधिकार कार्यकर्त्ताओं के लिए एक सप्ताह की कार्यशाला का आयोजन किया और जहां वे अपने अनुसंधान व संचार कौशल में सुधार के लिए समाजशास्त्रियों

दक्षिण–दक्षिण संवाद!

से मिले। एक व्यापक और श्रेष्ठ चयनात्मक आवेदन प्रक्रिया के बाद दक्षिण अमेरीका, अफ्रीका और एशिया से 16 प्रतिभागियों को सहभागिता करने हेतु चुना गया। इससे पहले कि वे हमारी कार्यशाला में आ सकते उन्हें अनेकों वीजा पहेलियों को पास करना था। हमारे पास युगांडा से प्रतिभागी था जिसे कोलम्बियाई वीजा की जरूरत थी और लंदन में आवेदन दूतावास नहीं है और वह पहले से ही ब्रिटेन के लिए आवेदन कर चुका था। पापुआ न्यू गिनी से आए प्रतिभागी ने अपने देश की राजधानी के लिए उड़न भरने हेतु आस्ट्रेलियाई वीजा प्राप्त किया ताकि वे सिडनी के लिए उड़ान भर सके और अपने कोलम्बियाई वीजा व अमेरिकी पारगमन वीजा के लिए आवेदन कर सके और फिर न्यूयार्क होते हुए कोलम्बिया जाने के लिए 24 घंटे से अधिक की उड़ान भर सके। इससे स्पष्ट है कि सरकार और विमान सेवाएं दक्षिण–दक्षिण वार्ता के महत्व को पूर्णतः नहीं समझे हैं।

क्या होता जब ग्लोबल दक्षिण संगठनों के पास वीजा और हवाई उड़ान मार्गों की बाधाओं को नियंत्रित करने के लिए समय, धन या कौशल की कमी होती? इन वैश्विक प्रक्रियाओं से किस प्रकार की सूचना साझा करने में बाधा है? उत्तर और दक्षिण दोनों को गंभीरता से इन सवालों पर विचार करने की जरूरत है। उत्तर को सूचना साझा करने की सुविधा हेतु पारगमन वीजा से छुटकारा पाने की कोशिश करनी चाहिए। दक्षिण को सामूहिक रूप से सोचना प्रारम्भ करने की जरूरत है कि कैसे हम इन अवरोधों को तोड़ सकते हैं और अपने व अन्य विश्व के बीच लोगों व सूचना के मुक्त प्रवाह को प्रारम्भ कर सकते हैं। इस दिशा में पहला कदम होगा कि ग्लोबल दक्षिण के देशों के बीच वीजा की आवश्यकता को समाप्त करना या कम से कम शोधकर्ताओं और कार्यकर्ताओं को इससे मुक्त करना। अन्यथा हम सभी दुनिया भर के लोगों के साथ सीखने व साझा करने का महान अवसर खो देंगे, जिनके पास हमारी राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान हो सकते हैं। ■

> धीमा परन्तु पक्का : अल्बानिया में समाजशास्त्र का विकास

लेके सोकोली, अल्बेनियन इंस्टीट्यूट ऑफ सोशियोलोजी, तिराना, अल्बानिया एवं सदस्य, आई.एस.ए. की तुलनात्मक समाजशास्त्र की शोध समिति (**RC** 20) एवं प्रवास का समाजशास्त्र (**RC** 31)

''अशांत समय मे शिक्षा'': यूरापीय तथा वैश्विक संदर्भ में अल्बानिया'' विषय पर अल्बानियन समाजशास्त्र संस्थान के छठे अर्न्तराष्ट्रीय सम्मेलन का पूर्ण सत्र, नवम्बर 21–22, 2011

पिछले दो दशकों में अल्बानिया में चरम और बहु–आयामी परिवर्तन हुए हैं। आर्थिक रूप में हम केन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था, जहॉ केवल राज्य मालिक और नियोक्ता था, से उदार परन्तु अस्तव्यस्त अर्थव्यवस्था; राजनैतिक रूप से स्टालिनवादी सत्तावादी शासन से समस्या पूर्ण लोकतंत्र; सामाजिक तौर पर ''गरीबी के समान वितरण'' से अत्यधिक चरम सामाजिक असमानताओं, जो पूर्वी यूरोप में कहीं ओर से भी अधिक तीव्र हैं, की तरफ चले गये हैं। तीव्र परिवर्तन और उससे सम्बन्धित समस्याओं के साथ साथ केवल दो दशकों के दौरान आधी आबादी द्वारा अनुभव किया गया अंतर्राष्ट्रीय प्रवास (35% स्थायी और 15% अस्थायी) के अध्ययन हेतु अल्बानिया एक प्रयोगशाला बन गया है।

अल्बानिया में साम्यावाद के पश्चात् के परिवर्तन अपने साथ समाजशास्त्र की पहली लहर ले कर आये। अधिकतर यूरोपीय देशों में सख्त से सख्त साम्यवादी शासन में भी समाजशास्त्र की कुछ परम्पराएँ हमेशा रहीं। दूसरी तरफ अल्बानिया में, समाजशास्त्र विश्वविद्यालयी पाठ्यक्रम से पूर्णतः प्रति–बाधित था। तिराना विश्वविद्यालय में कभी भी समाजशास्त्र का विभाग नहीं था और अल्बानिया विज्ञान अकादमी के लगभग 40 संस्थानों में से एक भी संस्थान समाजशास्त्र का नहीं था। मार्क्सवाद–लेनिनवाद, लेबर (साम्यवादी) दल का एकाधिकार जो किसी प्रकार की आलोचना से प्रतिरक्षित था, अंतिम सत्य था। यह सामाजिक समस्याओं पर विचार करते समय अनुभवजन्य साक्ष्यों को प्रयोग में नहीं लाता था। अध्ययन की पारंपरिक विचारधाराएँ जिसमें अस्तित्ववाद, फ्रायड़ का मनोविज्ञान, सरंचनावाद और प्रद्यटनाशास्त्र सम्मिलित थी, प्लेटो, अरस्तू, हीगल, दोस्तोवस्की, सार्त इत्यादि की कृतियों के समान ही पूर्ण रूप से प्रतिबंधित थी। वेबर, दुर्खीम, सिमेल, परेटो, पॉपर, मिल, पार्सन्स, मर्टन और अन्य प्रख्यात पाश्चात्य सामाजिक विचारक हमारे लिए कोई मायनें नहीं रखते थे।

समाजशास्त्र के विरूद्व लड़ाई तथाकथित वर्ग–संघर्ष का हिस्सा भी मानी गई। ऐसा बर्लिन दीवार के ध्वंस के केवल चार वर्ष पूर्व, अल्बानियाई विज्ञान अकादमी द्वारा 1985 में प्रकाशित एक प्रतिष्ठित पुस्तक ''Currents of Political and Social Thought in Albania'' के माध्यम से देख सकते हैं :

'फ्रांसीसी समाजशास्त्री अगस्त काम्ट बुर्जआ समाजशास्त्र के पहले निर्माता के

> >

रूप में जाने जाते हैं। काम्ट का प्रत्यक्षवादी समाजशास्त्र, सर्वहारा और बुर्जआ के मध्य विरोधाभासों के सामंजस्य, वर्गों में मध्य गहराते वर्ग युद्व को विफल करने, मार्क्सवाद की प्रतिक्रिया के रूप में उभरा.....,'

इस पुस्तक में और उस समय की अन्य पुस्तकों में, समाजशास्त्र को बुर्जआ, प्रतिक्रियावादी, नस्लवादी, मानव–विरोधी और एक साम्राज्यवादी विज्ञान के रूप में माना। 1990 तक दुनिया के सभी समाजशास्त्री खतरनाक माने जाते थे और सामाजिक चिन्तन का मार्क्सवाद के अल्बेनियाई संस्करण के अलावा, प्रत्येक सम्प्रदाय वर्जित था।

समाजशास्त्र का एक नया पाठ्यक्रम 1986 में अल्बिनियाई तानाशाह एनवर होक्सा की मृत्यु के बाद ही अंगीकृत किया गया। अल्बानिया के साम्यवाद दल की नवीं कांग्रेस जो ''निरन्तरता की कांग्रेस'' के रूप में जानी जाती है में नये अल्बीनियाई नेता आर. एलिया ने अपने भाषण के आधिकारिक दस्तावेज में प्रथम बार अन्य सामाजिक विज्ञानों के साथ समाजशास्त्र को उल्लेखित करते हुए यह कहा :

तकनीकी और प्राकृतिक विज्ञानों की प्राथमिकता को आर्थिक, तात्विक, समाजशास्त्रीय, विधिक और शैक्षिक विज्ञानों अन्य शब्दों में सामाजिक विज्ञानों की भूमिका को समाजवादी निर्माण और वैचारिक युद्व की मौजूदा मुख्य समस्याओं पर विचार समय रद्द नहीं करना चाहिए।

अतः, समाजशास्त्र के विकास का अधि–कारिक मार्ग खुल गया परन्तु कुछ कड़ी शर्तो के साथ : (1) सिर्फ मौलिक अल्बीनियाई अनुभवों को उल्लेखित करना; (2) समाजवाद और वैचारिक युद्व के निर्माण से सम्बन्धित आक्रामक समाजशास्त्र बनाना; (3) केवल मार्क्सवादी लेनिनवादी ग्रंथो पर आधारित मार्क्सवादी–लेनिनवादी विज्ञान होना।

इन सब से यह स्पष्ट है कि समाजशास्त्र, कई मुश्किलों के बाद और साम्यवाद के विध्वंस के बाद ही पनप सका। समाजशास्त्र के संस्थानीकरण का पहला कदम नवम्बर 1990 के ''बड़े रूपातंरण'' की पूर्वसंध्या पर अल्बीनियाई समाजशास्त्र संघ (ALSA) का निर्माण था। परन्तु यह संगठन बहुत शीघ्र ही असफल हो गया, सबसे पहले इसके संस्थापक सदस्य एक मिश्रित समूह था – दार्शनिक, जनसांख्यिकी विशेषज्ञ, वकील, इतिहासकार, चिकित्सक, उपन्यासकार, कलाकार, और वास्तुकार भी। दूसरा, ALSA बाह्य राजनैतिक हस्तक्षेप के कारण भी विफल हुई

समाजशास्त्र के संस्थानीकरण की दूसरी कोशिश तिराना विश्वविद्यालय में सितम्बर 1991 में दर्शनशास्त्र और समाजशास्त्र की अलग संकाय खोलने के साथ हुई। परन्तु एक ही वर्ष के भीतर, पहली लोकतांत्रिक सरकार जो मार्च 1992 के चुनाव के बाद सत्ता में आई, के कहने पर संकाय को निलंबित कर दिया गया। इसने यह समाजशास्त्र के प्रति इसके लोकतांत्रिक प्रतिरोध की राजनैतिक प्रकृति को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

1998 में, अल्बीनियाई समाजशास्त्रियों के प्रथम दो, (तरीफा और मैं स्वयं) ने यू.एस. ए. में रहते हुए अल्बीनियाई समाजशास्त्रियों की पहली अंर्तराष्ट्रीय पत्रिका ''समाजशास्त्रीय विश्लेषण'' की स्थापना की। यह अल्बीनियाई आधुनिक इतिहास में एक बहुत ही नाजुक समय था जो सामाजिक अशांति, राजनैतिक उथल पुथल, और आर्थिक पतन–सामाजिक बनावट में पूर्ण टूटन का समय, की विशेषता से पूर्ण था।

कई उतार चढ़ाव के बाद और कई विपत्तियों के पश्चात्, अल्बीनियाई समाजशास्त्रीय परिषद् का गठन नये नाम अल्बीनियाई समाजशास्त्र संस्था (AIS) के साथ नवम्बर 2006 में हुआ। 16 अप्रेल 2007 से AIS आई. एस. ए. की मदद से, नवम्बर 2011 में तिराना में बाल्कन समाजशास्त्रीय फोरम का गठन हुआ।

अल्बीनियाई समाजशास्त्र संस्था के गठन से, समाजशास्त्र लोकप्रिय होने लगाः समाजशास्त्र का पहला विभाग खोला गया और फिर कई अन्य पीछे पीछे खुले। अब कई अल्बीनियाई विश्वविद्यालय स्नातक, स्नातकोत्तर और पीएच.डी. के स्तर पर भी समाजशास्त्र के विशेषज्ञों को उपाधि दे रहे हैं। 2009 से अल्बीनियाई सरकार ने समाजशास्त्र को पेशों की राष्ट्रीय सूची में भी सम्मिलित किया है। यह सभी उच्च विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जाता है और काफी संख्या में विचार मंच समाजशास्त्रीय शोध करते हैं।

अपनी पहली बैठक से AIS अपने 35 प्रारंभिक संस्थापक सदस्यों से 7–8 गुना से बड़ा हो गया है। 2007 में हुए पहले सम्मेलन में 12 शोध पत्रों से 2012 में व्लोरा में हुए सातवें सम्मेलन में 22 विभिन्न देशों से 587 लेखकों और सह–लेखकों द्वारा प्रस्तुत 410 शोध पत्रों के साथ हमारी कांग्रेस में भागीदारी बढ़ गई है। अब हमारे पास अल्बीनियाई के साथ कई शोध पत्रिकाओं जैसे सामाजिक अध्ययन, समाजशास्त्रीय विश्लेषण और समाजशास्त्रीय लेंस, में समाजशास्त्रीय कृत्यों की विस्तृत संदर्भ सूची है।

यदि कोई सकल ''समाजशास्त्रीय संक्रमण'' हुआ है तो कई नई चुनौतियाँ सामने हैं जैसे नई लोकतांत्रिक और प्रभावी अल्बीनियाई समाजशास्त्रीय संघ (AUSA) का गठन करना जो सभी अल्बीनियाई समाजशास्त्रियों को अंगीकार करेगी, वार्षिक सम्मेलन और फोरम का निरन्तर आयोजन करेगी, ''सीमाओं के बिना समाजशास्त्रियों'' के साथ सहयोग बढ़ाना और धीरे धीरे अल्बीनियाई और बाल्कन समाजों पर समाजशास्त्र का प्रभाव बढ़ाना। एक बात तो स्पष्ट है, हमारे महान छोटे देश के समक्ष उपस्थित चुनौतियों का सामना करने में हमारी महत्वपूर्ण भूमिका है। ■

> खलबली का समय : राष्ट्रीय संघों का तृतीय आई.एस.ए. सम्मेलन

आयेस इदिल आयबर्स, मध्य पूर्व तकनीकी विश्वविद्यालय, टर्की

एक थकाने वाले दिन भर पर्चों को सुनते हुए, प्रस्तुत करते हुए और उन की समालोचना करने के बाद, प्रतिभागी टर्की शैली के पगसंचालन का प्रयास करते हुए नृत्य मंच पर उतर आये और इस प्रकार थकान को और एक नये उच्च स्तर पर पहुंचा दिया।

अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्रीय परिषद् के राष्ट्रीय संघों का तृतीय अधिवेशन अंकारा, तुर्की के मध्य–पूर्वी तकनीकी विश्वविद्यालय (मेतु) में 12–17 मई, 2013 में आयोजित किया गया। अधिवेशन को अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्रीय परिषद्, 'मेतु' के समाजशास्त्र विभाग, तुर्की समाज विज्ञान समिति, तथा तुर्की समाजशास्त्रीय परिषद् द्व ारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया। अधिवेशन का मूल विषय 'खलबली के समय का समाजशास्त्रः तुलनात्मक पद्धितयाँ' था और सभी राष्ट्रीय समाजशास्त्रीय संघों के प्रतिनिधि अधिवेशन के प्रतिभागी थे।

स्थानीय आयोजक समिति के संयोजक के तौर पर, मुझे अंकारा में पहली बार हुई अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्रीय परिषद् की एक बड़ी बैठक की मेजबानी करने में गर्व महसूस हुआ। मैं वास्तव में कह सकती हूँ कि अधिवेशन के आयोजन का अनुभव बहुत ही रोमांचक और शिक्षाप्रद साबित हुआ, जिसमें एक वर्ष से भी अधिक का समय लगा और अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्रीय परिषद् के अनमोल विद्वानों

> >

से लाभदायक संपर्क और साथ ही तुर्की और बाहर के असंख्य विद्वानों, प्रशासनिक अधिकारी, वित्तिय संस्थानों के प्रतिनिधि व बहुत अच्छे साथीगण से भी संपर्क हुआ। यहाँ ये कहने की जरूरत नहीं है कि हमने सभी को –सामाजिक दृष्टिकोण से –तुर्की संस्कृति, इतिहास, भोजन, संगीत व नृत्य, आदि की विशिष्टताओं से रूबरू होने का अवसर देने का भरसक प्रयास किया था।

अधिवेशन का मूल विषय स्वयं में बहुत ही सामयिक और उपयुक्त रहा तथा यह अधि–वेशन के बाद तुर्की में घटित हुई घटनाओं से साबित भी हो गया। यहाँ तुर्की में युवाओं द्वारा इस्तानबुल के केन्द्र में स्थित बाग में वृक्षों की रक्षा के लिए किए गए निश्चय से खलबली मच गयी। यह सरकार द्वारा जनता की जीवनशैली को नियंत्रित करने के प्रयासों के विरोध में देशव्यापी आंदोलन में बदल गया– एक टकराव जो सभी तुर्की समाजशास्त्रीय तथा समाज विज्ञानियों को समाज के लिए, सामाजिक व राजनैतिक सहभागिता के लिए, जनतंत्र व मूलभूत स्वतंत्रता के लिए, मीडिया की भूमिका के लिए, और सूची जारी है; के लिए इस घटना के परिणामों का अध्ययन करने में व्यस्त रखे हुई थी। (कृपया 'वैश्विक संवाद' के इस अंक में जैनप बैकल और नजीह बसाक ऐरगिन तथा पोलात अल्पमान के दोनों लेख भी देखें।)

सौभाग्य से, अधिवेशन ने भी हमें एक समान अनुभव– संयुक्त राष्ट्र में 'वॉल स्ट्रीट का कब्जा' आंदोलन का समाजशास्त्रीय विवेचन कराया जिससे यह उदाहरण मिला कि कैसे समाजशास्त्री इस तरह के आंदोलनों तथा उनके सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, व राजनैतिक आयामों पर होने वाले प्रभावों को गहराई से समझ सकते हैं। अधिवेशन के कार्यक्रम ने दो–तीन दशकों से विशिष्ट परिवर्तनों और संकटों से गुजर रहे सभी महाद्वीपों के समाजशास्त्रीयों के अनूठे अनुभवों को एक साथ ला दिया। इन परिवर्तनों से तुलनात्मक समझ निकालना एक शिक्षाप्रद और चुनौतीपूर्ण कसरत थी जो कि अलग अलग देशों के आर्थिक, राजनैतिक व सामाजिक क्षेत्रों को विभिन्न स्तरों में प्रभावित करते आ रहें थे, और जो इस नए सामाजिक भूदृश्य को समझने के लिए एक अभिनव पद्धित की माँग कर रहे थे।

अधिवेशन ने एक बार फिर साबित कर दिया कि किस प्रकार समाजशास्त्र जो स्वयं भी दो शताब्दियों पहले हुयी खलबली से पैदा हुआ था – खलबली, जिसने कथित 'आधुनिक समाज' मार्ग प्रशस्त करते हुए संसार को बदल दिया और विभिन्न प्रकार के समाज की और सामाजिक चुनौतियों को प्रतिक्रिया देना जारी रखा। विभिन्न दृष्टिकोणों से विलक्षण समाजशास्त्रीयों के लेखों ने समझाया कि आज समाजशास्त्र का सृजनात्मक व समीक्षात्मक रवैया उन समयों की हलचलों से सबक लेने की उत्तम स्थिति में है।

स्थानीय आयोजक समिति की ओर से, मैं सभी प्रतिभागियों को उनके अमूल्य अकादमिक योगदानों के लिए और अंतर्राष्ट्रीय समाजशास्त्रीय परिषद् की कार्यकारिणी समिति को अधिवेशन के निर्बाध आयोजन के लिए किए गए उनके सहयोग के लिए धन्यवाद देना चाहती हूँ । ■

> योकोहामा में कनिष्ठ एवं वरिष्ठ विद्वानों का मिलन

मारी शीबा, नगोया विश्वविद्यालय एवं आई.एस.ए. की उत्प्रवास का समाजशास्त्र की शोध समिति (आर.सी 31) की सदस्य, **क्योको टोमिनागा,** टोक्यो विश्वविद्यालय, **किसुके मोरी,** हितोत्सूबाशी विश्वविद्यालय और **नोरी फुकुई,** क्युशु विश्वविद्यालय, जापान।

योकोहामा में जुलाई 13–19, 2014 में होने वाली विश्व कॉंग्रेस से एक साल पहले ही योकोहामा में कॉंग्रेस–पूर्व सम्मेलन में एकत्रित विद्वान। उनके चेहरे एक बहुत ही सजीव एवं हर्षित करने वाली कॉंग्रेस की प्रत्याशा कर रहे हैं।

अगले वर्ष योकोहामा में आयोजित होने वाली विश्व समाजशास्त्र कांग्रेस की स्थानीय आयोजन समिति के मुख्य सदस्यों, प्रोफेसर कोइची हासेगावा, शुजिरो यजावा, योशिमिचि साटो और स्वाका शिरिहासे ने ठीक एक वर्ष पूर्व एक मोहक पूर्व–कांग्रेस सम्मेलन का आयोजन किया। इसके पीछे विश्व के अग्रणी विद्वानों – अमेरिका से प्रोफेसर माग्रेट अब्राहम, फिलीपीन्स से प्रोफेसर एमा पोरियो और दक्षिण कोरिया से प्रोफेसर हान सांग–जिन को युवा जापानी समाजशास्त्रियों के साथ संवाद कराने का विचार था। हम युवा समाजशास्त्रियों का कहना है:

> मारी शीबा

मैंने ''स्बनिहित अन्य के साथ आपसी आदर, उत्तरदायित्व एवं संवाद : अर्न्तदेशीय गोद लिए बच्चों के भूत, वर्तमान एवं भविष्य का एक वैयक्तिक अध्ययन'' पर एक शोध पत्र प्रस्तुत किया। मेरे पत्र ने बहुसांस्कृतिक पदार्थवाद के प्रश्न को उठाया। मैं विशेष रुप से बहुसंख्यक और अल्प संख्यक समुदायों के बीच के 'मध्यस्थों' जो महज बहुसांस्कृतिक सह.अस्तित्व के सम्बन्धों के परे जा कर आनंदमय सम्बन्धों का निर्माण कर सकते है, की भूमिका में रुचि रखती हूँ।

> >

गोथनबर्ग में आयोजित पिछली कांग्रेज में एक स्नातक विद्यार्थी के रुप में और ब्यूनस आयर्स में आयोजित द्वितीय फोरम में भी भाग लेने के अनुभवों नें मुझे दोस्तों एवं सहकर्मियों का पूरा एक नया नेटवर्क दिया है और इसलिए मैं युवा समाजशास्त्रियों को, जहाँ भी वे हैं से अगले वर्ष अपने शोध व दुनिया के भविष्य को चमकदार भविष्य को बनाने हेतु समान पथ को प्रशस्त करने के लिए सुन्दर 'योकोहामा' में आने के लिए उत्साहित करती हूँ।

> क्योको टोमिनागा

मैंने ''सक्रिय कार्यकर्ता कैसे अपने कमजोर बन्धनों को जोडते है? सक्रिय कार्यकर्त्ताओं में नेटवर्क बनाने के लिए G8-विरोधी विरोध को एक अवसर के रुप में '' पर शोध पत्र दिया। मैं जापान में वैश्विक न्याय आंदोलन और/वैश्विकरण विरोधी आंदोलनों का विश्लेषण कर रहा हूँ।

मैं इस बात को मानता हँ कि ऐसे आंदोलन विभिन्न देशों में भी पाये जाते हैं लेकिन विशिष्ट रणनीति, अर्न्तवस्तु एवं आयोजन शैली के साथ जो उन्हें न केवल वैश्विक बल्कि राष्ट्रीय और स्थानीय भी बनाती है। सम्मेलन में होने वाली चर्चा नें विश्वव्यापी न्याय आंदोलन के जापानी संस्करण और साथ ही मेरे स्वयं के शोध की रुपरेखा की सीमाओं की ताकत और कमजोरियों को अधिक स्पष्टता से समझने में मेरी मदद की है।

> किसुके मोरी

''तीसरी दुनिया परियोजना से जुडना : एक विश्वव्यापी परिपेक्ष्य से ओकिनावा द्वीप में सैन्य–ठिकानें विरोधी आंदोलनों की वंशावली'' पर मेरे काम को प्रस्तुत करने का अवसर मिलने से मैं प्रसन्न था। मैं सैन्य ठिकानो के विरुद्ध आम संघर्ष के अध्ययन के माध्यम से द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात जापान में ओकिनावा के इतिहास को विश्व के लोगों के इतिहास से जोड.ने की कोशिश कर रहा हूँ। भिन्न पृष्ठभूमि वाले विशिष्ट आगुंतकों की उपस्थिति ने मेरे अध्ययन को वैश्विक परिपेक्ष्य में अवस्थित करने में मदद की है।

> नोरी फुकई

मैंने ''संघर्ष–पश्चात के उत्तरी आयरलैंड के समाज में समृति और प्रतिनिधित्व'' पर अपने शोध को प्रस्तुत किया। उत्तरी आयरलैंड के भित्ति चित्रों पर केन्द्रित मेरा शोध यह दर्शाता है कि कैसे दो पडौसी शहरी समुदाय एक दूसरे के प्रति दुश्मनी और समानुभूति व्यक्त करते हैं। यद्यपि मैं उत्तरी आयरलैंड का अध्ययन कर रही हूँ, मैंने पाया कि मैं, अन्य विद्वान जिन्होंने मेरे विचारों को एशियाई संदर्भ में लागू करने में मदद की है, के साथ मतैक्य रखती हूँ। मैं आशा करती हूँ कि योकोहामा कांग्रेस भी इसी के बारे में होगी।

आई.एस.ए. की उपाध्यक्ष शोध, मार्गेट अब्राहम के कुछ शब्दों के साथ हम समाप्त करना चाहेगें। वे लिखती हैं : आमंत्रित अतिथि इन युवा समाजशास्त्रियों द्वारा संबोधित विषयों की श्रंखला और कितना वे वैश्विक रुप से चेतन हैं, से अत्यधिक प्रभावित थे। 2012 में ब्यूनस आयर्स फोरम में आयोजित कनिष्ठ एवं वरिष्ठ समाजशास्त्रियों के मध्य संवाद शुरु करने की आई.एस.ए. की पहल को जापानी स्थानीय आयोजन समिति ने किस प्रकार विस्तार दिया है, यह देख कर बहुत खुशी हुई। अंत में मैं यह कहना चाहती हूँ कि योकाहामा वास्तव में बहुत सुन्दर जगह है एवं हर कोई अपने जीवन को सामान्य तौर पर जी रहा था और यहां का आतिथ्य, भोजन एवं खुशी सही मायने में बहुत खास थे। अगले वर्ष समाजशास्त्र की ग्टप्प् विश्व कांग्रेस में दुनियां भर से भाग लेने आने वाले हजारों समाजशास्त्रियों के योकोहामा आने से स्थिति और भी रोमांचक होने वाली है।'' ■

> वैश्विक संवाद का स्पैनिश दल

बोगोटा में रोजारियो विश्वविद्यालय में स्थित, कोलम्बिया

मारिया जो एल्वारेज रिवादुल्ला, आईएसए की क्षेत्रीय तथा शहरी विकास शोध समिति (आरसी 21) की सदस्य

माजो रोजारियो विश्वविद्यालय, कोलम्बिया में एशोसिएट प्रोफेसर हैं। मूल रूप से मोन्टेवीडियो, उरुग्वे की रहने वाली हैं तथा उन्होने पिट्सबर्ग विश्वविद्यालय से अपनी पीएचडी की तथा अब पिछले पाँच वर्षों से कोलम्बिया में रह रही हैं। वह विशेष सुविधा प्राप्त तथा साथ ही साथ हाशिये पर रह रहे शहरी लोगों की असमानता तथा उनके स्थानिक विन्यासों में रुचि रखती है। उसने विशेष रुप से मोन्टेवीडियो में अनाधिकृत कब्जाधारी लोगें के बन्दोबस्तों, उनके संगठन, तथा उनके ग्राहकगणों के संजाल का अध्ययन किया है। उसने बन्दूकधारी समुदायों, अलगाववादी वासिन्दों तथा बढिया केबल कारों जैसी विशाल परियोजनाओं द्व ारा झोपडपट्टी के सौन्दर्यीकरण जैसे विषयों पर लिखा है। वह आजकल अलग–अलग लैटिन अमेरिकी देशों की व्यक्तिपरक असमानता के तुलनात्मक अध्ययन पर एक नई परियोजना पर कार्य कर रही है। माईकल बुरावे जब 2011 में पहली बार कोलम्बिया आये तथा उन्हे इस बात के लिए राजी किया कि वह वैश्विक संवाद के स्पैनिश संस्करण का अनुवाद कार्य भी कार्य करे तब से वह वैश्विक संवाद के स्पैनिश संस्करण साथ जुड़ि हुई हैं। वह मजाक में कहती हैं ''आप माईकल को ना नहीं कह सकते''।

सैबास्टियन विलामाईजर सान्टामारिया

सैबास्टियन ने रोजारियो विश्वविद्यालय से 2011 में समाजशास्त्र में स्नातक किया था। उसकी अभिरुचि वर्गों के मध्य अन्तक्रिया, उपभोग तथा शहरी परिदृष्य के क्षेत्र में है, जिसके कारण वह युनिर्वसिडाड ड लोस एण्डेस से भूगोल में एमए कर रहा है तथा वहां वह बागोटा में आवासीय पृथककरण का अध्ययन कर रहा है। अपनी एमए के साथ ही वह रोजारियो विश्वविद्यालय में मारिया जोस के साथ अध्ययापन सहायक का कार्य कर रहा है, तथा साथ ही साथ वह बागोटा आध ारित मानवाधिकार से सम्बन्धित संस्थान डिजस्टिसिया में शोध सहायक का कार्य भी देख रहा है। वह वैश्विक संवाद के स्पैनिश अनुवाद दल के साथ इसके 2011 में कोलम्बिया आगमन से ही है।

एन्ड्रेस कास्ट्रो अराउजो

एन्ड्रेस अभी रोजारियो विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र का अध्ययन कर रहा है। उसकी विस्तृत अभिरुचि आर्थिक समाजशास्त्र (वस्तुतः कार्य, संगठन तथा पेशों के अध्ययन में), तथा सांस्कृतिक समाजशास्त्र में विशेष रुप से समाज में विशिष्ठ ज्ञान की भूमिका के बारे में है। उसकी ताजा शोध के केन्द्र हैं बाजार, वर्ग तथा नैतिक श्रेणियो के अन्तःप्रतिच्छेदन । वह भी वैश्विक संवाद के स्पैनिश अनुवाद दल के साथ इसके 2011 में कोलम्बिया आगमन से ही है।

कैथेरीन गैटान सान्टामारिया

कैथे ने अभी हाल ही में रोजारियो विश्वविद्यालय, बोगोटा से समाजशास्त्र से स्नातक किया है। उसकी प्रमुख अभिरुचियों के विषय हैं सामाजिक आन्दोलन, लैगिक अध्ययन तथा वर्ग तथा इसका मानवजाति के साथ अन्तःप्रतिच्छेदन। वर्तमान में वह बोगोटा के एक समूह का हिस्सा है जो कि युवाओं के मध्य सामाजिक लामबंदी तथा सक्रियतावाद को प्रोन्नत कर रहा है तथा उनकी विशेषतः गरीबतम समुदायों मे स्थानीय राज्य की स्वेच्छाचारी हिंसा से रक्षा करता है। वह अभी काजुका, सोआचा जो कि बोगोटा के बाद एक गरीब नगरपालिका है के कोर्नाड एडेन्यूर फाउण्डेशन की एक सामाजिक हस्तक्षेप की परियोजना से किसी विशेष सामाजिक समस्या को हल करने मे संलग्न है। वह अपनी स्नातक पढाई (उसने पहले ही रोजारियो विश्वविद्यालय से सामाजिक अध्ययन में एक अतंविषयक एम.ए. कार्यक्रम शुरु कर दिया है) को जारी रखना चाह रही है और कोलम्बिया मे सामाजिक हस्तक्षेप रखना चाहती हैं